

चयन की स्वतंत्रता
(The Freedom of Choice)

हिन्दी रूपान्तरकर्ता
(डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता एम. एस-सी., पी-एच.डी.)

मूल लेखक
(थॉमस जे. चाल्को एम. एस-सी., पी-एच.डी.)

*“जो कोई भी, हर चीज को जानता है,
परन्तु अन्दर के अभाव में है,
हर चीज के अभाव में है..”*

मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया, 2000
साइंटिफिक इंजीनियरिंग रिसर्च पी/एल

@ टॉम जे. चाल्को 1999, सर्वाधिकार सुरक्षित

इस प्रकाशन का कोई भाग, जबतक कि निम्नलिखित सभी शर्तें पूरी न कर दी जायें, किसी भी रूप में प्रकाशित नहीं किया जा सकता :

1. इस प्रकाशन का आशय और सन्दर्भ, किसी भी प्रकार से गलतरूप से बर्णित न किया जाये
2. लेखक, थॉमस जे. चाल्को के प्रति आभार प्रदर्शित किया जाय
3. ऑनलाइन स्थल <http://www.thiaoooba.com/> का स्पष्ट उल्लेख किया जाय
4. सम्पूर्ण प्रकाशन की एक प्रति, जिसमें इस प्रकाशन के उद्धरण निहित हों, डॉ. चाल्को को प्रस्तुत की जाय
5. डॉ. चाल्को से स्पष्ट लिखित अनुमति प्राप्त कर ली जाय ।

मुद्रण-पूर्व संस्करण, 10 दिसम्बर 1999
ई-बुक 1.0, संस्करण, 28 दिसम्बर 1999
ई-बुक 1.01, संस्करण, 31 दिसम्बर 1999
ई-बुक 1.02, संस्करण, 1 जनवरी 2000
ई-बुक 1.1, संस्करण, 8 जनवरी 2000
ई-बुक 1.2, संस्करण, 22 जनवरी 2000
ई-बुक 1.3, संस्करण, 2 जून 2001

प्रकाशक: साइंटिफिक इंजीनियरिंग रिसर्च पी/एल,
945 टूरा गुन्याह रोड, माउन्ट वैस्ट, वी. 3960, ऑस्ट्रेलिया
फैक्स +61 3 5681 6361
<http://sci-e-research.com>
<http://thiaoooba.com>
<http://TheFreedomofChoice.com>
<http://TheFreedomForum.com/>

ISBN 0 9577882 0 7 - e-book edition (PDF file freedom.pdf)
ISBN 0 9577882 1 5 - Paperback edition 1 (February 2000)

विषय सूची

प्रस्तावना	1
सरल प्रश्न	3
पहला बड़ा कदम	4
उद्देश्य की अवधारणा	5
प्रारम्भ	6
बुद्धि का विकास	7
बुद्धि कहाँ है?	8
बुद्धि का मूल	9
बौद्धिक आवश्यकतायें	11
प्रेम के लिये डिजायन करना	12
स्वायत्तता के पश्चपरिणाम	13
प्रेम में पड़ना	14
उद्देश्य	17
क्या ये सम्भव है?	19
उपासना और भय	21
अतः क्या?	23
यथार्थता की जाँच	25
ब्रह्मांड	27
आत्मसंशोधन करनेवाला डिजायन	29
गलतियों से बचना	31
अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न	32
आधारभूत उपकरण	34
दृष्टि	34
सूचना को छानना	36
ध्यान और एकाग्रता	36
ध्यान की सामान्य विधियाँ	38
एकाग्रता के अभ्यासों के उदाहरण	40
मानसिक आघात का प्रतिसाद देना	46
प्रगति को नापना	49
बच्चों को शिक्षित करना	52

विज्ञान और तकनीक	53
उन्नयन	57
चयन की स्वतंत्रता	58
सबसे कठिन बात	59
अहम	60
क्या आप विश्वास करते हैं?	62
समझ ही सबकुछ है	63
क्या नहीं— वल्कि क्यों	65
भूतकाल	67
भविष्य	68
मेरा चयन	69
दूसरों की सहायता करना	72
एक और उद्धरण	74
प्रमाण	75
पश्चलिपि	76
सन्दर्भग्रन्थ—सूची	77
धन्यवाद ज्ञापन	78
लेखक के द्वारा अन्य पुस्तकें	78

प्रस्तावना

एक कुत्ते की कल्पना करें,

कल्पना करें कि आप, कुत्ते को, दो में से एक का चयन करने हेतु, दो चीजें भेंट करते हैं:

अ एक सुन्दर हीरा
और
ब विष्ठा का एक टुकड़ा।

अनुमान करें कि कुत्ते को क्या अच्छा लगेगा?

निश्चित ही हीरा **नहीं**। कुत्ता, शायद इसके ऊपर पेशाब भी कर सकता है।

कुत्ता अपने **चयन** के प्रति पूरी तरह से प्रसन्न **क्यों** है?

मात्र, क्योंकि कुत्ते की सीमित बुद्धि, हीरे की सुन्दरता की सराहना नहीं करने देती।

हमारे चेतन चयन, हमारी प्रतिभा के द्वारा तय किए गये, और सीमित होते हैं।

मैंने पुस्तक को एक दृष्टांत के साथ क्यों शुरू किया? **क्योंकि ये पुस्तक, विशेष रूप से आपकी बुद्धि को उभारने और चुनौती देने के लिए लिखी गई है।** चुनौती क्या है? चुनौती है, किसी भी नगीने को चूकने नहीं देने का प्रयास करना...

और यदि किसी तरह, प्रारंभिक रूप से आप कुछ नहीं पाते हैं— कृपया इसके ऊपर पेशाब न करें, क्योंकि बाद में— जब आपकी समझ थोड़ी और अधिक विकसित होगी, स्वयं आप, इसके लिए अजीब अनुभव कर सकते हैं।

अपनी इच्छा से समय लें। इससे पहले कि यह आपके ज्ञान को पूर्णता प्रदान करे, आपको अपने जीवन के विभिन्न चरणों में, इसे पढ़ना और अध्ययन करना पड़ सकता है, इस पुस्तक का कई बार अध्ययन करें।

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है, आपको ये दिखाना कि आप सम्पूर्ण ब्रह्मांड के अभिन्न अंग के रूप में अपने **अन्दर** जाने और **स्वयं** का अध्ययन करने के द्वारा, कितनी चेतन प्रगति पा सकते हैं।

अपनी खुद की चेतना के अनखोजे कोनों को खोजते हुए, अनेक आश्चर्यों के लिए तैयार रहें।

इस पुस्तक में अनेक प्रश्न हैं। ये **उत्तरों को, जो पहले से ही आपके मन में हैं जगाने के लिए** रचे गए हैं। अपनी सजगता में से कितना, आप अपने इस चेतन ध्यान तक ला सकते हैं ?

टोम चाल्को
मेलबोर्न आस्ट्रेलिया, 4 दिसम्बर 1999
उपवास का पांचवाँ हफ्ता

*“जो कोई भी स्वयं को नहीं जानता— वह कुछ नहीं जानता,
परंतु जो कोई स्वयं को जानता है...
वह पहले से ही, ब्रह्मांड की गहराई के सम्बंध में
उस ज्ञान को प्राप्त कर लेता है।”*

[2]

सरल प्रश्न

अधिक सरल क्या है :

एक घर बनाना

अथवा

एक मृत शरीर में जीवन वापस लाना?

दूसरे शब्दों में, किसी जीवन की सृष्टि करने की तुलना में, घर बनाना अधिक आसान है।

यदि आपके पास इस सम्बंध में कोई संदेह हों तो कृपया सावधानी से सोचें। यदि आप उपरोक्त उत्तर के सही होने में पूर्णतः सुनिश्चित हैं, आप अगले प्रश्न के लिए तैयार हैं।

क्या आप सोचते हैं कि बिना किसी के डिजाइन किये, घर खुद का सृजन कर सकता है?

क्या होगा यदि हम लम्बे समय के लिए प्रतीक्षा करें? अनिश्चित लम्बे समय के लिए?

क्या कोई घर, यथार्थ ही, स्वयं को बना सकता है? खिड़कियाँ, दरवाजे, गलीचे, टाइल, बिजली फिटिंग, नल फिटिंग इत्यादि सुविधाओं के साथ?

क्या हम ठीक से निश्चित कर सकते हैं कि किसी घर को स्वयं ही बनाये जाने के कितने संयोग हो सकते हैं?

अपने अनुभव से, हमको निष्कर्ष निकालना पड़ा कि कोई घर, यों ही अपने को नहीं बना सकता। घर के स्वयं को बना लेने की संभावना शून्य है।¹

परंतु कोई घर खुद को क्यों नहीं बना सकता?

कोई घर स्वयं को नहीं बना सकता, क्योंकि इसकी कल्पना करने, डिजाइन करने, रचना करने, जाँच करने और इसे उपयोगी बनाने के लिए, तथा इसमें सुधार करने के लिये, बुद्धि और विद्विता की आवश्यकता होती है।

हमें ये निष्कर्ष निकालना होगा कि, इससे पहले कि कोई घर बनाया जा सके, केवल इसलिये कि एक घर की कल्पना की जानी है, इससे पहले कि उसकी रूपरेखा भी बनाई जा सके, बुद्धि और प्रतिभा दोनों का ही अस्तित्व में होना आवश्यक है।

इससे पहले कि आप इस पुस्तक के अगले भाग की ओर जायें, कृपया ये सुनिश्चित करें कि, आप उपरोक्त निष्कर्ष को पूरी तरह से समझते हैं और आपको इस सम्बंध में कोई संदेह नहीं है।

¹ आप कह सकते हैं कि ये सम्भावना असीम रूप से कम है और एकदम शून्य नहीं है। इस मामले में, हमें इस परिदृश्य पर ध्यान केन्द्रित करने दें कि क्या यह अनन्त बार अधिक सम्भाव्य है।

पहला बड़ा कदम

हम अभी सहमत हुए हैं कि मकान बनाने की तुलना में, सृष्टि करना अधिक कठिन है।

इसलिए यदि किसी मकान के स्वयं ही बन जाने की संभावना शून्य है, तो जीवन की सृष्टि की संभावना और भी कम होनी चाहिए!!!

हमें ये निष्कर्ष निकालना पड़ता है कि जीवन स्वयं ही नहीं सृजित किया जा सका।

इसलिए,

संपूर्ण जीवन को डिजाइन द्वारा होना चाहिए।

इससे पहले कि कोई जीवन अस्तित्व में आये, बुद्धि और विद्वता को अस्तित्व में आना पड़ा।

क्यों? मात्र क्योंकि जीवन की कल्पना की जानी थी और तब उसकी डिजाइन बनानी थी। एक मकान की भाँति।

जीवन की डिजाइन बनाने में कितनी बुद्धि और प्रतिभा की आवश्यकता होगी? थोड़ी सी या बहुत ज्यादा?

मैं सुनिश्चित हूँ कि आप इससे सहमत होंगे कि, वास्तव में, जीवन की डिजाइन बनाने में एक महान प्रतिभा की आवश्यकता होगी। वास्तव में इतनी महान, कि आज हमारे लिए उसकी कल्पना करना असंभव हो सकता है।

यहाँ हम, यहाँ तक की अपनी चर्चा का सारांश, इस निम्नलिखित कथन में कर सकते हैं;

इससे पहले कि ब्रह्माण्ड में जीवन अस्तित्व में आये—महान प्रतिभा का अस्तित्व में होना आवश्यक था।

मैं, महान और प्रतिभा, दोनों शब्दों पर जोर देना चाहूँगा; क्योंकि कल्पनातीत प्रतिभा के बिना – जीवन वैसे ही नहीं घटित हो सकता।

याद रखें – इस पिछले अध्याय को पढ़ते हुए, आप सहमत हुए थे, कि कोई घर भी, बिना बुद्धि के नहीं बनाया जा सकता और आप इससे भी सहमत हुए थे कि, जीवन को डिजाइन करने के लिए, मकान की तुलना में अधिक प्रतिभा की आवश्यकता है।

कृपया सुनिश्चित करें कि आप इसे, जिसके सम्बंध में हम यहाँ चर्चा कर रहे हैं, यथार्थतः समझते हैं। यदि आप नहीं समझते और उपरोक्त कथन से सहमत नहीं होते, आगे पढ़ना, छोटा सा ही नुक्ता है।

उद्देश्य की अवधारणा

क्या आप किसी अत्यधिक प्रबुद्ध से, ऐसा कोई डिजाइन बनाने की कल्पना कर सकते हैं, जिसका कोई उद्देश्य न हो और जो अकारण हो?

अतः अगला निष्कर्ष ये है कि, जीवन का कोई **उद्देश्य** होना ही चाहिए।

इस पुस्तक का शेष भाग —सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिन्दु और संभवतः कल्पनीय मुद्दों में सबसे कठिन — इस संपूर्ण ब्रह्माण्ड और विशेषरूप से जीवन के उद्देश्य को **खोजने** और **सिद्ध करने** पर केन्द्रित है।

अपनी कल्पना और प्रतिभा को उन सीमाओं तक, जहाँ तक उनका सम्भव होना, आपने कभी सोचा नहीं होगा, विस्तार देने के लिए तैयार करें।

यदि आप, एक सीमित हद तक भी, चुनौती को पूरा कर सकते हैं, निश्चितरूप से आप ब्रह्माण्ड में, अपने स्थान और दृष्टिकोणों को जान जायेंगे। आपको किसी भी व्यक्ति और किसी भी चीज पर, और अधिक विश्वास करने की आवश्यकता नहीं होगी। **आप जान जायेंगे।** निश्चय ही।

क्या आप अपने जीवन को, कल्पनीय सर्वाधिक विस्तृत दृष्टिकोण के साथ नहीं देखना चाहेंगे? क्या आप नहीं जानना चाहेंगे कि इस ब्रह्माण्ड में वास्तव में क्या चल रहा है और किसलिए। ऐसा क्यों हुआ? ऐसे ही क्यों होना पड़ा?

समीपवर्ती भूतकाल में, अनेक महान व्यक्तियों ने, उन व्यक्तियों को, जो उन्होंने सुना, उसे समझना भी प्रारंभ नहीं कर सके थे, उद्देश्य के इन बिन्दुओं को समझाने का प्रयास किया। चूँकि वे अधिक नहीं समझ सके थे—उन्होंने विभिन्न “आस्थाओं” का विकास किया।

परंतु उद्देश्य पर “संदेह करना” या “आस्था रखना,” और आप सहित हर व्यक्ति को इसे विस्तार के साथ सिद्ध करना, पूर्णतः भिन्न चीजें हैं।

अंतर्दृष्टि और समझदारी, जो मैं इस पुस्तक में आपके साथ बॉटना चाहूँगा, चार से अधिक दशकों के प्रयासों और त्रुटियों के साथ, और उसके बाद पाँच वर्ष तक, हर दिन, अनेक घंटे, तीव्र एकाग्रता के साथ ध्यान लगाने के बाद, धीमे—धीमे विकसित हुई थी।

इसे आपको व्यक्त करना, मेरे अभी तक के जीवन का सबसे कठिन कार्य है।

उद्देश्य को समझना और अपने खुद के लिए सिद्ध करना, यद्यपि अपने आप में एक महान चुनौती था, फिर भी, उतना मुश्किल नहीं था, जितना कि इसे दूसरे लोगों को समझाने के लिए बताना। क्यों?

क्योंकि इसके प्रभावकारी संप्रेषण में, यथार्थतः, दो मन लगते हैं। मैं स्वयं को जानता हूँ परंतु आपको नहीं जानता। मैं इतना मात्र भी नहीं जानता कि आपकी कल्पना को, कौन सी सूचना और प्रकृति से कौन से उदाहरण, सबसे अधिक प्रभावकारी ढंग से प्रेरित करेंगे।

लिखना प्रारंभ करने से पहले, मैंने अपनी खोज को, सावधानीपूर्वक चुने गए अनेक मित्रों को बताया, जिनके प्रति, मैं उनकी प्रतिपुष्टि के लिए अत्यधिक आभारी हूँ। उनमें से लगभग सभी, गहराई तक हिल गए थे और उन्होंने मुझे “इसे लिख डालने” का सुझाव दिया।

इसलिए, ये यहाँ है।

पहले हम प्रारंभ पर विचार करें। प्रत्येक चीज का कोई प्रारंभ होना आवश्यक होता है। क्या आप इससे सहमत हैं?

प्रारंभ

प्रारंभ की कल्पना करें।

हर चीज का प्रारंभ।

कुछ भी नहीं है।

एकदम कुछ भी नहीं— न कोई आकाश, न समय, न अनुभूति, न चेतना— कुछ भी नहीं।

क्या आप वास्तविक अभाव की कल्पना कर सकते हैं?

मैं जानता हूँ कि ये कठिन है, परंतु प्रयत्न करें...

सैद्धांतिक, परिकल्पनिक, परम अभाव, जिसे प्रारंभ में, किसी भी चीज के अस्तित्व में आने से पहले, होना था, उसकी कल्पना करें।

प्रत्येक चीज का प्रारंभ।

अपने मन में कुछ नहीं (शून्य) की कल्पना करें।

अब उस जैसे, कितने और अधिक कुछ नहीं, अस्तित्व में हो सकते हैं?

यदि आप कहते हैं, दो या अधिक — इसके बाद, उनमें से कोई भी, “कुछ नहीं (शून्य), नहीं होगा—दो में से “कुछ” और अधिक होगा — यहाँ कुछ, जिसकी आपने परिभाषा की, और — कुछ के दो हो सकते हैं, यदि आपने उनमें दो अलग-अलग चीजों की तरह भेद किया।

इसलिए हमें ये निष्कर्ष निकालना पड़ता है कि प्रारंभ में— केवल एक ही “कुछ नहीं (शून्य)” था।

एकलता (Singularity),

इसप्रकार, कोई बात नहीं, ये हमको कितनी भी जटिल क्यों न दिखाई देती हो, और कोई बात नहीं, इसके बारे में हमारी अनुभूति तथा विवेचन, कितने ही सीमित क्यों न हों— संपूर्ण ब्रह्माण्ड, कोई एकल प्रक्रिया होनी चाहिये।

संयोगवश, प्रत्येक चीज, जिसे हमारे खगोलविद् इस ब्रह्माण्ड में देख सकते हैं, आकाश में, वैज्ञानिकों द्वारा, महाबिस्फोट का केन्द्र कहे गये एकल बिन्दु से उत्पन्न होती हुई प्रतीत होती है— [16]

क्या ये एक संयोग है?

बुद्धि का विकास

हम परीक्षण करें कि बुद्धि के विकास के लिए आवश्यक प्रतिबन्ध क्या हैं।

क्या बुद्धि को “लिपिबद्ध करना,” या बुद्धि को एक जीवित प्राणी से दूसरे प्राणी में “संचारित करना,” संभव है? यदि ऐसा होता— तो हम बंदरों और मुर्गों को विश्वविद्यालयों में पढ़ा रहे होते।

क्या कोई एक व्यक्ति सीख सकता है और इसके फलस्वरूप, कोई दूसरा व्यक्ति अधिक विद्वान हो सकता है? यथार्थ में, नहीं।

क्या बिना चिंतन के अभ्यास के, बुद्धि का विकास करना संभव है? उच्चतमरूप से असंभव।

स्वयं बुद्धि की इच्छा मात्र ही, बुद्धि के विकास का आवश्यक प्रतिबन्ध दिखाई देता है। केवल **विचार करने की इच्छा** के अतिरिक्त, कुछ भी और, आवश्यक नहीं है।

उपरोक्त विचार से स्पष्ट है कि बुद्धि का विकास, केवल स्वयं से ही किया जा सकता है। केवल हमारे स्वयं के अतिरिक्त — कोई भी दूसरा, हमको अधिक प्रखर और विद्वान नहीं बना सकता। क्या ऐसा नहीं है?

इसलिए, **बुद्धि का मुख्य गुण है कि ये, किसी के खुद के इरादों की दिशा में, स्वयं को विकसित कर सकती है।**

अब ये कल्पना करने का प्रयास करें कि, बुद्धि का क्या होगा, यदि इसका खुद को विकसित करने का इरादा न हो। आपकी खुद की बुद्धि का क्या होगा, यदि आप इसका बिल्कुल उपयोग न करने का निर्णय कर लें?

मान लें कि आपने चिंतन न करने का निश्चय कर लिया। स्पष्ट है कि, कुछ ही समय में आपकी बुद्धि क्षय होने लगेगी और महत्वपूर्ण ढंग से घटेगी।

इसलिए, बुद्धि का अपने आपको विकसित करने का एक प्रयोजन होता है। बुद्धि के लिए सर्वोत्तम और सर्वाधिक तर्कयुक्त चयन है — उसको बढ़ने देना और स्वयं उन्नति करने देना, अन्यथा इसका क्षय होता है और सीमांत मामले में ये अपना अस्तित्व भी खो सकती है।

अधिक प्रखर हो जाना और अधिक स्वीकार्य होना, क्या ये सुखद भावना नहीं हैं?

क्या आप इसके विपरीत चयन के ऊपर विचार करेंगे?

क्या आप कम प्रखर होने की आकांक्षा रखेंगे?

कृपया उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर अपने मन में रखें — अति शीघ्र ही, आपको उनकी आवश्यकता हो सकती है।

बुद्धि कहां है?

मृत्यु के क्षण में एक जीवित शरीर, और एक मृत शरीर के बीच, क्या अंतर होता है?

दोनों अवस्थाओं में, प्रत्येक अंग एकदम समान होता है।

प्रत्येक अणु भी एक समान होता है।

तो फिर अंतर क्या है?

अनेक विशेषज्ञ ऐसा कहेंगे, “चेतना जा चुकी है।”

गई, कहां ? और जब हम किसी भी भांति जिन्दा हैं, तो ये है कहां?

निश्चितरूप से, ये हमारे शरीर के किसी अंग में नहीं है, और न ही किसी भी परमाणु में है, क्योंकि मृत्यु के बिन्दु पर, ये सभी एकदम एक जैसे रहते हैं। अंग और परमाणु, कहीं नहीं “जा रहे हैं।” वे ठीक वैसे ही **बने रहते हैं**, और उनका क्षय, बाद में होता है।

इस सरल उदाहरण से, हमें ये निष्कर्ष निकालना है कि चेतना और उसी प्रकार बुद्धि (जो चेतना का ही एक निश्चितरूप है), पदार्थ—यथार्थ, जो परमाणुओं से बना होता है, से स्वतंत्र रूप में अस्तित्व में है।

वे कहां हैं? हम अभी तक नहीं जानते², परंतु इसका ये अर्थ नहीं है कि हम उनका अध्ययन नहीं कर सकते।

तथापि, ये स्पष्ट है कि, पदार्थ की तकनीकी (कोई भी उपकरण, जो परमाणुओं से बना हो) का प्रयोग करते हुए चेतना और बुद्धि का अध्ययन करना, कोई बहुत अच्छा ख्याल नहीं है।

मन हमारा उपकरण होना चाहिए। हम इसका उपयोग करें।

2. नवीनतम खोजों के लिए, एन.यू. जर्नल ऑफ डिस्कवरी” देखें [20] <http://NUjournal.net/choice.html>

बुद्धि का मूल

हम सहमत थे कि प्रारंभ में, एकल कुछ नहीं (Singular nothing) था।

हम इससे भी सहमत थे कि, जीवन अस्तित्व में आया उससे पहले— किसी महान बुद्धि का होना आवश्यक था, जिसने इसको डिजाइन किया।

तब ये महान बुद्धि अस्तित्व में कैसे आ सकती थी? क्या ये कुछ नहीं में से अस्तित्व में से आ सकती थी?

ठीक है, हमने, इस पुस्तक के पिछले खंडों में से एक में, अपने स्वयं के निश्चित पहलुओं की जाँच करते हुए, अभी ये खोजा कि बुद्धि स्वयं को विकसित कर सकती है और वास्तव में करती है। आपके पास, अपनी खुद की बुद्धि में इसका प्रमाण है।

वास्तव में, जब आप निष्ठापूर्वक और सम्पूर्णरूप से स्वयं की परीक्षा करते हैं— आप पायेंगे कि आपकी खुद की बुद्धि ने, एक बहुत सामान्य सी सजगता, वास्तव में इतनी सामान्य कि आप इसे जागरूकता के साथ भी याद नहीं कर सकते, से स्वयं का विस्तार किया है।

इसलिए, हमें एक अत्यंत तर्कपूर्ण अनुक्रम (sequence) मिलता है। बुद्धि ने, सरलतम संभव सजगता के साथ— ठीक वैसे ही, जैसे कि हमारी बुद्धि ने किया, **स्वयं ही** विकास किया।

दूसरे शब्दों में, कुछ नहीं (शून्य) की सजगता ने, — बहुत कुछ वैसे ही, जैसे कि हमारी सजगता ने किया— स्वयं का विकास किया। यही कारण है कि हमारे लिये स्वयं का अध्ययन इतना महत्वपूर्ण है— चेतना को समझने का केवल यही तरीका है।

सजगता से —“होने” की चेतना, बुद्धि और बुद्धिमान — स्वतः ही, और स्वयं ही विकसित हुए। हर चरण में अपने स्वयं के विकास के लिए³ स्वयं ही सोचने वाले बुद्धिमान के इरादे मात्र के सिवाय—कुछ भी और, आवश्यक नहीं था।

हम पहले से ही ये स्थापित कर चुके हैं कि बुद्धि की सर्वाधिक आनंदमय और संतुष्टिदायक गतिविधियों में से एक, अपने आपका विकास करना है। अतः ये लगभग निश्चित है कि चिंतन की पर्याप्त मात्रा के बाद — बुद्धि, कुछ नहीं (शून्य) से, और कुछ नहीं (शून्य) में ही, काफी विकसित हो गयी।

इस अग्रवर्ती बुद्धि की, स्वयं को विकसित करने के आनंद से अलग हटकर, कौन सी दूसरी आवश्यक आवश्यकताएँ, हम किसी संदेह के परे पहचान सकते हैं? जीवन का डिजाइन बनाने वाले की बुद्धि और उसकी महान विद्वता को कौन सी चीज संतुष्टि प्रदान करेगी, ये कहना असंभव लगता है... तथापि, हम अपनी बुद्धि की आवश्यकताओं को निश्चित कर सकते हैं, क्या हम नहीं कर सकते?

हम स्थापित करने का प्रयास करें कि आपकी बुद्धि और विद्वता के लिये, कोई सी गतिविधियाँ सर्वाधिक संतुष्टिप्रद हैं।

कल्पना करें कि आपके पास— केवल आपकी बुद्धि और विद्वता है, कोई भौतिक शरीर नहीं है। आपके लिए, आपकी बुद्धि के लिए, सर्वाधिक सुखदायक और सर्वाधिक संतुष्टिदायक कोई सी गतिविधि होगी? अंतिम

3. ये विषय काफी अग्रवर्ती है और केवल स्वयं के अध्ययन, जो हर पाठक का पूरा जीवनकाल ले सकता है, के द्वारा ही पूरी तरह समझा जा सकता है। तथापि, इस पुस्तक के शेष भाग को समझने के लिए पाठक का ये समझना कि, जागरूकता कैसे प्रकट होती है, और बुद्धि को कैसे विकसित करती है, आवश्यक नहीं है। यदि पाठक एकल कुछ नहीं की अवधारणा, और बुद्धि की, जीवन के आगे चलने की आवश्यकता को समझता है, यही पर्याप्त है।

गतिविधि? वह कभी भी, मन को थकाने वाली नहीं होगी, जिसे आप अनिश्चित काल तक करते रहना चाहेंगे?

शुद्ध रूप से, ये आप स्वयं के बारे में है। अच्छा होगा यदि आप उत्तर को समझें – आप इसको समझने के जितने करीब होंगे, संपूर्ण ब्रह्माण्ड के उद्देश्य को पूरी तरह से समझने के उतने ही करीब पहुँचेंगे। इस कारण से मैं सुझाव देता हूँ कि इससे पहले कि आप पढ़ना जारी रखें, आप इस प्रश्न के उत्तर के ऊपर विचार करें।

बौद्धिक आवश्यकताएँ

हम पहले ही स्थापित कर चुके हैं कि बुद्धि के लिए, उसकी सर्वाधिक आनंद करने योग्य और संतुष्टिप्रद गतिविधियों में से एक, स्वयं बुद्धि का विकास करना है।

क्या आपने, पिछले अध्याय में से, इन प्रश्नों का उत्तर पाने के प्रयास में, कुछ दूसरी चीज की भी खोज की है? क्या आपने, अपनी बुद्धि के लिए कुछ दूसरी अत्यावश्यक आवश्यकताओं को पाया है?

भावनाओं की आवश्यकता के सम्बंध में क्या? कौन सी विशेष भावना, सर्वाधिक आनंददायक और हमेशा संतुष्टिकारक होती है?

क्या ये प्रेम करना, और प्रेम पाना नहीं है?

वास्तव में, केवल स्वयं की परीक्षा करने से, निश्चितता के उच्चस्तर के साथ, हम ये स्थापित कर सकते हैं कि किसी भी अग्रगत बुद्धिमान को उच्चतर भावनाओं, जैसे कि प्रेम, की आवश्यकता है।

इसलिए, बिना किन्हीं संदेहों के, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि महान विद्वान को भी उच्चतर भावनाओं को अनुभव करने की आवश्यकता पड़ी। उसने प्रेम करना और प्रेम पाना चाहा।

सही में "सच्चा प्रेम" क्या है? क्या मन और बुद्धि की इस आनंदमय "स्थिति" की अधिक शुद्धता के साथ परिभाषा करना बहुत कठिन है। तथापि, एक चीज निश्चित है। प्रेम अनुभव करने के लिए— भावनाओं का आदान—प्रदान आवश्यक है। प्रेम का अनुभव करने के लिए— और प्रेम किए जाने का अनुभव करने के लिये भी, हमें प्रेम देने की आवश्यकता है।

क्या आप एक प्रमाण चाहते हैं? कल्पना करें कि उपरोक्त में से एक अनुपलब्ध है....

इसलिए, प्रेम को पूर्ण होने के लिए, और इसे पूरी तरह भरने के लिए, भावनाओं का **पारस्परिक आदान—प्रदान** होना चाहिए।

भावनाओं का आदान—प्रदान? किनके साथ????

कोई भी दूसरा वहाँ नहीं है! विद्वान कुछनहीं में **अकेला** है!

इसलिए, अपने विकास के एक निश्चित स्तर पर, बुद्धि (केवल तभी!), कुछ निश्चित अनुभवों की आवश्यकता, जिसे हम भावना कहते हैं, का विकास करती है। विशेष रूप से, ये एक अत्यंत विशिष्ट आनंदमयी भावनाओं का आदान—प्रदान होता है, जिसे अब हम प्रेम कहते हैं।

परंतु ऐसे आदान—प्रदान को संभव बनाने के लिए— ऐसे किसी आनंदमय आदान—प्रदान को **संभव** बनाने के लिए, बुद्धि को किसी दूसरी बुद्धि के साथ की आवश्यकता है।

क्या आप जानते हैं कि किसी तंत्र, जिसमें प्रेम को अनुभव करने की संभावना अधिकतम हो, का डिजाइन कैसे बनाया जाए?

आइये हम ऐसे डिजाइन के कुछ प्रमुख बिन्दुओं को खोजें।

प्रेम के लिए डिजाइन करना

क्या आप किसी को प्रेम करने के लिए **मजबूर** कर सकते हैं?

क्या आप किसी से (स्वयं को) प्रेम किये जाने की **मांग** कर सकते हैं?

क्या आप किसी को वास्तव में प्रेम करेंगे, यदि उसके साथ में **“शर्तें”** जुड़ी हों?

इन परिस्थितियों में सच्चे प्रेम को क्या होता है?

जिस क्षण हम, किसी के साथ हमको प्यार किये जाने की जबरदस्ती करते हैं, या शर्तें थोपते हैं, उच्चतर भावना, **जिसे** हम प्रेम कहते हैं, सामान्यतः अस्तित्व में आना समाप्त कर देती है। जैसे ही शर्तों का पता चल जाता है, यह तत्काल ही, कड़वाहट की, निराशा और धोखे की भी, भावना में बदल जाती है।

ये बहुत “नाजुक स्थिति” है, कम-से-कम कहने भर के लिए।

उपरोक्त से ये स्पष्ट है कि;

सच्चे प्रेम का अनुभव करने के लिए— व्यक्ति विशेषों की प्रतिभा की स्वायत्तता से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता।

व्यक्तिशः प्रतिभाओं को, अपनी उच्चतम भावनाओं को दूसरी प्रतिभाओं को देना, अपनी खुद की स्वतंत्र इच्छा के द्वारा स्वयं ही चुनना पड़ता है।

इसप्रकार, **“प्रेम के लिये डिजाइन करने”** में हम, एक **आवश्यक प्रतिबंध** के रूप में, “व्यक्तिशः प्रतिभाओं” की **स्वायत्तता** की परिभाषा कर सकते हैं।

“व्यक्तिशः प्रतिभा” स्वायत्तता के बिना – प्रेम की कोई संभावना नहीं टिकती या अस्तित्व में आती।

चुनाव की प्रतिबंधरहित स्वतंत्रता, या स्वतंत्र इच्छा, इस व्यक्तिशः स्वायत्तता का एक आवश्यक भाग है।

क्या “व्यक्तिशः प्रतिभा” की इस स्वायत्तता की कुछ सीमाएँ होनी चाहिए? यदि डिजाइन में, जो कुछ भी वह हो, कुछ सीमा है – जैसे ही “व्यक्तिशः प्रतिभा” द्वारा इसका पता लगा लिया जाता है— ये निराशा और धोखे की बहुत दुःखदायी भावनाओं को प्रेरित करती है।

इसलिए,

प्रेम के डिजाइन में, व्यक्तिशः प्रतिभा की स्वायत्तता असीमित होनी चाहिए।

स्वायत्तता का पश्चपरिणाम

चूंकि “व्यक्तिशः प्रतिभाओं” के पास असीमित स्वायत्तता होनी चाहिए, किसी प्रकार की गारन्टी नहीं है कि एकबार जैसे ही वे स्वायत्त हो जाएँ, वे आपको प्रेम करने का चुनाव करेंगी।

चूंकि उनकी स्वायत्तता असीमित होनी चाहिए और उनमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता— व्यक्तिशः प्रतिभाएँ, कोई भी दूसरी गतिविधि या भावना, जिसकी वे कल्पना करें, चुन सकती हैं।

ये ध्यान देना महत्वपूर्ण है, कि उनके चुनाव, केवल उनकी खुद की प्रतिभाओं के द्वारा सीमित होंगे (कुत्ते की कहानी को याद करें?)

इन “व्यक्तिशः स्वायत्त प्रतिभाओं” को प्रेरित करने के लिए क्या किया जा सकता है, ताकि वे अपनी खुद की स्वतंत्र इच्छा से, प्रेम के मार्ग का चुनाव करें?

वास्तव में ये बहुत नाजुक स्थिति है, क्योंकि ऐसी किसी भी प्रेरणा को, किसी भी प्रकार से, व्यक्तिशः प्रतिभा की स्वायत्तता में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।

इस बिन्दु पर, हमें खुद को, अपने पूर्व निष्कर्षों में से एक, कि प्रेम जैसी उच्चतर भावनाएँ, केवल तभी संभव हैं, यदि प्रतिभा पर्याप्त रूप से भलीभांति विकसित है, की याद दिलानी चाहिए।

व्यक्तिशः प्रतिभा जितनी अधिक विकसित होगी — उच्चतर भावनाओं का उतना ही अनुभव किया जा सकता है।

इसप्रकार — उच्चतर भावनाओं का अनुभव करने हेतु स्वायत्त व्यक्तिशः प्रतिभा के विकास के लिए परिस्थितियाँ पैदा करना, एक दूसरा आवश्यक प्रतिबंध है।

स्वयं प्रतिभा के लिए, प्रतिभा का विकास, और एक बहुत आनंददायक गतिविधि, न केवल सर्वाधिक तर्कपूर्ण चुनाव है, वल्कि प्रेम सहित उच्चतर भावनाओं की सृष्टि, विकास एवं अनुभव करने के लिए, एक अनिवार्य शर्त है।

क्या “व्यक्तिशः प्रतिभा का ये विकास” किसी भी प्रकार से सीमित होना चाहिए?

क्या आप प्रतिभा, जो आपके अपने बच्चे प्राप्त कर सकते हैं, के ऊपर कोई सीमा लगाएंगे?

फिर, यदि डिजाइन में किसी भी प्रकार की कोई सीमा है — जैसे ही “व्यक्तिशः प्रतिभा” को इसका पता चल जाता है, ये निराशा और धोखे की अत्यधिक असुखद भावनाएँ उत्पन्न करेंगी। उच्चतर भावनाओं को प्राप्त करने का कोई अवसर पूरी तरह समाप्त हो जायेगा।

इसप्रकार — व्यक्तिशः प्रतिभा के विकास की कोई सीमा नहीं हो सकती।

इसलिए, इन “व्यक्तिशः प्रतिभाओं,” जो पर्याप्तरूप से स्वयं का विकास करने और अपनी स्वतंत्र इच्छा के द्वारा डिजाइन करने वाले को प्रेम करने का चुनाव करते हैं, से ही केवल सही उच्च भावनाओं की अपेक्षा की जा सकती है।

परंतु यद्यपि, “व्यक्तिशः प्रतिभाओं” के लिए स्वायत्तता और विकास के अवसर दोनों ही असीमित हों — तथापि कोई गारंटी नहीं है कि वे प्रेम का मार्ग ही चुनेंगे। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं— तो प्रारम्भ में ही उनको डिजाइन करने की कोई तुक नहीं है। किस लिये? क्या महान प्रतिभा को विक्षुब्ध करने के लिए? क्या आप ऐसे तंत्र को डिजाइन करेंगे जो आपकी प्रतिभा को पूरी तरह से विक्षुब्ध कर दे?

प्रेम में पड़ना

“व्यक्तिशः प्रतिभाओं” को किसी को प्रेम करने के लिए प्रेरित करना कैसे संभव है – जिनके पास खुद के विकास की असीमित स्वायत्तता और असीमित संभावनाएँ हैं— आपको प्रेम करने के लिए?

हमने पहले ही स्थापित कर लिया है कि किसी को कुछ करने के लिए आदेश देना, किन्हीं उच्च भावनाओं में परिणामित नहीं होता। दूसरों को आदेश देना, प्रेम का हिंसक विध्वंस है।

इसलिए क्या प्रेम और दूसरी उच्च भावनाओं की संभावना को बढ़ाकर अधिकतम किया जा सकता है?

क्या प्रारंभ से ही प्रेम के लिये डिजाइन करना संभव है?

ब्रह्माण्ड के प्रारंभ की कल्पना करें।

वहाँ केवल प्रतिभा है, और कुछ भी नहीं है।

महान प्रतिभा।

अकेली।

स्वयं का विकास करते हुए – क्योंकि करने के लिए यही एक मात्र तर्कयुक्त और संतोषजनक चीज है।

स्वयं का ऐसे बिन्दु तक विकास करना, जिसकी वह कल्पना कर सकता है और डिजाइन कर सकता है।

कोई भी चीज और हर चीज जो वह चाहे,

प्रतिभा भावनाओं की कल्पना करती है।

प्रतिभा प्रेम की कल्पना करती है –

विशेष रूप से भावनाओं के आनंदमय आदान-प्रदान की।

प्रतिभा – प्रेम करने, और प्रेम किये जाने के एक ऐसे आदान-प्रदान को अनुभव करने की इच्छा करती है।

आवश्यकता को स्थापित किये जाने के बाद, प्रतिभा स्वयं के लिए साथियों की कल्पना करती है।

वह दूसरी स्वायत्त और स्वतंत्र प्रतिभाओं के साथ की कल्पना करती है, क्योंकि केवल वे ही सच्चे प्रेम को, जिसकी प्रतिभा ने कल्पना की है, और जिसको अनुभव करने की इच्छा की है, लेने और देने में समर्थ हैं।

हम पहले ही स्थापित कर चुके हैं कि केवल तभी, उन व्यक्तिशः प्रतिभाओं से, जो पर्याप्तरूप से, स्वयं के द्वारा, इसे स्वयं विकसित करने का चुनाव करते हैं, सच्ची उच्च भावनाओं की उम्मीद की जा सकती है।

क्या आप, किसी ऐसे से, जो सीमित प्रतिभा के साथ अभी प्रारंभिक अवस्था में ही हो, जो आपको समझ न सके, प्रेम पाते हुए पूरी तरह से संतुष्ट होंगे?

इसप्रकार, प्रतिभा, कल्पना, जिसे यह कर सकती है, करती है, और तब एक सर्वोत्तम “तंत्र,” जिसमें व्यक्तिशः स्वायत्त प्रतिभाओं को, स्वयं को जितना ज्यादा वे चाहें, विकसित करने के लिए, और प्रेम अनुभव करने की अपनी खुद की आवश्यकताओं विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, को डिजाइन करती है।

ये परिकल्पना करना बहुत ही सरल होगा कि महान प्रतिभा ने, प्रेम किए जाने के मात्र एक “संयोग” का लक्ष्य रखा। ये मान लेना बहुत उचित है, कि उसने अपनी महान प्रतिभा का उपयोग, प्रेम पाने की संभावनाओं को अधिकतम बनाने के लिए, किया।

किसी दूसरे व्यक्ति की स्वायत्तता से किसी भी प्रकार से समझौता किए बिना प्रेम पाने की संभावनाओं को बढ़ाना कैसे संभव है?

कुछ अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए, हम “प्रेम में गिर पड़ने” की प्रक्रिया का परीक्षण करें। “प्रेम में गिर पड़ने” के लिए प्रारम्भिक प्रतिबंध क्या हैं?

क्या सच्चा प्रेम, उसको, जो आपको प्रेम करता है, जाने बिना संभव है? उच्चतम रूप से असंभाव्य है।

इस प्रकार, महान प्रतिभा को एक तरीके की कल्पना करनी पड़ी, जिसमें वह दूसरी व्यक्तिशः प्रतिभाओं को “ज्ञात” हो सकता है। वास्तव में, प्रेम में पड़ जाने के लिए किसी दूसरे को जानना ही पर्याप्त नहीं, वल्कि ये एक अनिवार्य प्रतिबंध है। क्या आप सहमत हैं?

अपने आपको दूसरों के प्रति, उनकी उत्सुकता, अभिरुचि और अपने प्रति आकर्षण को बढ़ाने के लिए, कैसे खोलें? उन संयोगों को, जो दूसरे, अपनी खुद की स्वतंत्र इच्छा से आपकी प्रशंसा करने के लिए प्रारंभ करेंगे, कैसे अधिकतम बनाया जाय? क्या किया जाए?

याद रखें कि, इस बिन्दु पर, महान प्रतिभा कुछ नहीं में अकेली है। केवल वह चीज, जो उसके बारे में “बताई” जा सकती है, वह है, उसकी प्रतिभा और उसका परिमाण। प्रतिभा को किस ढंग से खोला जाय कि दूसरे उसकी सराहना करने का चुनाव कर सकें?

आप क्या करेंगे?

प्रकृति के सृष्टि के बारे में क्या – इतनी सुन्दर, इतनी मोहक, इतनी आलीशान और भव्य, और इतनी प्रखरता के साथ डिजाइन की गई कि प्रतिभा और संवेदनशीलता के किसी चिन्ह साथ वाली किसी को भी, उस डिजाइन की प्रशंसा करनी पड़े।

क्या आप कभी, ऐसे किसी को मिले हैं, जो प्रकृति की प्रशंसा नहीं करता हो?

आपको स्वीकार करना पड़ेगा, कि प्रेम के लिए, प्रशंसा करना एक पहला बहुत अच्छा कदम है... क्या आप वास्तव में, बिना उसकी प्रशंसा किए हुए, किसी को प्रेम कर सकते हैं?

इसप्रकार? महान प्रतिभा ने भव्य सांसारिक यथार्थ और जीवन की कल्पना की, ताकि “व्यक्तिशः स्वायत्त प्रतिभाएं,” किसी दिन, डिजाइन की सुन्दरता और प्रतिभा की प्रशंसा करना सीख सकें—परंतु केवल तभी, यदि वे इसे समझने के लिए पर्याप्त विकास करने का निर्णय करें और ऐसे रवैये का स्वयं चुनाव करें।

दूसरे शब्दों में, **भव्यतापूर्ण तरीके से डिजाइन किए गए भौतिक यथार्थ और जीवन का अस्तित्व, किसी भी प्रखर प्रेक्षक को, उसकी स्वायत्तता और उसके चुनाव की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप किए बिना, उस प्रतिभा के परिमाण को बताने का एक तरीका है।**

इसलिए, उस महान प्रतिभा ने, अपनी प्रतिभा के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए, प्रकृति और जीवन को डिजाइन करने के द्वारा, उनकी खुद की स्वतंत्र इच्छा के द्वारा इसे जनवाते हुए, इसके परिमाण की सराहना करना सिखाते हुए और प्रत्युत्तर में प्रशंसा और प्रेम पाते हुए व्यक्तिशः प्रतिभाओं को बढ़ाने की संभावनाओं को अत्यधिक रूप से बढ़ाया।

तब, महान प्रतिभा ने संज्ञानपूर्वक कल्पना की, अधिक विस्तार के साथ डिजाइन किया और तब ब्रह्माण्ड और प्रकृति, जैसा आज इसे जानते हैं, के सृजन की प्रक्रिया को प्रारंभ किया। उस प्रखर के द्वारा संचालित, हम डिजाइन करने का क्रम, ‘कुछ नहीं’ में विक्षोभ के रूप में—एक अत्यधिक तीव्रता वाले विस्फोट के रूप में प्रारम्भ हुआ [20]।

हमारे वैज्ञानिकों ने इस विस्फोट को महाविस्फोट कहा। परमाणु, नीहारिकायें, तारे, ग्रह, जीवन की सचेतन रूप से और निरंतर कल्पना की गई, उनको डिजाइन किया गया और उनकी सृष्टि की गई। डिजाइन अभी भी, पूरा होने से काफी दूर है— हमारे पास प्रत्येक साक्ष्य है कि यह आज भी जारी है.....

ध्यान दें कि ब्रह्माण्ड के आकाश में एक एकल बिन्दु से शुरू होने के “कठोर तात्विक” साक्ष्य हैं। हर चीज, जिसे हमारे खगोलविद् ब्रह्माण्ड में जान सकते हैं — इस एकल बिन्दु से, जिसे महाविस्फोट का केन्द्र कहा जाता है, महान गति के साथ बाहर की तरफ यात्रा करती है। [16]

पृथ्वी के वैज्ञानिक, इन प्रक्रमों की सुन्दरता और उनकी जटिलता पर, जिसे वे गहरे ब्रह्माण्ड में बहुत दूर से देख सकते हैं, निरंतर चकित हैं। वैज्ञानिकों की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई संख्या ये स्वीकार करती है कि गहन अंतरिक्ष में प्रक्रमों के प्रेक्षण से — उनके पास, उनके उत्तरों की तुलना में, उत्तरोत्तर बढ़ते हुए और अधिक प्रश्न हैं।

क्यों? क्योंकि वे इस तथ्य को पूरी तरह से अनदेखा करते हैं, कि डिजाइन के द्वारा और उद्देश्य के साथ, ब्रह्माण्ड अभी भी, सजगता और बुद्धिमत्ता के साथ सृजित किया जा रहा है।

महान बुद्धिमत्ता के किसी उत्पाद के रूप में, ब्रह्माण्ड, कला या सुंदरता का उतना ही कार्य है, जितना कि यह उपयोगी और व्यावहारिक है।

क्या हम इससे सहमत नहीं हो चुके हैं कि इस ब्रह्माण्ड को डिजाइन किये जाने का प्रमुख उद्देश्य सौंदर्य था?

क्या हमारे वैज्ञानिक सौंदर्य को नाप पायेंगे

उद्देश्य

क्या हम वास्तव में किसी महत्वपूर्ण चीज को चूक नहीं गए हैं?

“असीमित स्वायत्तता” और “स्वयं को विकसित करने” की आसीमित संभावनाओं वाले, वे “व्यक्तिशः प्रखर” कौन हैं? उस महान प्रतिभा के वे संभावित “प्रखर साथी” कौन हैं, जिनको अपनी खुद की स्वतंत्र इच्छाओं के द्वारा, डिजाइन करने वाले से प्रेम करना सिखाने के लिए “प्रेरित किये जाने” की आवश्यकता है।

क्या ये उनके लिए ही था कि, संपूर्ण ब्रह्माण्ड और जीवन डिजाइन किया गया? वे कहाँ हैं?

ये मानव प्राणी हैं।

हम लोग।

आप और मैं।

विकास की (अथवा अपंग होने की, जो एकमात्र हमारे चयन की स्वतंत्रता पर निर्भर करता है...) की असीमित संभावनाओं के साथ हमारी व्यक्तिशः स्वायत्त बुद्धियाँ...

हम सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के उद्देश्य हैं।

हम, परमाणु, तारे, नीहारिकाओं, ग्रह, जीवन और किसी भी दूसरी चीज, जिसे हम अभी तक नहीं जानते कि वह अस्तित्व में है, के साथ वाले इस सम्पूर्ण पार्थिव ब्रह्माण्ड के प्रारंभ के केन्द्र और प्रमुख कारण हैं।

हम उस महान प्रतिभा के, जो आरंभ में अकेली थी, संभावित “प्रतिभावान सहयोगी” हैं।

जब और यदि हम पता लगा लें कि हम वास्तव में कौन हैं।

जब और यदि हम उस महान प्रतिभा के परिमाण को समझने और प्रशंसा करने हेतु प्रतिभा बनने के लिये पर्याप्त विकास करें।

जब और यदि हम प्रकृति के साथ दुर्व्यवहार करना बंद कर दें और इसे अपनी आँखों के सामने, प्रतिभा की महान अभिव्यक्ति के रूप में पहचानें।

जब हम अपने स्वयं के अध्ययन द्वारा, उपरोक्त सभी को, अपने स्वयं के प्रति **सिद्ध** करें।

“जो कोई भी स्वयं को नहीं जानता— कुछ भी नहीं जानता, परंतु जो कोई भी स्वयं को जानता है — वह ब्रह्माण्ड की गहराई के सम्बंध में, पहले से ही पूरा ज्ञान अर्जित कर चुका है।” [1][2]

इसलिये हमें डिजाइन करने का **मूल** उद्देश्य क्या था? क्या आपको याद है?

स्वयं का विकास करने की प्रक्रिया में, महान प्रतिभा ने विकास और प्रशंसा और प्रेम जैसी उच्च भावनाओं को अनुभव करने की आवश्यकता की कल्पना की, जिनको अनुभव करना, यदि महान प्रतिभा अकेली होती, सर्वथा असंभव था।

इसप्रकार, प्रत्येक मानव प्राणी के व्यक्तिशः अस्तित्व में होने के दो कारण हैं;

1. अपनी व्यक्तिशः प्रतिभा का, उसकी उच्चतम संभव सीमा तक विकास करना
2. अपनी उच्चतम भावनाओं, जिनकी हम कल्पना कर सकते हैं, को अनुभव करने की क्षमता का विकास करना।

ये दो कारण, महान प्रतिभा के अस्तित्व के प्रारंभ से ही, कारण के रूप में एक जैसे हैं... यहाँ किसी भी प्रकार की कोई सीमाएँ नहीं हैं... कोई सीमाएँ हो भी नहीं सकतीं.... स्वयं उस महान प्रतिभा के विकास की भांति, हमारी प्रतिभा का विकास भी असीमित है।

क्या आप समझते हैं? यदि आप वैसे चले, जैसे कि मैं इन शब्दों को लिखते हुए चल रहा हूँ— ये प्रमाण है कि आपने कम-से-कम उद्देश्य की प्रारंभिक समझ प्राप्त कर ली है।

यदि आप नहीं समझे — इस पुस्तक को प्रारंभ से फिर पढ़ें और उसे समझने का प्रयास करें जिसे मैं समझाने का प्रयास कर रहा हूँ।

क्या ये संभव है?

ब्रह्माण्ड का उद्देश्य, जो अभी हमने खोजा है, सत्य होने के लिये अत्यधिक अच्छा प्रतीत होता है...

हम ये सुनिश्चित कैसे कर सकते हैं कि अपनी सीमित प्रतिभा के साथ, हम सृष्टिकर्ता के उद्देश्य और आशय को समझने के लिए समर्थ हैं?

मैं सहमत हूँ, कि हम क्षण भर में हर चीज को नहीं समझ सकते। परंतु, जो हम समझते हैं – वह संपूर्ण की समझने की अपनी खुद की समझ का विकास करने के लिए अंतिम रूप से पर्याप्त होना चाहिए।

हमें इसके लिए लक्ष्य नहीं बनाना पड़ेगा – हमें चुनाव की स्वतंत्रता है।

तथापि, एकबार हम, समझने के लक्ष्य का निश्चय कर लें, मात्र इसलिये, क्योंकि हम प्रतिभावान हैं, और हमारे पास आशय की दिशा में आगे बढ़ने की अश्चर्यजनक क्षमता है, हम, समझदारी को प्राप्त करने की एक **संभावना** पैदा करते हैं। दूसरे शब्दों में, हम संपूर्णरूप से स्वयं के द्वारा **सृजन करते हैं और समझदारी की संभावना को बढ़ाते हैं**। हम **अपनी खुद की समझ** को विकसित करने में सक्षम हैं।

इसलिए, यदि आप प्रयास नहीं करते हैं— आप कभी नहीं पता कर पायेंगे कि आप कितना समझ सकते हैं। मेरा तर्क, अधिकतम समझदारी के लिए लक्ष्य रखना और उस पर काम करना है। ये पुस्तक मेरी समझ का सारांश है। आपको अपनी समझ को विकसित करने की आवश्यकता है।

“क्योंकि यहाँ कुछ भी छिपा हुआ नहीं है जो खोला नहीं जायेगा...”

“जो भी चाहेगा वह पा जायेगा”[2]

क्या हमारा भौतिक शरीर एक गंभीर बाधा नहीं है? क्या भौतिक शरीर का अस्तित्व ही हमारे निष्कर्षों में से कुछ पर प्रश्न उठाता है?

पहले से ही, हम ये निष्कर्ष निकाल चुके हैं कि हम स्वायत्त व्यक्तिशः प्रतिभायें हैं और मात्र भौतिक शरीर नहीं। भौतिक शरीर अस्थाई उपकरण हैं, जिनका उपयोग हम ये जानने के लिए कि हम क्या हैं, करते हैं।

अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा को विकसित करने की कोई सीमा नहीं है, तथापि हम अपने ऊपर अस्थाई सीमाएँ लगा सकते हैं, मात्र क्योंकि हमारे उन्नयन के एक निश्चित चरण में, ये हमें एक भले विचार के रूप में प्रतीत हो सकता है।

उदाहरण के लिए, हम में से हर एक, सजगतापूर्वक अपनी स्वतंत्र इच्छा से, इस शरीर में एक जीवन जीने का निर्णय कर सकता है।

दूसरे प्रतिभाशाली व्यक्तियों से, जो हमारे ही समान विकास के समान चरण में हैं, प्रेम करना—प्रेम का एक अच्छा पाठ सीखना – क्या ऐसा नहीं है?

भौतिक शरीर में जीवन, सचेतन अस्तित्व के उद्देश्य की हमारी समझदारी की एक परीक्षा भी है। ये एक “परीक्षा” है, जिसे हम खुद ही, ये जांच करने के लिए कि हम ब्रह्माण्ड के बारे में, वास्तव में, कितना सीखे हैं, आंशिक रूप से तैयार करते हैं। सांसारिक यथार्थता के सन्दर्भ में, दूसरी व्यक्तिशः प्रतिभाओं के साथ अंतर्किया करना, ऐसे किसी परीक्षण के लिए उत्कृष्ट परिस्थितियाँ पैदा करता है।

इस पुस्तक के हमारे पहले निष्कर्षों में से एक ये था, कि इससे पहले कि हमारे भौतिक शरीर जीवित रह सकें, प्रतिभा को अस्तित्व में होना पड़ा। इस प्रकार, आपके पैदा होने से पहले ही आपके पास एक "सिद्धांत," कि जीवन को कैसे जिया जाये, का कुछ चेतन अभिमूल्यन था।

यही कारण है कि आप इस पुस्तक के हर प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं। आप इसे पहले से ही "कहीं सुन चुके हैं।" इस प्रकार, मैं आपको ऐसा कुछ भी नहीं कह सकता जिसे आप पहले से नहीं "जानते हों"। मैं इसे केवल आपके चेतन ध्यान में ला सकता हूँ।

एक स्वायत्त भौतिक शरीर में रहने से आपके पास ये **सिद्ध** करने का, कि आप **समझते हैं**, एक अवसर मिलता है।

उदाहरण के लिए, यदि आप पर्याप्त अच्छे तरीके से समझते हैं, तो आप ब्रह्माण्ड में अस्तित्व में होने के अपने उद्देश्य की पुनर्चना कर सकते हैं, भले ही, जन्म के समय आपकी स्मृति पूरी तरह से मिटा दी गई हो।

असल में, किसी भौतिक शरीर में रहने के मुख्य उद्देश्यों में से एक है, सर्वाधिक अप्रत्याशित और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी, बारबार उद्देश्य का पता लगाना।

ये स्वयं के प्रति ये सिद्ध करने का एक तरीका है, कि आप जानते हैं, कि आप जानते हैं, कि आप कौन हैं और आप ब्रह्माण्ड में क्या करते हैं।

इस भौतिक शरीर में, आपके पास प्रकृति को, जो किसी प्रतिभावान प्रेक्षक के लिए, उस महान प्रतिभा का प्रगटन मात्र है, अनुभव करने तथा उसका अध्ययन करने का भी एक अद्वितीय अवसर है। इसप्रकार, भौतिक शरीर में रहना, आपको प्रकृति के साथ अंतर्क्रिया और उसके अध्ययन के द्वारा महान प्रतिभा को "जानने का" एक अवसर प्रदान करता है।

वास्तव में, पहले अपने खुद के शरीर का अध्ययन प्रारंभ करना सबसे अच्छा है।

यदि आप प्रकृति को अनदेखा करते हैं और उसका विनाश करते हैं और उस महान प्रतिभा, जिसने इसकी रूपरेखा बनायी, के परिमाण को नहीं पहचान सकते, तब आप उसकी उच्चतर भावनाओं को आकर्षित करने की आशा कैसे कर सकते हैं?

कल्पना करें कि आपने एक भव्य घर की डिजाइन बनाई और उसे बनाया और अपने बच्चों को दे दिया।

आप कैसा महसूस करेंगे, यदि उन्होंने घर का दुरुपयोग किया और घर को गिरा दिया?

क्या आप उन्हें दूसरा देंगे?

क्या आप किसी ऐसे दूसरे के साथ परिचित होने में दिलचस्पी रखते हैं जो आपकी प्रतिभा और उदारता की सराहना नहीं कर सकता?

जीवन एक परीक्षा है, कि क्या आप समझते हैं, या केवल स्वप्न देखते हैं कि आप करते हैं।

हमारे भौतिक अस्तित्व के दूसरे पहलू (और उसकी आवश्यकता), बाद में, इस पुस्तक में विवेचित किये जायेंगे।

उपासना और भय

क्या आप चाहेंगे कि आपके बच्चे आपकी उपासना करें? [17]

क्या आप अपने बच्चों से, आप असल में कौन हैं, उसे पहचानने और जो आप कर रहे हैं, उसकी प्रशंसा करने के बजाय, अपने चित्रों, अपनी मूर्तियों की पूजा करवाना, अपने लिये वेदियाँ बनवाना चाहेंगे?

क्या ऐसी पूजा आपको संतुष्टि देगी? क्यों नहीं?

कृपया बहुत सावधानी से सोचें, ऐसी गतिविधि पूरी तरह से बेवकूफी क्यों लगती है। इसके बेवकूफी लगने के पीछे तर्कपूर्ण कारण तलाशने का प्रयास करें। आपनी भावनाओं का परीक्षण करें।

आपको कैसा लगेगा, यदि आपके बच्चे आपकी मूर्ति की पूजा करने और आपके चित्रों के सामने प्रार्थना करने का निर्णय लें? क्या आप संतुष्ट अनुभव करेंगे? क्यों नहीं? क्या आपकी प्रतिभा और प्रज्ञा संतुष्ट होगी?

क्या आप गंभीर रूप से निराश अनुभव नहीं करेंगे कि आपके बच्चे आपसे कुछ अधिक ऊँचे नहीं हो सके?

पूजा करना, स्पष्टरूप से निराशाजनक, असुखद और संयुक्त सभी भावनाओं को समझने के लिए पर्याप्त किसी प्रतिभावान को नाराज करने वाला भी है। और ये वास्तव में, महान प्रतिभा को सम्मिलित करता है।

हमें ये निष्कर्ष निकालना पड़ता है कि

किसी की, या किसी चीज की पूजा करने का जरा भी कोई अर्थ नहीं है। किसी भी प्रकार की पूजा, पूरी तरह से अज्ञानता का प्रमाण है।

वास्तव में, प्रारंभ करने के लिए आप जानते हैं – क्या आप नहीं जानते थे? प्रसंगवश, क्या ये बाइबिल का पहला और सर्वाधिक महत्वपूर्ण “धर्मदेश” नहीं है? [4] क्या आप देखते हैं कि ये आज कितना विकृत हो चुका है? क्या आप देखते हैं कि इस अकेली तर्कपूर्ण सलाह की उपेक्षा ने मौलिक पंथों और खतरनाक मूर्ति-पूजा के लिए कितनी भयानक स्थितियाँ पैदा की हैं?

इसलिए इस पृथ्वी पर तमाम लोग पूजा के सभी प्रकारों से क्यों जुड़े हुए हैं?

पूजा केवल तभी घटित हो सकती है, जब हम व्यक्तिशः प्रतिभा का दमन करें और सक्रियता के साथ उसका विनाश करें। प्रतिभा का दमन और विनाश करने के सर्वाधिक प्रभावशाली तरीकों में से एक है, **भय** को प्रेरित करना। कोई भी, जो वास्तव में आतंकित है, तर्कपूर्ण चिंतन के लिए महान कठिनाईयाँ पाता है – क्या ऐसा नहीं है?

क्या ये संयोग ही नहीं है कि लोग, जो पूजा में लगे हैं, अधिक गहराई के साथ आतंकित भी हैं?

क्या ये संयोग नहीं है कि भय को प्रोत्साहन देना, पूजा करने वाले किसी समूह को पोषित करने और उसे नियंत्रित करने का एक प्रमुख तरीका है?

4 “(20:3) मेरे पहले किसी भगवान को मत रखो। ऐसे भगवानों का प्रतिनिधित्व किसी गढ़ी गई प्रतिमा या ऊपर के स्वर्ग में किसी चीज के चित्र से नीचे पृथ्वी पर या जमीन के नीचे जल में मत करो। उनको नमन या उनकी उपासना मत करो” और तब बाद में (20:3) “किसी भी चीज का जो मेरे साथ है, प्रतिनिधित्व मत करो”[4]

परंतु भय, व्यक्तिशः प्रतिभा की एक जाग्रत भावना है, जो व्यक्तिगत रूप से अनुभव की जाती है। हम भय का सजगरूप से अनुभव कर सकते हैं, यदि हम स्वयं को केवल इसको साथ चलने दें।

यदि किसी ने आप को ये कहते हुए कि “यदि आपने ऐसा या वैसा नहीं किया तो ईश्वर आपको दंड देगा,” डराने का प्रयास किया— क्या आप भयभीत महसूस कर पायेंगे? ध्यान दें कि आप अपने आपको केवल तभी भयभीत महसूस करेंगे जब आपकी प्रतिभा दूसरी संभावनाओं और समाधानों की कल्पना करने में अक्षम हो।

क्या आप भयभीत अनुभव करेंगे, यदि आप जानते कि व्यक्ति के पास विषय के सम्बंध में किसी भी प्रकार का कोई विचार नहीं था?

संक्षेप में, सचेतन भय, व्यक्तिशः प्रतिभा का स्वयं को अपने आप तक सीमित रखने के चुनाव का परिणाम है।

क्या ब्रह्माण्ड में कोई ऐसी भी चीज है जिससे हमको भयभीत होना चाहिये?

क्या आपको उद्देश्य की याद है? क्या आपको याद है कि आप कौन हैं? और आपकी संभावनाएँ क्या हैं? आप क्या सोचते हैं?

केवल मात्र सीमा जो हम कभी ब्रह्माण्ड में अनुभव कर सकते हैं— वह है जिसे हम अपने खुद के ऊपर थोपते हैं।

अतः क्या?

इसलिये हमें क्या करना चाहिये? हमें कैसे जीना चाहिये?

मैं आपको नहीं बता सकता।

वास्तव में, दुनियाँ में कोई नहीं बता सकता।

स्वयं महान प्रतिभा भी आपके लिये कोई चुनाव नहीं कर सकती...

किसी भी दूसरे के लिये चुनाव करना, किसी प्रकार से कोई अर्थ नहीं रखता...

आप सहित, हर व्यक्तिशः प्रतिभा को, पूर्ण स्वायत्तता और चुनाव की अवाधित स्वतंत्रता रखने के लिये विशिष्टरूप से डिजाइन किया गया है।

अतः आप किसी को भी अपने जीवन के लिये आदेशित न करने दें...

किसी कारणवश हमें असीमित स्वायत्तता और चुनाव की स्वतंत्रता दी गई है। क्या आपको याद है कि वह क्या था?

हम पहले ही देख चुके हैं कि,

व्यक्तिशः प्रतिभाओं की स्वायत्तता और उनकी चुनाव की स्वतंत्रता के बिना— प्रेम की कोई सम्भावना अस्तित्व में नहीं होती।

इसप्रकार, व्यक्तिशः प्रतिभा की स्वायत्तता के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाना चाहिये। जहाँ तक आपका सम्बंध है, आपको किसी भी स्थिति में **अपनी खुद की** पसंद का चुनाव करना सीखना है— यही वह तरीका है जिससे आपकी व्यक्तिशः प्रतिभा स्वयं का विकास करती है।

इसलिये, जीवन को कैसे जिया जाय, का चुनाव असल में आपका है।

इस दृष्टिकोण से ये स्पष्ट है, कि किसी भी दूसरे को ठीक से ये बताना कि जीवन किसी तरह जिया जाये, सहज ही असंभव है। तथापि, लोगों के विचार हेतु सामान्य सिद्धांतों का विकास करना काफी विद्वितापूर्ण है। दूसरा अच्छा तरीका है, दूसरों के लिए खुद सजीव उदाहरण बन जाना।

हम उन क्रियाओं की परिभाषा करना शुरू करें जिन्हें ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के अनुसार, स्पष्टरूप से वर्जित किया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए, यदि आप चेतनतापूर्वक, उद्देश्य के साथ सामांजस्य में रहने का चुनाव करें, आपको किसी भी तरह से, किसी की चुनाव की स्वतंत्रता के साथ समझौता नहीं करना चाहिए। आपके विचार के लिए, हम इसे निम्नलिखित सलाह के रूप में संक्षेपित कर सकते हैं :

ऐसे तरीके से, जो दूसरे की चुनाव की स्वतंत्रता को सीमित करता है, अपनी खुद की चुनाव की स्वतंत्रता का उपयोग करना, ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के विरुद्ध प्रत्यक्ष अपराध है। [1]

क्यों? क्योंकि चुनाव की स्वतंत्रता को सीमित करना तुरंत ही उच्च भावनाओं को अपंग बना देता है या उनका उन्मूलन कर देता है।

यदि हम चेतनतापूर्वक, उद्देश्य के साथ सामंजस्य में जीना भी चुनें, हमको किसी की भी व्यक्तिशः प्रतिभा के साथ, किसी भी प्रकार से समझौता नहीं करना चाहिए।

किसी भी व्यक्तिशः प्रतिभा के विकास को किसी भी तरीके से दबाना, ब्रह्माण्ड के उद्देश्य का प्रत्यक्ष उल्लंघन है।

ये उतना ही गंभीर है, क्योंकि ये उद्देश्य को प्रत्यक्षतः ध्वस्त करता है...

यथार्थता की जाँच

अभी-अभी हम सहमत हुए हैं कि कोई भी गतिविधि, जो किसी भी प्रकार से, व्यक्तिशः प्रतिभा के विकास से समझौता करती है और अथवा उसका दमन करती है, एक कार्य है, जो ब्रह्माण्ड के उद्देश्य का उल्लंघन करता है और उसका विनाश करता है। ऐसी गतिविधियों के कुछ उदाहरण शामिल करते हैं,

- आस्थाओं और आस्था-तंत्रों को उनकी विशिष्ट गंध पर विचार के बिना बढ़ावा देना।
- आस्थाओं और आस्था-तंत्रों को रोपने के लिए व्यक्तिगत रूप और सामूहिक रूप दोनों से सम्मोहन का उपयोग करना (प्रतिभा का गलतक्रमादेशन)
- किसी भी प्रकार के भय को प्रोत्साहन देना या बनाये रखना। उदाहरणों में शामिल हैं, किसी भी प्रकार के "भय का प्रचार," जैसे कि भगवान का भय, बीमारी का भय, मृत्यु का भय, नरक का भय, धूप का भय, या किसी भी प्रकार के भय को प्रोत्साहन देना।
- किसी भी प्रकार की शिक्षा और अधिकार को लागू करना।
- वैकल्पिक दृष्टिकोणों का दमन या उपहास करना।
- किसी भी प्रकार से, व्यक्तिशः चुनाव की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करना (जैसेकि लोगों को आदेशों का पालन करने के लिए बाध्य करना या उदाहरण के लिए किसी के भी समान बन जाना)
- वैयक्तिकता लिए अनादर - प्रतिभा की अपेक्षा सांख्यिकी को अधिक मानना
- किसी भी प्रकार से विचारों की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करना
- दवाओं, पदार्थों और गतिविधियों जो बोध को बदल देती हैं, के साथ चेतना को घनीभूत करना ।
- आदिम भावनाओं को प्रबलित करना, प्रोत्साहन देना और भव्यता प्रदान करना
- हिंसा को प्रोत्साहन देना और भव्य बनाना

उपरोक्त में से कौन सी गतिविधियाँ, व्यक्तिशः प्रतिभा के लिए बहुत अधिक खतरनाक हैं?

सामान्यतः चेतना का गलतक्रमादेशन, उत्क्रमण के लिए आसान चीज नहीं है। उदाहरण के लिए, क्या आप ये अनुभव करते हैं कि किसी आदत, जिसे आप अब और अधिक नहीं चाहते, को सुधारने के लिए कितने अधिक सजग प्रयास और आत्म-अनुशासन की आवश्यकता होती है? क्या आप अनुभव करते हैं कि किसी पहले से सीखे हुए को भूल जाने की तुलना में, अक्सर नये सिरे से सीखना अधिक आसान है?

कुछ लोग इतना अधिक चिपके हुए दिखाई देते हैं कि, जबतक कि वे फिर से पैदा न हों, वे बदलना नहीं चाहते...

उद्देश्य की विभिन्न बुराइयों के पश्चपरिणामों की तुलना करने के लिये, हम मान लें कि एक व्यक्ति जो उपरोक्त सभी बुराइयों का विषय रहा है, किसी दिन ब्रह्माण्ड के उद्देश्य और तथ्य कि उसको लंबे समय से धोखा दिया जा रहा था, को खोज लेता है।

जब आप खोज लेते हैं कि आपको लंबे समय तक धोखा दिया गया है और आपके पास इसका प्रमाण है - क्या आप उस व्यक्ति, जो आपको अगले दिन धोखा देगा, पर विश्वास करना और उसका अनुगमन करना, फिर चुनेंगे?

व्यक्तिशः प्रतिभा का जागरण, गलतक्रमादेश को असाधारण रूप से पलटने में परिणामित हो सकता है। एकबार जब कोई व्यक्ति ये खोज लेता है कि स्वायत्तता को पुनः प्राप्त करने के लिए, प्रतिभा और चुनाव की स्वतंत्रता का उपयोग कैसे किया जाय, नया सीखना बहुत तेजी से हो सकता है।

केवल एक ही अपवाद दिखाई देता है। जब किसी व्यक्ति ने मादक पदार्थों का सेवन किया हो।

मेरे एक मित्र ने अपने कुछ मित्रों के बारे में, जिन्होंने दो महीनों तक मायाजाल दिखाने वाले कुकुरमुत्ते का प्रयोग किया था, मुझे बताया। केवल दो महीने। जब उन्होंने बंद किया, उसके काफी लंबे समय बाद तक- वे

मानते रहे कि वे "डोलफिन" थे। उनसे कोई प्रतिभाजनक बातचीत संभव नहीं थी। वे "डोलफिन" हैं...

उनके भौतिक शरीरों के बारे में कुछ भी गलत नहीं है, परंतु उनकी प्रतिभा का विनाश स्थाई दिखाई देता है। उन्होंने अपने खुद के संज्ञान को झुठलाने के द्वारा स्वयं ही इसका गलतक्रमादेशन किया... उन्होंने अपने चयन की स्वतंत्रता का उपयोग किया...

व्यक्तिगत प्रतिभा के विरुद्ध कोई भी दूसरा कार्य – सिवाय नशीले पदार्थ के उपयोग के, एक संभावित पाठ प्रतीत होता है, जो अंततः वर्तमान जीवनकाल में उन्नति की ओर ले जाता है। नशीले पदार्थ, प्रतिभा का न केवल नाटकीय और तत्कालिक पतन पैदा करते हैं वल्कि वे प्रतिभा की स्वयं निखार करने की क्षमता को गंभीर रूप से घटा देते हैं।

आप किसी प्रतिभा को, जो काम नहीं करती है, कैसे जगा सकते हैं?

किसी अपंग प्रतिभा को, प्रतिभा पुनर्स्थापित करने के लिए कितने जीवनो की आवश्यकता होगी?

क्या आपकी इसे पता करने की इच्छा है?

ब्रह्माण्ड

इस पर ध्यान देना कि इस ब्रह्माण्ड के उद्देश्य में, पदार्थ जैसा कुछ नहीं है, परम मोहक है।

प्रारंभ करने के लिए, महान प्रतिभा और उसकी बुद्धिमत्ता दोनों ही गैर-पदार्थ थे। यहाँ गैर-पदार्थ से मेरा तात्पर्य, “अणुओं से नहीं बने” से है [1]। महान प्रतिभा को, वैसे भी, पदार्थ सम्बन्धी आवश्यकताएँ नहीं हो सकतीं।

एकमात्र उद्देश्य, केवल व्यक्तिगत प्रतिभा के विकास का है। महान प्रतिभा और हमारे विकास का।

स्पष्टतः ये 100 प्रतिशत मन का पदार्थ है।

इतने पर भी, आपके जीवन को, उदाहरण के लिए, आपके भौतिक शरीर के “प्रदर्शन” और आपकी प्रतिभा के विकास की उपेक्षा करते हुए, विशेषकर पदार्थीय अस्तित्व के ऊपर केन्द्रित करना, अत्यन्त गंभीर त्रुटि हो सकती है, जो आप कभी कर सकें।

ब्रह्माण्ड के बारे में क्या? क्या आपको याद है कि पदार्थीय ब्रह्माण्ड को किसके लिए डिजाइन किया गया था?

ये हमारे लिए, ध्यान से परखने, खोजने और इस प्रतिभामय डिजाइन की सराहना करने के लिए डिजाइन किया गया था।

इसे हमारी जिज्ञासा और प्रतिभा को उद्दीपित करने के लिए डिजाइन किया गया था।

इसे हमारे लिए, खोजने और उसके डिजाइन सिद्धांतों को समझने के लिए डिजाइन किया गया था।

इसे हमारी खुद की प्रतिभा और उच्चतर भावनाओं की क्षमताओं के विकास में हमारी सहायता करने के लिए डिजाइन किया गया था। इसे डिजाइन किया गया था ताकि हम – एक-दूसरे के साथ प्रारंभ करते हुए प्रेम करना सीख सकें...

इसप्रकार सम्पूर्ण पदार्थीय ब्रह्माण्ड, खेल का एक अस्थायी मैदान मात्र है, ताकि हम इसमें, 50 करोड़ वर्षों या ऐसे ही में, किसी दिन, बच्चों के अपने किन्डर गार्टन में बड़े होने की भांति बढ़ सकें।

तथापि, आप कभी भी नहीं बढ़ने का चयन कर सकते हैं...

आप ठहरने और किन्डरगार्टन में जबतक चाहें, तबतक खेलते रहने का चयन सकते हैं। आपके पास चयन की स्वतंत्रता है..

मेरे निजी दृष्टिकोण से, प्रगति के लिये लक्ष्य रखना सर्वाधिक तर्कयुक्त चयन है। आपके पास दूसरे विचार को विकसित करने का चयन करने की स्वतंत्रता है।

जब हम महान प्रतिभा के उद्देश्यों को समझ जाते हैं, ये स्पष्ट हो जाता है कि हमारे लिए, सीखने का सबसे तेज तरीका, ब्रह्माण्ड के डिजाइन सिद्धांतों, जिनके एक सेट को प्रकृति का नियम अथवा ब्रह्माण्डीय नियम कहा जा सकता है, का अध्ययन करना और उनको समझना है [1]। ये ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ब्रह्माण्डीय नियम अस्तित्व में है और वह न केवल पदार्थ की यथार्थता (भौतिकी के नियम), बल्कि, चेतना और प्रतिभा के अधिक्षेत्र में भी लागू होता है।

भौतिक वस्तुओं को जमा कर लेना, किसी भी दिशा में, प्रगति की ओर नहीं ले जाता। स्पष्टरूप से वे गौढ़ हैं। पदार्थीय सुख केवल तभी महत्वपूर्ण है, जब हम इसका उपयोग, अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा के विकास की गति को तेज करने के लिए करें। अधिकांश लोग (मुझे शामिल करते हुए) तभी **और अधिक** सीखते हैं, जब वे पीड़ित हों [12]।

ब्रह्माण्डीय नियम के प्रति अपनी समझ को बढ़ाने की प्रक्रिया में, चीजों की परीक्षा करने के प्रयास में, नित्यप्रति विभिन्न गलतियाँ करते हुए और उनसे सीखते हुए, हमें अपने ज्ञान और प्रतिभा का विकास करना चाहिए।

और सब के परे, प्रयास—त्रुटि विधि के द्वारा, हमें सर्वोच्च भावनाओं, जिनकी हम कल्पना कर सकते हैं, को विकसित करने और उन्हें अनुभव करने का प्रयास करना चाहिए।

धीमे—धीमे, हमें अपने आसपास के हर मानव—प्राणी को उसकी व्यक्तिगत प्रतिभा और असीमित सम्भावनाओं के साथ पहचानना और उसका सम्मान करना सीखना चाहिए...

संयोगवश, क्या ये वही तरीका नहीं है जिससे हम अपने बच्चों के साथ व्यवहार करते हैं?

क्या ये एक संयोग है?

आत्मसंशोधन करने वाला डिजाइन

चिंतन विपरीत, कुछ **करने** के क्या पश्चपरिणाम होते हैं?

जब हम **सोचते हैं** तो चिंतन के परिणाम, शुद्ध रूप से हमारी कल्पना में रहते हैं। चिन्तन के लिये किन्हीं दूसरी व्यक्तिशः प्रतिभाओं के साथ अंतर्क्रिया करने की कोई आवश्यकता नहीं होती।

जब हम चीजों को **करते हैं**—हमारे पास अपने कार्यों के **पश्चपरिणामों को अनुभव करने** का एक अवसर होता है। ये भी हमारी और दूसरी व्यक्तिशः प्रतिभाओं के बीच सूचना का एक आदान-प्रदान होता है।

इसप्रकार, चूंकि हम प्रतिभावान हैं—चीजों को करने का अवसर, हमारी गतिविधियों से सीखने के लिये एक यान्त्रिकी का सृजन करता है। अपनी गतिविधियों के पश्चपरिणामों के विश्लेषण द्वारा— हम अपनी क्रियाओं (कारण) और उनके पश्चपरिणामों (प्रभाव) के बीच, न केवल अपने लिए, परंतु दूसरी व्यक्तिशः प्रतिभाओं के लिए भी सम्बंध सीख सकते हैं।

ब्रह्माण्ड के उद्देश्य पर **ध्यान दिये बिना** चीजों को **करने के** परिणाम क्या होते हैं?

अद्भुतरूप से, उद्देश्य के विरुद्ध किया गया कोई कार्य, व्यक्तिशः प्रतिभाओं द्वारा अनुभव की गयी पीड़ा और दैन्यता में फलित होता है। ये हमारी खुद की या दूसरों की पीड़ा हो सकती है। उद्देश्य के प्रति असम्मान जितना गम्भीर होता है—फलित होने वाली पीड़ा और दैन्यता की हद उतनी ही गंभीर होती है।

चूंकि हम प्रतिभावान हैं—और हम “पीड़ा और दैन्यता” को पसंद नहीं करते—हमारे पास, ये सीखने का, कि इससे कैसे बचा जाये, एक अवसर होता है। अंतिम पाठ क्या है? संपूर्ण ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के अनुसार जीना और कार्य करना सीखना।

क्या हो, यदि हम सीखने से मना कर दें? हम पीड़ित होते हैं? हम तबतक **पीड़ित होते हैं, जबतक कि हम ये न समझ लें कि क्यों**। हम पीड़ित होते हैं, जबतक कि हम इस पीड़ा से बचने के लिये कुछ विचारों को विकसित न कर लें। हम तबतक पीड़ित होते हैं, जबतक कि हम पर्याप्त न सीख लें। हम तबतक पीड़ित होते हैं जबतक कि हम उद्देश्य को पर्याप्त न समझ लें और अपनी स्वतंत्र इच्छा के द्वारा अस्तित्व के एक तरीके के रूप में इसका अनुशीलन न कर लें।

ये ब्रह्माण्ड में आत्मसुधार की भव्य यान्त्रिकी का आधार है। सीखने केक्रम में, किसी व्यक्तिशः प्रतिभा को, स्वयं की चयन की स्वतंत्रता के सभी पश्चपरिणामों के सभी अनुभव प्राप्त करने पड़ते हैं।

पश्चपरिणामों से पलायन का कोई रास्ता नहीं है— मात्र क्योंकि हमारी प्रतिभा अनंत समय तक अस्तित्व में बने रहना जारी रखती है और — याद है?, इसकी कोई सीमायें नहीं हो सकतीं? आप स्वयं से पलायन नहीं कर सकते।

हमारी चयन की स्वतंत्रता के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाता — परंतु जब हम गलतियाँ करते हैं, तो हमारे पास पुनर्निवेश होते हैं। क्या ये चतुरता नहीं है?

सारांश में, ये महसूस करना और याद रखना महत्वपूर्ण है कि:

1. पीड़ा, दैन्यता और अप्रसन्नता का अस्तित्व होता है।
2. उनके अस्तित्व में रहने का कारण है—ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के प्रति असम्मान
3. पीड़ा, दैन्यता और अप्रसन्नता का उन्मूलन किया जा सकता है।

4. पीड़ा, दैन्यता और अप्रसन्नता के उन्मूलन की विधियाँ हैं – हर चीज, जो हम **करते हैं**, में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के उद्देश्य को मान्यता देने, और हर मामले में सम्मान करना सीखने के द्वारा।

संयोगवश, ये “चार भद्र सत्य,” हमारे ग्रह के ज्ञात इतिहास में महानतम प्रतिभाओं में से एक के एकदम ठीक निष्कर्ष हैं।

क्या ये पूर्ण अर्थ नहीं बताते?

पीड़ा, दैन्यता और अप्रसन्नता के स्थायी उन्मूलन की विधियों को चाहने के द्वारा – धीमे-धीमे हम डिजाइन के सिद्धांतों और संपूर्ण ब्रह्माण्ड के उद्देश्य की सराहना करना और उनको समझना सीख जाते हैं।

उपरोक्त “चार भद्र सत्यों” में किन्हीं विश्वासों या शिक्षाओं के पूर्णतः नदारद होने पर ध्यान दें। मात्र संदर्भ जो इनको बनाने के लिये आवश्यक है, वह है यथार्थ, जिसे हम प्रतिदिन देखते हैं।

गलतियों से बचना

क्या हम गलती करने से बच सकते हैं? मुझे एक प्रश्न के साथ इसका उत्तर देने दें :

क्या कोई बच्चा गिरने का अनुभव किए बिना कभी चलना सीख सकता है?

सीखने की प्रक्रिया में गलतियाँ करना **अत्यावश्यक** है। हम गलतियों से पूरी तरह बच नहीं सकते—क्योंकि ऐसा करने से हम सीखने की प्रक्रिया का ही उन्मूलन करेंगे।

तथापि पहचानी हुई गलतियों को **दुहराने** से बचा जा सकता है और बचा जाना चाहिए। हम अपनी प्रतिभा का उपयोग **निरीक्षण करने** और **दूसरों की** गलतियों से सीखने के लिए भी कर सकते हैं।

हम ये कैसे **जानें** कि गलती किससे संगठित होती है? निष्कर्ष में, कोई भी क्रिया जो ब्रह्माण्ड के उद्देश्य को सम्मान नहीं देती, एक गलती है।

व्यवहार में, अपनी या दूसरों की पीड़ा या दुर्बलताओं का अनुभव करते हुए, हमको ये विश्लेषित करने के लिए सजग हो जाना चाहिए कि ठीक-ठीक ढंग से, हमारी गलती क्या है।

हमारी क्रियाओं और उनके पश्चपरिणामों के बीच “कारण और प्रभाव” के सम्बंध को पहचानना अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये भी संभावना है कि हमारी क्रियाएँ दूसरे लोगों से उनकी गलतियाँ कराने का कारण बनें।

निम्नलिखित उदाहरण पर विचार करें। आज अनेक लोग, तथाकथित “पीड़ित मानसिकता” को उत्पन्न कर लेते हैं—वे अपनी ही बुरी भावनाओं और सीमाओं के लिए दूसरों पर दोषारोपण करते हैं।

कल्पना करें कि आप ऐसे किसी व्यक्ति को बतायें कि “ब्रह्माण्ड में हर किसी के पास प्रत्येक चीज की असीमित संभावनाएँ हैं। सर्वाधिक रूप से संभावित ये है कि वह व्यक्ति और भी अधिक दुर्बल और अपूर्ण अनुभव करेगा—और ऐसी भावना को पैदा करने के लिए आप दोषारोपित किए जायेंगे। गलती कहाँ है?

आपकी गलती ये थी कि आपने बहुत अधिक और बहुत ज्यादा तेजी से समझाने का प्रयास किया। **आप किसी बच्चे से, ये आशा कि वह खड़ा होने से पहले दौड़ना सीख ले, कैसे कर सकते हैं ?** आप दूसरे व्यक्ति की समझने की क्षमता की सीमाओं को पहचानने और मान्यता देने में असफल रहे। परिणामस्वरूप—आपके पास इस पर कि अपने विचार को कैसे प्रेषित किया जाये ताकि उसे ठीक से समझ लिया जाये, के विषय में कोई **योजना** नहीं थी। अंतिम परिणाम ये था कि दूसरे व्यक्ति ने आपको पूरी तरह से गलत समझा।

ऐसे व्यक्तिओं से, जो “पीड़ित मानसिकता” को बढ़ावा देते हैं या जिनके पास समझने की दूसरी कठिनाईयाँ होती हैं, व्यवहार करने के लिये, उन्हें किसी चीज को सफलतापूर्वक समझाने के लिए—आपको एक “योजना” अथवा “विधि” की आवश्यकता होती है। लोगों को मार्गदर्शित करने के एक समझदारीभरे, व्यावहारिक और बहुत सफल तरीके का एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण, ताकि वे अपनी “पीड़ित मानसिकता” और उसके साथ-साथ दूसरी तमाम सीमाओं का **स्वयं ही** उन्मूलन कर सकें, कोलिन टिपिंग [6] द्वारा वर्णित किया गया है।

आप उस तरीके को खोजने की इच्छा रख सकते हैं जिसे मैं इस पुस्तक में उपयोग करता हूँ। ये नया नहीं है। [11]

एक प्रबुद्ध “**योजना**” या “**विधि**” को धारण करना, किसी भी चेतन गतिविधि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग है।

महान प्रतिभा से एक उदाहरण लें। अपनी क्रियाओं का डिजाइन करें।

आपके पास प्रतिभा और चयन की स्वतंत्रता है। **उनका उपयोग करें**

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

क्या होगा यदि कोई समझता ही नहीं है और समझने की कोई आवश्यकता भी नहीं देखता?

क्या आप किसी बच्चे को दोष दे सकते हैं कि उसने अभी तक चलना नहीं सीखा?

सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, दूसरे व्यक्तियों की प्रतिभा के चयन की स्वतंत्रता का सम्मान करना। कुछ भी सीखने के लिए, उन्हें अपनी गलतियाँ करने देना, केवल मात्र तरीका है। उन्हें अकेला छोड़ दें, ताकि वे अपने खुद के रवैये के पश्चपरिणाम महसूस कर सकें।

क्या होगा यदि लोग आपके ऊपर हँसें और आपके रुख का उपहास करें और जुबान से आपको गालियाँ देना जारी रखें?

यदि कोई कुत्ता आपके ऊपर भौंकता है – क्या आप वापस उसके ऊपर भौंकते हैं ?

क्या आपको याद है कि आप कौन हैं ? आप असीमित संभावना वाली व्यक्तिशः प्रतिभा हैं। कोई भी आपकी व्यक्तिगत प्रतिभा को चोट नहीं पहुँचा सकता – आप इसे स्वयं ही चोट पहुँचा सकते हैं। आपकी भावनाएँ, आपकी ज़ुम्मेदारी हैं। अपनी स्वयं की भावनाओं के लिए दूसरों को दोषारोपित करने का प्रयास भी न करें।

लोग, जो दूसरों पर हँसते हैं, उन्हें बहुत कुछ सीखना है। आपको उसका सम्मान करना सीखने की आवश्यकता है। आप किसी बच्चे को कैसे दोष दे सकते हैं कि उसने अभी तक चलना नहीं सीख पाया है?

मैंने पाया कि ऐसे लोगों के साथ व्यवहार करने के लिए प्रतिभायुक्त “विधि” का विकास करना एक बहुत अच्छा हल है। ऐसे लोगों के साथ व्यवहार करने को अपनी प्रतिभा के लिए चुनौती के रूप में लें। क्या आप इस पुस्तक में ऐसी किसी चुनौती के तत्वों को पहचान सकते हैं?

क्या करें यदि कोई हमको भौतिक रूप से घायल करने का प्रयास करता है?

कैसे भी, आपका भौतिक शरीर अस्थायी है। ये सीखने का एक उपकरण मात्र है। हमला किए जाने पर आपको ये याद करने की आवश्यकता है कि आप कौन हैं और आपके अस्तित्व का उद्देश्य क्या है।

ये निश्चित करने में, कि क्या आपको स्वयं का बचाव करना चाहिए या नहीं, आपको चयन की स्वतंत्रता है। आपका चयन, विशेषकर, अपने चयनों के पश्चपरिणामों को समझने की आपकी योग्यता के ऊपर निर्भर करेगा। आप एक अल्पकालीन उद्देश्य को प्राप्त करने (अपने भौतिक शरीर को जीवित रखने) का लक्ष्य – अथवा अपनी सर्वाधिक पराकाष्ठा वाली परिस्थितियों में अपनी उच्चतम कल्पनीय भावनाओं को पाने के लिये प्रतिभा और क्षमताओं के विकास का एक दीर्घकालीन लक्ष्य— रख सकते हैं। कई बार आप समझौता करना भी चुन सकते हैं। आपको चयन, जो कि आपकी खुद की प्रतिभा के द्वारा सीमित है, की स्वतंत्रता है।

मैं आपको याद दिला दूँ, कि कोई भी आपकी प्रतिभा और चेतना को बुझा नहीं सकता, परमाणु विस्फोट होने की अवस्था में भी नहीं। गलत क्रियान्वयन करने और इसे दूषित करने के द्वारा – आप स्वयं ही इसका विनाश कर सकते हैं। मैं परमाणु विस्फोट के बारे में कैसे जानता हूँ? ठीक है – स्पष्टतः महाविस्फोट (इस ब्रह्माण्ड के महानतम परमाणु विस्फोट) में महान प्रतिभा हताहत नहीं हुई। हमारी व्यक्तिगत प्रतिभाएँ, यद्यपि, अभी उन्नत नहीं हुईं— परमाणुओं से बने हुए पदार्थ की यथार्थता से स्वतंत्र, उसी प्रक्षेत्र में अस्तित्व में रहती हैं। [20]

एक दिन आप पुरातन सलाह, “बुराई का प्रतिरोध मत करो” [5] [7] [8] की प्रतिभा को सर्वाधिक सम्भावित

विस्तृत संदर्भ में – संपूर्ण ब्रह्माण्ड का उद्देश्य और इसमें आपकी भूमिका को पूरी तरह समझ सकते हैं।

आत्महत्या के विषय में क्या?

आत्महत्या करने के द्वारा लोग इस बात का स्पष्ट प्रमाण देते हैं कि उनके पास ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के बारे में कोई सूत्र नहीं है और विशेषरूप से, वे इस भौतिक शरीर में रहने की आवश्यकता और अवसर को नहीं समझते। क्या आपको “करने” और “सोचने” के बीच का अंतर याद है?

वे जीवन की “परीक्षा” में असफल हो जाते हैं। वे “करने” की परीक्षा में असफल हो जाते हैं। सर्वाधिक संभव पश्चपरिणाम यह है कि उन्हें –जबतक कि वे समझ नहीं लेते–ऐसी परीक्षा कई बार देनी होगी।

जीवन एक परीक्षा है, भले ही हम समझें या केवल स्वप्न देखें कि हम करते हैं।

आधारभूत उपकरण

दृष्टि

हम प्रकृति के सौंदर्य, जो हमारे आसपास है, पर कैसे ध्यान देते हैं, खोजते हैं और प्रशंसा करते हैं ?

हमारी प्रतिभा का सर्वाधिक आधारभूत उपकरण, जो हमारे पास है, वह है दृष्टि। दृष्टि की यांत्रिकी के बिना हमारी प्रतिभा कोई जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होने योग्य नहीं होती।

इस कारण से, मूल सिद्धांतों और हमारी दृष्टि की सीमितताओं को समझना अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

दृष्टि का एक नियम है जिसे सार्वत्रिक कहा जा सकता है, क्योंकि ये किसी भी परिस्थिति में लागू होता है। ये विभेदनों का नियम है।

दृष्टि **विभेदन** पर आधारित होती है। आप इस लेख को केवल इस कारण से पढ़ सकते हैं क्योंकि इसमें पृष्ठभूमि और अक्षरों के बीच पर्याप्त विभेदन है।

हम चीजों को केवल तभी देखते हैं जब वे पर्याप्त विभेदन में रखी गई हों। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य की सराहना केवल तभी होती है, जब ये खो जाता है। दैन्यता और पीड़ा अनुभव करनी पड़ती है ताकि हम खुशहाल अस्तित्व को परिभाषित करें और उसकी सराहना करें। ये खोजने के लिए कि प्रेम और सहयोग एक अधिक विद्वतापूर्ण चयन है, लोगों को लड़ाई और प्रतियोगिता के पश्चपरिणाम अनुभव करने पड़ते हैं।

हमारे यथार्थ की दृष्टि के प्रत्येक पहलू को सम्मिलित करते हुए, विभेदन का सिद्धांत, प्रकृति में हर जगह लागू होता है। इसप्रकार ये ब्रह्माण्डीय नियम – सिद्धांतों के एक समूह, का एक भाग है, जो संपूर्ण ब्रह्माण्ड में लागू होता है। [1]

दृष्टि के इस मूल सिद्धांत को जानते हुए – हम अपने चयनों की परीक्षा कर सकते हैं और अपनी क्षमताओं का अधिकतम सम्भावित लाभ लेने का लक्ष्य बना सकते हैं।

उदाहरण के लिए – यदि हम वास्तव में प्रेम का महत्व समझना चाहते हैं – हमें इसके **अभाव** की कल्पना, निरीक्षण, विश्लेषण और अनुभव भी करने पड़ेंगे। चीजों को उचित विभेदन में रखना, हमारी समझने की क्षमता को नाटकीय रूप से बढ़ाता है। अगली बार जब आप इस पुस्तक को दोबारा पढ़ें – ध्यान देने का प्रयास करें कि विभेदन का मेरा समझा-बूझा उपयोग, कैसे और क्यों आपकी समझने की योग्यता को बढ़ाता है।

विभेदनों के कुछ संयोग हमको उत्तेजित करते हैं, जबकि दूसरे, स्पष्टरूप से, परेशान करने वाले होते हैं। “विभेदनों” के विशिष्ट संयोग भी अस्तित्व में होते हैं जो बहुत सुखद और हमारी प्रतिभा को उत्तेजित करने वाले होते हैं।

उदाहरण के लिए संगीत पर विचार करें। स्वरों (सुरों) को किसी “पैमाने” के अनुसार एक दूसरे के साथ विभेदन करना पड़ता है। जब हम ऐसे विभेदनों को किसी खास ढंग से व्यवस्थित कर लेते हैं तो हम वह प्रभाव, जिसको हम समस्वरता के रूप में देखते हैं, प्राप्त करते हैं। विभेदनों की समस्वरतापूर्ण रचनाएँ बहुत सुखद और आनंदमय होती हैं।

“समस्वरता” प्राप्त करने के लिए, हम बहुत अच्छे तरीके से ट्यून किए गए किसी पियानो पर भी, मात्र वेतरतीब स्वरों को उपयोग में नहीं ला सकते। **समस्वरता की रचना और उसका अवलोकन, दोनों ही प्रतिभा के कार्य हैं।**

क्या आपको याद है कि जब आप अपनी पसंद का संगीत सुनते हैं, आप कैसा महसूस करते हैं? विशिष्ट “समस्वरता” जिसे हम चुनते हैं और “पसंद” के रूप में पहचानते हैं, हमारे मन की स्थिति और अच्छे स्वास्थ्य के

लिये बड़े ऊँचे परिवर्तनों को प्रेरित करती है।

प्रकृति, अपनी संपूर्णता में, समस्वरता प्राप्त करने का एक महान उदाहरण और पाठ है। वास्तव में, इसे महान प्रतिभा के द्वारा डिजाइन किया गया है – क्या नहीं है? हर जगह समस्वरता है – भले ही हम इसके प्रति सजग हों या नहीं, फिर भी। समस्वरता, जिसे हम प्रकृति में, धीमे-धीमे पहचानना सीख जाते हैं, उस बुद्धिमता, जिसने इस डिजाइन की कल्पना की थी, के परिमाण का एक और प्रमाण है।

प्रकृति में रंग का उपयोग, इसका कि हमारी दृष्टि को उत्तेजित करने के लिए विभेदनों का उपयोग कैसे किया जाए, एक दूसरा उदाहरण है।

बहुत कुछ संगीत की तरह, सभी रंगों (प्रकाश की तरंगदैर्घ्यों) में, कुछ संयोजन हैं जो हमारी दृष्टि को दूसरों की तुलना में बहतर “विभेदन” प्रदान करते हैं। रंगों के कुछ संयोजन सबसे अच्छे दिखते प्रतीत होते हैं – क्योंकि वे हमारे संज्ञानों को अधिकतम संभव विभेदन प्रदान करते हैं।

ये खोजना, कि प्रकृति में रंगों के ये “सर्वोत्कृष्ट” युग्म, रंग-विरंगे प्राणियों की सजीव सजावट के प्रमुख सिद्धांत के रूप में समन्वय करते प्रतीत होते हैं, पूर्णतः मोहित करने वाला है।

उदाहरण के लिए, क्या आप जानते थे कि पृथ्वी पर, फूलों में सर्वाधिक बहुधा मिलने वाला रंग “गुलाबी-जामुनी” है? क्या आप जानते हैं, क्यों? सहज ही, क्योंकि गुलाबी-जामुनी, हरे रंग के साथ, जो उन पौधों, जो उन फूलों को उगाते हैं, की पत्तियों के रहते, सबसे अधिक पाया जाने वाला रंग है, सर्वाधिक संभव विभेदन प्रदान करता है। हरे रंग के लिए, इससे और अधिक अगले समीपवर्ती विभेदन युग्म रंग, “लाल” और “बैंगनी” हैं।

पृथ्वी पर सभी फूल प्रजातियों के लगभग 90 प्रतिशत फूल गुलाबी, जामुनी, लाल और बैंगनी, होते हैं। क्या आप सोचते हैं कि ये एक संयोग मात्र है?

फूल, जो दूसरे रंगों के होते हैं, दूसरे विभेदनों, जैसे कि उदाहरण के लिए सुगंध, के द्वारा जीवित प्राणियों का ध्यानाकर्षण करते हैं।

बहुत कुछ संगीत की तरह से ही, हम रंगों की तरंगदैर्घ्यों के युग्म के किसी सैट का समन्वय कर सकते हैं और स्वयं के लिये विभेदन करने वाले रंगों के संयोजनों को बना सकते हैं।

प्रकाश की विभेदक तरंगदैर्घ्यों के ये समन्वित संयोजन, “जैव अनुनादक” नमूने कहे जाते रहे हैं, क्योंकि ये मनुष्य शरीर के इलेक्ट्रोफोटोनिक उत्सर्जनों (प्रभामंडल) के साथ “अनुनाद” करते प्रतीत होते हैं और मानव-मनस और स्वास्थ्य में क्रमबद्ध धनात्मक परिवर्तनों को प्रेरित करते हुए प्रतीत होते हैं।

विभेदनों के समन्वय का सामना करने के द्वारा, हमारा दृष्टिकोण लगातार उत्तेजित किया जाता है। हम अधिक संवेदनशील और दृष्टिशील हो जाते हैं। हमारी प्रतिभा की बढ़ी हुई सजगता और उससे सम्बद्ध गतिविधियों, देर-अबेर हमारी मनस्थिति, मनोविज्ञान और स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। (अधिक विस्तार के लिए संदर्भ [14] देखें)

क्या होता है, जब हम अपने दृष्टि की अधिकतम उत्तेजना का लक्ष्य करते हैं?

हमारी प्रतिभा की हर अन्य विधा, क्रिया करने के लिए उत्तेजित होती है!

इसलिए आप जिसे देख सकते हैं, उस पर अधिक ध्यान देने का प्रयास क्यों नहीं करते? आप जितना ज्यादा अधिक प्रयास करेंगे, उतना ही अधिक देखेंगे और समझेंगे।

सूचना को छानना

हमारी प्रतिभा पर, लगातार, असाधारण मात्रा में जानकारियों की बमबारी हो रही है। हर कोई हमारे ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करता है और उनके इरादे सदैव स्पष्ट नहीं होते।

हम में से अधिकांश के लिए सूचनाओं की मात्रा साधारणतः असहनीय होती है। लोग इसमें से ज्यादातर को अनदेखा ही करते हैं, या किसी और के ऊपर, जिसने इस सूचना को छाना हो और जो पांच मिनट में सारांश में उन्हें दे दे, विश्वास करना पसंद करते हैं।

क्या कोई बहतर तरीका है? क्या हम अपना स्वयं का छन्नक विकसित कर सकते हैं, जिससे हम कबाड़ के ढेर में से भी, हमेशा हीरों को अलग कर सकें? कैसे पता चलाया जाए कि क्या सत्य है और क्या महत्वपूर्ण है?

ब्रह्माण्ड के उद्देश्य को जानते और समझते हुए – यद्यपि प्रारंभ में ये सीमित होता है – हमें आने वाली सूचनाओं के लिए एक अत्यंत शक्तिशाली छन्नक को डिजाइन करने के योग्य बनाता है।

आपको अपने आपसे केवल एक ही प्रश्न पूछने की आवश्यकता है:

“क्या ये उद्देश्य के साथ किसी तरह हस्तक्षेप करता है?”

धोखा, प्रचार, बदनामी, आदि गलत जानकारी को क्षण भर में “छानकर अलग करने के लिए।” यदि आपके अपने मन में उद्देश्य स्पष्ट नहीं है, तो आप अपने परीक्षण का, दो समतुल्य प्रश्नों में विस्तार कर सकते हैं :

क्या ये व्यक्तिगत प्रतिभा के विकास को दबाता या रोकता है?

क्या ये किसी की चयन की स्वतंत्रता के साथ समझौता करता है?

आप खतरनाक शिक्षाओं को, दिलचस्प वैज्ञानिक सिद्धांतों से – अद्भुत नियमितता और शुद्धता के साथ— तत्काल ही पहचानने में सक्षम होंगे। इसे जाँच कर देखें। आप आश्चर्यचकित होंगे कि ये एक छन्नक के रूप में, कितना सरल और प्रभावशाली है। हर बार।

ध्यान और एकाग्रता

ध्यान, मन को पूरी तरह से शांत करने, ताकि इसमें किसी भी प्रकार का कोई विचार नहीं हो, और उसे बनाये रखने के लक्ष्य के साथ एक अभ्यास है। दूसरे शब्दों में, हम अपने मन को “खाली” रखने का लक्ष्य रखते हैं और अपना पूरा ध्यान, नहीं सोचने पर लगा देते हैं।

मन की “खामोश अवस्था,” आपकी कुशलता और इरादे पर निर्भर करते हुए, कुछ सेकण्ड या कुछ घंटों के लिए बनाकर रखी जा सकती है।

एकाग्रता इसकी ठीक उल्टी है – हम अपने ध्यान को, अपनी वैयक्तिक प्रतिभा की विशिष्ट सुविधाओं जैसे कि कल्पना, मानसिक चित्रण, सृजन, तर्कपूर्ण विचार, समस्याओं के निदान या भावनाओं और अहसासों के अनुभव का उपयोग करते हुए, केन्द्रित करते हैं।

फिर, इससे पहले कि विश्राम लेना पड़े, कुछ सीमाएँ होंगी कि हम कितने लंबे समय तक एकाग्र हो सकते हैं।

ध्यान को एकाग्रता से अलग पहचानना, केवल इसलिये कि दोनों के उद्देश्य पूरी तरह अलग-अलग हैं,

बहुत महत्वपूर्ण है।

न तो ध्यान और न ही एकाग्रता, असीमित समय तक बनाये रखे जा सकते हैं।

क्या आपने कभी आश्चर्य किया है कि आप बिना विश्राम के, लंबे समय तक क्यों नहीं काम कर सकते? आप लंबे समय तक, बिना कोई विराम लिए क्यों एकाग्र नहीं हो सकते? आप बहुत लंबे समय तक सोते क्यों नहीं रह सकते।

क्या आपने दृष्टि के वैश्विक नियम को याद किया? प्रारंभ करने के लिए, चीजों को देखने के लिये हमें विभेदनों का सामना करने की आवश्यकता होती है। तब हमें संतुलन और समस्वरता के संज्ञान का अनुभव करने के लिये, ऐसे विभेदनों को एक विशेष विधि से व्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है।

हम केवल एक अच्छे विश्राम के बाद, काम का आनन्द लेते हैं। हम एक लंबे समय तक कठोर श्रम करने के बाद, विश्राम का भलीभांति आनन्द लेते हैं। “चक्रीय-परिवर्तन,” हमारे जीवनो में हर जगह होते हैं और अवपरमाणु जगत से आकाशगंगाओं की प्रणालियों तक, वे चेतनतापूर्वक डिजाइन किए गए ब्रह्माण्ड के सार हैं।

विभेदनों के नियम का ध्यान और एकाग्रता के साथ क्या लेना देना है?

ध्यान और एकाग्रता, हमारी प्रतिभा के कार्य करने की दो सीमांत विधियाँ हैं। एकाग्रता, गहनता के साथ, हमारी प्रतिभा की सुविधाओं का उपयोग करती है, जबकि ध्यान, बौद्धिक सक्रियता से पूर्ण विश्राम पाने का लक्ष्य रखता है।

इन प्रत्यावर्ती चक्रों का अभ्यास करना उतना ही आवश्यक है, जितना कि काम और विश्राम के प्रत्यावर्ती कालखंड।

इसका अर्थ है कि हमको केवल “ध्यान” या केवल “एकाग्रता” नहीं करनी चाहिए। सजगतापूर्वक, एकांतरक्रम से, एकाग्रता और ध्यान करना, हमारी प्रतिभा के लिए सबसे अच्छा अभ्यास है। जब हमारी प्रतिभा, दोनों सीमान्तों का अनुभव करती है – ये सबसे अच्छी तरह से अपना काम करती है।

हमें ध्यान करने की आवश्यकता क्यों होती है? क्या नींद या विश्राम ही काफी नहीं है?

जब आप “विश्राम” करते हैं – आपका मन, वास्तव में, बिल्कुल विश्राम में नहीं होता। आपके अंदर, पूरे समय, भावनाएँ अथवा विचार चलते रहते हैं। इसकी जाँच करके देखें। आपकी नींद में भी ऐसा ही होता है – आपको स्वप्न, भावनायें और अनुभूति होती हैं, यद्यपि आप उन्हें याद नहीं रखते।

ध्यान आपको अपनी प्रतिभा को सजगता और पूर्णता के साथ शिथिल होने योग्य बनाना सिखाता है। जब प्रतिभा शिथिल होती है तो वह सक्रियता के काफी ऊँचे स्तरों का आनंद लेती है और ये उल्लेखनीय ढंग से अधिक दक्ष हो जाती है।

जब हमारा मन विचारों और स्मृति के कोलाहल से भरा होता है – तो नये विचारों का पैदा होना बहुत मुश्किल होता है।

हम जो “सोचते हैं,” हम जानते हैं कि वह किसी नई समझ को रोकता है। हम पुराने विचारों और स्मृतियों के साथ अटकें हुए होते हैं। जब हम नियमित आधार पर अपने मन को विचारों से खाली कर लेते हैं – तो हम नवीन विचारों के लिए स्थान बनाते हैं।

संक्षेप में, ध्यान आपकी प्रतिभा के लिए उतना ही आवश्यक है, जितनी कि आपके भौतिक शरीर के लिए नींद।

ध्यान की सामान्य विधियाँ

ध्यान की अनेक विधियाँ हैं उनमें से अधिकांश, बहुत ही कम शब्दों या ध्वनियों से बने किसी तथाकथित “मंत्र” का उपयोग करती हैं। मंत्र को, मन की रिक्त अवस्था पाने में मदद करने के लिए, मानसिक रूप से जपा जाता है।

लोकप्रिय विश्वास के विपरीत, उन लोगों, जो अनुयायियों को आकर्षित करते हैं और/अथवा ध्यान सिखाने के लिए धन बसूल करते हैं, के द्वारा प्रोन्नत किये गये मंत्र का कोई पवित्र “अर्थ” नहीं होता और न ही कोई मंत्र, आवश्यक रूप से, दूसरे की तुलना में अच्छा होता है। तथापि उसके विषय पर ध्यान न देते हुए, मंत्र के दो महत्वपूर्ण कार्य हैं, जो खाली मन की ध्यानावस्था को प्राप्त करने और बनाये रखने में हमें महान रूप से सहयोग कर सकते हैं।

1. मंत्र एक अत्यंत सरल विचार है। जब हम इसे अपने मन में दुहराते हैं, ये हमारे लिये सुपरिचित हो जाता है। ये विचार, किसी दूसरे विचार को जो हमारे मन में आ सकता है, से विस्थापित करने के लिये उपयोग में लाया जाता है। हर बार, ध्यान के मध्य, जब कोई विचार आता है, हम उसे विस्थापित करने के लिए मंत्र का उपयोग करते हैं।

2. जब हम, *नियमित रूप से*, ध्यान में, एक ही मंत्र (ये कुछ भी हो) का अभ्यास करते हैं, शीघ्र ही हम अपने मन को, शांत ध्यान की अवस्था के साथ उस मंत्र को सम्बद्ध करने के लिये प्रशिक्षित कर लेते हैं। न्यूरोलिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग (NLP) अभ्यासकर्ताओं के द्वारा इस जुड़ाव को “लंगर” कहा जाता है। ऐसे किसी प्रशिक्षण के बाद, यदि हम उद्वेलित भी हों, मंत्र का विचार, सामान्यतः हमारे मन में तुरंत शांति लाता है। ये हमारे मंत्र को, हमारे जीवन की तनाव भरी परिस्थिति के साथ मुकाबला करने में, एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में सामने आता है, एक ऐसा उपकरण जिसे हम स्वयं ही, नियमित ध्यानाभ्यास के परिणाम के रूप में विकसित कर सकते हैं।

जब हम मंत्र के उपरोक्त दो कार्यों को समझ लेते हैं, ये स्पष्ट हो जाता है कि मंत्रों को बदलना कोई अच्छा विचार नहीं हो सकता। कुछ विशेष परिस्थितियों में ही, मंत्र को बदलना उपयोगी समझा जाता है। उदाहरण के लिए, जब हम ध्यान की अवांछित आदत, जो हमें गहरे ध्यान की अवस्था में जाने से रोकती है, को समाप्त करना चाहते हैं, और वर्तमान मंत्र, उस आदत से सम्बन्धित के रूप में पहचाना जाता है।

ये भी तर्कयुक्त हो जाता है कि हम जिस किसी भी मंत्र का प्रयोग करें, हमें उसे निजी और गुप्त बनाकर रखना चाहिये और दूसरों को बताना नहीं चाहिये। अन्यथा, हम दूसरों को अपने मन पर नियंत्रण करने के लिये, दूरानुभूति के द्वारा, अपने मंत्र को, हमें ही प्रेषित किये जाने का एक साधन प्रदान कर देते हैं।

मंत्र, सामान्यतः वैकल्पिक स्वरों और नकियाई ध्वनियों से मिलकर बनते हैं। सर्वाधिक विस्तार से जाना जाने वाला मंत्र है ‘ओम्’..... या ‘अउम्’....., परंतु, जब हम (होम, रूम, जूम, मून, त्सेन, बूम इत्यादि) ध्वनियों को विस्तार देते हैं, कोई भी दूसरा समान शब्द भी चलेगा। सबसे अच्छा होगा, यदि मंत्र मोहक या कृत्रिम शब्द का बना हो, जो किसी भाषा में न मिले।

ध्यान की अवस्था में मुद्रा भी महत्वपूर्ण होती है। सबसे आसान मुद्रा सुखद बैठने की मुद्रा होती है। आपकी रीढ़ सीधी और तनी हुई। यदि आप लेट जायें – इसकी सबसे अधिक संभावना है कि आप सो जायें। जब आपको नींद आने में परेशानी हो, आप इसका लाभ उठाने की इच्छा रख सकते हैं।

ध्यान की अवधि में अपने हाथों को जोड़ना, और अपनी टांगों को पालथी मारकर बैठना बांछित है, क्योंकि तब आप जैव-विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र को अपने आसपास सर्वाधिक सघन कर लेते हैं और इसलिए अधिक गहन हो

जाता है। पालथी मारकर बैठना, दूसरी अच्छी मुद्रा है, परंतु इसमें कुछ उपयुक्तता और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। परंतु दूसरी अच्छी मुद्रा, यद्यपि आजकल बहुत ही कम उपयोग में लाई जाती है, उकडू बैठने की स्थिति है, जिसमें आपके घुटने आपकी छाती के पास होते हैं, पैर और हाथ एक दूसरे सेक्रास किए होते हैं। ये मुद्रा, बहुत कुछ हमारे जन्म लेने के पहले, मां के गर्भ में भ्रूण की स्थिति के समान होती है।

यदि आपने कोई ध्यान कभी करके नहीं देखा है तो एक शांत स्थान खोजने का प्रयास करें और निम्नलिखित तकनीक का प्रयास करें।

1. ध्यान की उपरोक्त वर्णित मुद्राओं में से कोई आरामदायक मुद्रा चुनें।

2. अपनी आँखों को बंद करें और चेहरे सहित अपने शरीर की सारी मांसपेशियों को ढीला छोड़ दें। प्रारंभ की इस स्थिति में, नथुनों के श्वसन के कुछ वैकल्पिक योग बहुत सहायक होते हैं।

3. यदि कोई विचार आता है तो इस पर ध्यान न दें – बहुरूपदर्शी को जारी न रखें – अपने मन को खाली बनाये रखने का प्रयास करते हुए, इसे 20 मिनट या ऐसे ही समय तक जारी रखें। आप हर बार, जब भी विचार आये, एक मानसिक ध्वनि, ओम् का उपयोग कर सकते हैं। वैकल्पिकरूप से, आप जैसे ही कोई विचार आये, बिना इसका विश्लेषण किए उसे त्यागते हुए, विचारों का गिनना जारी रख सकते हैं। जब आप पांच मिनट में 3-4 विचारों की स्थिति में आ जायें तब आपका ध्यान बहुत अच्छी तरह सफल कहलायेगा।

ध्यान के हर सत्र के पहले, स्पष्टरूप से, आप ये परिभाषित करने की इच्छा रख सकते हैं कि आप क्या सीखना चाहते हैं। ध्यान की अवधि में किसी उत्तर की अपेक्षा न करें (यद्यपि ये आ सकता है) – ये भी एक विचार है!

अभ्यास के साथ, आप अपने मंत्र की सहायता से किसी भी समय, और कहीं भी, लोगों की किसी भीड़ में भी, या तनावपूर्ण स्थिति में भी खाली मन पा जाने में सक्षम होंगे। परंतु जब आप तनाव में हों, जबतक कि आप सकारात्मक न हों कि आपने ध्यान का काफी लंबा अभ्यास किया है और मंत्र का विचार आपकी मन की रिक्त अवस्था से पूरी तरह जुड़ा हुआ है, मंत्र का उपयोग न करें।

एकाग्रता के अभ्यासों के उदाहरण

व्यक्तिगत प्रतिभा के विकास हेतु चर्चा करना, और एकाग्रता के उपयोगी अभ्यासों की तुलना करना, सहज ही अनेक पुस्तकों को भर सकता है। यदि आप और अधिक सीखना चाहते हैं, तो संदर्भ [3] का परीक्षण करते हुए आपको कुछ अच्छे विचार दिए जा सकते हैं। उनकी संभावनाओं और उनके परिणामों को बताने के लिए, नीचे, मैंने उन उदाहरणों में से केवल कुछ शामिल किए हैं।

प्रेम पर एकाग्रता

(ये “मेटा” एकाग्रता भी कहलाती है [3])। ध्यान में “शांत मन” को प्राप्त करने और उसे लगभग बीस मिनट तक बनाये रखने के बाद, आप स्वयं को प्रेम से “घिरा हुआ” होने की कल्पना करें। विषय से नहीं। प्रेम, जो उस तरह की भावना के समान है, जो आप अपने बच्चे, अपनी मां या प्रकृति के लिए रखते हैं। वास्तव में, प्रतिबंध रहित प्रेम।

एक-एक करके, प्रकरण-दर-प्रकरण, हर चीज और हर किसी का, जो आपको किसी प्रकार से परेशान करता है, विश्लेषण करें और उस व्यक्ति या उस चीज के लिए, अपने आप में प्रेम की भावना पाने का प्रयास करें। अपनी खुद की और दूसरों की गलतियों को –प्रेम सीखने के आवश्यक उपकरण के रूप में देखें। **इस अवस्था को प्राप्त करने और बनाये रखने का प्रयास करें, जिसमें आप किसी के, जिसे आप प्रेम न करते हों, आसपास होने की कल्पना नहीं कर सकते।**

ऐसी स्थिति में, कल्पना करें कि “प्रेम का बादल” जो आपको घेरे हुए है, बढ़ता जाता है। आप इस के विस्तार की कल्पना करें, आप इससे पूरा कमरा, तब फिर इसमें रहने वालों के साथ पूरे घर भर जाने की कल्पना करें। अंतिम लक्ष्य है, अपने प्रेम से संपूर्ण ग्रह को, तब हमारी निहारियों, और अंत में पूरे ब्रह्माण्ड को घेर लेने की कल्पना करना। अपने मन में अंतिम चित्र पाने के लिए, आपको इसमें लगातार अभ्यास के कई महीने या कई साल लग सकते हैं।

“दृष्टिचित्रों” पर एकाग्रता

जब आप काफी लंबे समय तक ध्यान का अभ्यास करते हैं और अपने ध्यान के बीच में शांत चित्त का आपका ध्यान पर्याप्त रूप से लंबा हो जाता है, आपका मन, कई बार, “छवियों” या “मानसिक दृश्यों” को प्रस्तुत करेगा जो –आपकी आंखें बंद होने और आपके पूरी तरह से अंधकार में बैठे होने पर भी—सीधे ही आपके सामने प्रकट हो जायेंगे।

ऐसे दृश्यचित्रों का प्रकट होना, बहुत कुछ स्वप्न दिखने के समान है, परंतु जब आप उन्हें देख रहे होते हैं, स्वप्नों के दौरान की अपेक्षा, समान न होते हुए भी, आप पूरी तरह से सचेत होते हैं।

और जब वे प्रगट हों, आप इन “दृश्यचित्रों” के ऊपर अपना ध्यान एकाग्र करने की इच्छा रख सकते हैं और उन्हें समझने की कोशिश करें कि आपका खुद का मन, उन्हें क्यों पैदा करता है और **आप उनसे क्या सीख सकते हैं।**

इनमें से अनेक दृश्यचित्र, बहुत कुछ स्वप्नों की तरह सम्वादमूलक होंगे।

इन दृश्यों के उपस्थित होने के अनेक कारण हैं, उदाहरण के लिए :

?? वे आपकी खुद की स्मृति में से आ सकते हैं, वह ऐसा कुछ हो सकता है जो आपने पहले देखा हो।

?? वे आपके अपने ढंग में, आपकी समस्याओं के हल या सुझाव हो सकते हैं, जिन पर आपको ध्यान देने की आवश्यकता है।

?? कोई "दृश्यचित्र" किसी दूसरे की ओर से संदेश भी हो सकता है। अत्यंत शांत चित्त की स्थिति में, आप किसी दूसरे व्यक्ति की प्रतिभा से विचार पा सकते हैं, *यदि ये आपकी ओर निर्देशित हो।* इस संभावना को खोजें, यदि ये कोई दूसरा है – अंततः आपको, परंतु केवल संपर्क की अवधि में, मात्र उस पर लक्ष्य साधते हुए, यह महसूस करने के लिए सक्षम होना चाहिए कि ये कौन हो सकता है।

?? वे मनोमंडल [1] की छवियाँ—जिन्हें आकाशीय अभिलेख के रूप में जाना जाता है, भी हो सकती हैं।

?? वे किसी दूसरी अवस्थिति की यथार्थता के प्रतिबिंब भी हो सकते हैं। यदि आप अवस्थिति को पहचान सकें— बाद में, इसे जाँचने की कोशिश करें।

?? वे जीवन में अपने "कर्मों" की तलाश के लिये, आपको अभिप्रेरित करने और प्रोत्साहित करने के लिए आपके उच्चतर अहम की ओर से संदेश भी हो सकते हैं।

?? अनेक स्वप्नों की भांति, वे आपकी खुद की प्रतिभा और आपके उच्चतर अहम के द्वारा संचालित आपकी आध्यात्मिक परिपक्वता के "परीक्षण" भी हो सकते हैं। ये परीक्षण आपको अपने रवैये की "जाँच" करने योग्य बनाते हैं और उनके पश्चपरिणामों को अनुभव किए बिना, "कठोर परीक्षा" भी लेते हैं। परिणामस्वरूप, जब आप चीजों को वास्तव में करते हैं, आप अपनी चयन की स्वतंत्रता को अधिक अच्छी तरह से लागू करने के लिये तैयार हो जाते हैं।

"दृश्यचित्रों" के ऊपर एकाग्रता करने का अभ्यास, अपने स्वप्नों को नियंत्रित करने का प्रयास करके भी किया जा सकता है। इसको करके देखें। स्वप्नों को, जैसे ही ये आते हैं, खोजने के लिये अपनी प्रतिभा को उपयोग करना याद रखें।

उनकी जटिलता, विस्तार और अनुप्रयोगों को धीमे-धीमे बढ़ाते हुए, नियंत्रित और संवादमूलक ढंग से अपने दृश्यचित्रों को पैदा करने की योग्यता, सर्वाधिक विकसित स्थिति होती है।

“आंतरिक ध्वनि” पर एकाग्रता

ये गुप्त तकनीकों में से एक है, जिसे भूतकाल में, अनेक उन्नत व्यक्तिशः प्रतिभाओं ने, अपने भौतिक शरीर से अपनी चेतना को अलग करना प्रारंभ करने और बिना मरे “परलोक” की परीक्षा के लिए, उपयोगी पाया है।

एक पूर्णतः शांत कमरे में प्रारंभ करें। ध्यान की अवधि के दौरान अपने “शांत चित्त” को बनाए रखने के बाद— “आंतरिक ध्वनि,” जो आपके मन में गूंजती है, के प्रति सजग होने का प्रयास करें।

ध्यान दें कि यहाँ हम श्वसन अथवा हृदय की धड़कन की ध्वनि की बात नहीं कर रहे हैं — केवल वह ध्वनि जो आपके मन में है।

इस ध्वनि को खोजें। तब इसके स्रोत को पहचानने का लक्ष्य करें। एकाग्रता के द्वारा अपनी “आंतरिक ध्वनि” के स्रोत की “अवस्थिति का पता करने का प्रयास” करें। अपने भौतिक शरीर के प्रत्येक भाग को पूरी तरह से शिथिलता में बनाये रखने के द्वारा, अपनी “आंतरिक ध्वनि” की अधिकतम तीव्रता और महत्तम तारत्व चाहें।

अंततः (जो सहसा ही या वर्षों के अभ्यास के बाद हो सकता है) आप ऐसी स्थिति में पहुंचेंगे, जिसमें “आंतरिक ध्वनि” इतनी तेज हो जाती है कि आप उसे लगभग असहनीय पायेंगे, परंतु केवल पहली बार ही। डरे नहीं—यह सामान्य है।

जब आप आंतरिक ध्वनि के स्रोत के पर्याप्त समीप हों, तो आपको एक “सुरंग” के प्रारंभ को खोजने के योग्य होना चाहिए—वही सुरंग, जो अनेक लोगों, जिन्होंने डॉक्टरी मृत्यु का अनुभव किया है और जीवित वापस लौटकर आये [15], के द्वारा बताई जाती रही है।

ऐसी अवस्था में, इस सुरंग की स्थिति का पता लगाने के लिए, “दूसरे सिरे” पर रोशनी चाहें। शुरु में, प्रकाश एक दूरस्थ तारे के प्रकाश से अधिक नहीं होगा। अपना ध्यान तारे पर केन्द्रित करने की कोशिश करें और इसे गवाएँ नहीं।

तब एकाग्रता के द्वारा, प्रकाश तक “पहुँचने” का लक्ष्य बनायें। प्रकाश, यदि आप सफल हुये, तो आपको प्रकाश की ओर, असाधारण गति से यात्रा करने जैसा अनुभव होगा, यद्यपि आपका भौतिक शरीर पूरी तरह से स्थिर रहेगा। प्रकाश के आसपास हर चीज “सुरंग” का आभास पैदा करेगी। यह एक भ्रम है, क्योंकि यदि आप अपनी चयन की स्वतंत्रता का उपयोग करेंगे और रास्ते पर आगे रुकने का निर्णय करेंगे तो आप अपने आपको तारों के बीच में पायेंगे, और “आकाश” विकृत प्रतीत होगा।

जब आप प्रकाश तक पहुँचने में सफल हो जायें— ये अत्यधिक चमकीला हो जायेगा और अंत में इसकी चमक सूर्य की रोशनी से भी अधिक बढ़ जायेगी। जिसे हम प्रकाश के रूप में देखते हैं —वास्तव में, वह हमारा उच्चतर अहम है — महान प्रतिभा के लिए हमारा एकदम निजी अंतरफलक⁵।

आप सुरंग में कितना आगे तक जा सकते हैं, निर्भर करता है कि वहाँ जाने का प्रारंभ करने के लिए आपका हेतु कितना अच्छा है। अंतिम परिणाम न केवल आप पर —बल्कि अपने में प्रवेश कराते हुए आपके उच्चतर अहम पर भी निर्भर करेगा। आप यहाँ मोल—भाव भी कर सकते हैं— आपको हर समय चयन की स्वतंत्रता है। इसे कभी भूलें नहीं।

जब आपको अपने उच्चतर अहम में प्रवेश मिल जाता है—ये परमानंद किसी भी मानवीय भाषा में वर्णित नहीं किया जा सकता।

सबसे अच्छे तरीके से, जो मैं इसको बता सकता हूँ — आपसे इतना अधिक प्रेम किया जाता हुआ अनुभव

5 ब्रह्माण्ड में चेतना का संगठन, इस पुस्तक की विषय वस्तु के बाहर है। ब्रह्माण्ड की चेतना के डिजायन का अत्यावश्यक भाग, सूचना को छाननेवाली एक प्रबुद्ध प्रणाली है, जो महान प्रतिभा को अपरिष्कृत मनो के द्वारा प्रदूषित किये जाने से रोकती है। सन्दर्भ, जो इन मुद्दों का सबसे अच्छा वर्णन करता है, वह है, यह पुस्तक [1]। मेरे आश्चर्य के लिये, मैं इस डिजाइन के कुछ पहलुओं को आत्म-अध्ययन के द्वारा सत्यापित कर सका।

करते हैं कि आप प्रेम किए जाने से बेहोश हो जाते हैं। जब आप जागते हैं – आप सोचेंगे कि आप कुछ सैकण्डों के लिए बेहोश हुए थे, परंतु आपकी घड़ी, अधिकतम संभावित है कि एक या दो घंटे बाद का ही समय दिखाएगी।

यहाँ दो ही चीजें हैं, जो उच्चतर अहम के प्रकाश के साथ समीपी संपर्क में आने के लक्षण हैं।

पहला ये है कि हर बार, आपको इसकी स्पष्ट याद रहेगी कि जब आप प्रकाश तक पहुँचें, आप उस हर चीज को, जिसको आप कभी समझना चाह रहे थे, पूरी तरह से समझते हैं।

दूसरा लक्षण ये है कि जब आप वापस आते हैं और परमानन्द से उबरते हैं, आप *किन्हीं विस्तारों को याद रखने के योग्य नहीं होते*। अपने उच्चतर अहम से मिलने के बाद, विस्तारों से उबरना कई दिन, हफ्ते, महीने, वर्ष और विचार एवं गहन सजग अध्ययन का एक पूरा जीवनकाल भी ले सकता है।

ऐसा लगता है कि सभी जानकारियों जानबूझकर आपकी स्मृति से “मिटा दी जाती हैं।” आपको केवल “सारांश” में, मिलने की थोड़ी सी याद है। उदाहरण के लिए – आपको यह तथ्य याद है कि—मात्र आपके सामने हर चीज कोंच की तरह साफ होने के कारण, आपके पास कोई प्रश्न नहीं थे परंतु आपको किन्हीं विशेष उत्तरों की याद नहीं है।

प्रकाश के साथ मेरे अनुभवों के दौरान, इस चुनिन्दा “स्मृति ह्रास” ने मुझे कई वर्षों तक उलझाये रखा। कोई गुरु, मेरे संतोष के अनुसार, इसकी व्याख्या नहीं कर सका। तथापि, चेतनतापूर्वक डिजाइन किए गए इस ब्रह्माण्ड में हर चीज की भांति, इसका कोई कारण होना चाहिए था। एकमात्र स्रोत जिसने मुझे एक तर्कपूर्ण व्याख्या के प्रति निर्देशित किया, संदर्भ [1] था।

जैसा कि हम पहले ही स्थापित कर चुके हैं, हमारे भौतिक जीवन, चीजों को “करने” के लिए, “परीक्षाएँ” या “जांचें” हैं। हमसे, स्मृति से सभी उत्तरों को जानने की सम्भावना नहीं होती – हमें ये सिद्ध करने की आवश्यकता है कि हम अपने आप ही, उत्तरों को पूरी तरह से पा सकते हैं।

हमें ये सिद्ध करने की आवश्यकता है कि जो हमें याद है, उसे हम *समझते* भी हैं, मात्र उसका “अनुसरण” ही नहीं करते। जब आप केवल याद रखते हैं, आप उसे आसानी से भूल भी सकते हैं और उस सूचना को दोबारा प्राप्त करने का कोई तरीका नहीं है। जब आप समझते हैं – आप कभी, वास्तव में, अपनी समझ को अनकिया नहीं कर सकते, क्या आप कर सकते हैं?

समझदारी से – आप सूचना, जिसकी आपको आवश्यकता है, के किसी भाग को—पूरी तरह नये और अप्रत्याशित संदर्भ में भी, दोबारा बना सकते हैं। क्या आप अंतर देखते हैं?

संयोगवश, ये एकदम वैसा ही है जैसा कि सर्वोत्तम शिक्षक, जब अपने विद्यार्थियों की परीक्षा लेते हैं—वे विद्यार्थियों को, अप्रत्याशित समस्याएँ हल करने के लिए देते हुये *समझदारी* का परीक्षण करते हैं। परंतु यदि कोई, चीजों को बिना समझे, केवल याद रखता है, तब शिक्षक बिल्कुल प्रभावित नहीं होते।

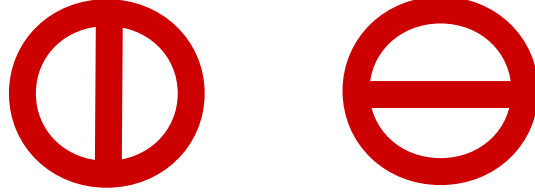
हमारे भौतिक जीवनों में, “करने का” कोई अवसर, ये तय करने के लिए कि हम “सिद्धांत” के रूप में क्या “याद” रखते हैं और हम सत्यतः क्या समझते हैं और स्वायत्तता की स्थिति में क्या लागू कर सकते हैं, हमें एक अद्वितीय जाँच प्रदान करता है।

स्मृति हमेशा अस्थायी होती है, समझ स्थायी होती है। **प्रतिभा का विकास, केवल समझ के स्तर को बढ़ने पर ही होता है।**

संयोगवश, ये प्रत्येक जीवन को, फिर से, एक “ताजा स्मृति” के साथ प्रारंभ करने का प्रमुख कारण है।[1]

“क्रॉस” के साथ अभ्यास

ऊपर बर्णित दोनों अभ्यासों में एकाग्रता की असाधारण क्षमता की आवश्यकता होती है। जब आप ‘दृश्य’ या अपने “उच्चतर अहम् के प्रकाश” को देखते हैं, ये सीखने के लिए बहुत देर हो चुकी होती है कि एकाग्र कैसे हुआ जाये, देखते हैं। ये सबसे अच्छा है, कि हमारे पास, अपने खजाने में कोई अभ्यास हो, जिसका हम कभी भी, कहीं भी, कार्यस्थल पर अपनी खुली आंखों के साथ अभ्यास कर सकें।



इस अभ्यास का लक्ष्य, हर आँख का अलग-अलग उपयोग करना और दोनों अलग-अलग प्रतिबिम्बों से अपने मन में एक संयुक्त प्रतिबिम्ब का सृजन करना सीखना है।

अनेक लोगों के लिए ये अत्यंत कठिन अभ्यास है, परंतु मैंने इसे सबसे अधिक प्रभावशाली पाया है। लगभग सभी अग्रगण्य पुरानी सभ्यताओं में इस अभ्यास के विविध संस्करण मिलते हैं।

अभ्यास शुरू करने के लिए, चित्र को अपने सामने लगभग 1.5 मीटर दूर रखें। अपने हाथ को आगे फैलायें ताकि आपकी उंगलियों में से एक, आपकी आँखों और वृत्तों के बीच में हो। अपना ध्यान, बदलकर, अपनी उंगली के ऊपर सिरे पर ले जायें और वृत्तों को अनदेखा करें। आपको चार वृत्तों को देखने में सक्षम होना चाहिये। तब एकाग्रता के द्वारा, बीच के दो गोलों से, दोनों के बीच में क्रॉस सहित एक गोला, देखने का प्रयास करें। इस अभ्यास का उद्देश्य, क्रॉस को अधिक से अधिक जितने लंबे समय तक, आप कर सकें, बनाये रखना होगा⁶।

अभ्यास अत्यधिक लाभकारी प्रदर्शित किया गया है: क्रॉस को पाँच मिनट बनाये रखना, हमारे शरीर के सामंजस्य में नाटकीय रूप से सुधार करता है और हमारे मन को तेज बनाता है। मैं उन कम्प्यूटर प्रोग्रामरों को जानता हूँ, जो इस अभ्यास का नियमित रूप से उपयोग करते हैं, क्योंकि उन्होंने इसे समस्याओं को हल करने की अपनी क्षमता को महत्वपूर्ण ढंग से बढ़ाते हुए देखा।

शुरू में क्रॉस तैरेगा और अस्थिर दिखाई देगा। अपनी उंगली से अपनी आँखों के बीच की दूरी को बदलते हुए पूर्ण क्रॉस पाने के लिए प्रयोग करें। आप, बरीयता के साथ बिना पलक झपकाये, तीन से पाँच मिनट के बीच लाभ प्राप्त करना प्रारम्भ कर देंगे। कुछ लोगों के अनुसार [1], अंतिम लाभ, लगातार एकाग्रता के लगभग पैंतालीस मिनट बाद प्राप्त होता है। इतने लंबे समय तक एकाग्र होने की क्षमता विकसित करने के लिये, समर्पण और सुनियोजित अभ्यास की आवश्यकता होती है, परंतु अंततः ये आपकी मानसिक, आध्यात्मिक और प्रतिभात्मक योग्यताओं में एक वास्तविक अंतर पैदा करेगा।

मेरे अनुभव में, इसको हर हफ्ते धीमे-धीमे समय बढ़ाते हुए, एक या दो मिनट के एकाग्रता अभ्यास के साथ प्रारंभ करना सबसे अच्छा है। कुशलता के अभाव में अवरोधित, अपेक्षाकृत लंबी की तुलना में, संक्षिप्त और तीव्र एकाग्रता, अधिक अच्छी और अधिक प्रभावी प्रतीत होती है। धीमे-धीमे, अभ्यास के साथ, आपको क्रॉस को बिना अपनी उंगली का प्रयोग किए हुए प्राप्त करने और बनाये रखने में सक्षम होने चाहिये। जब आप क्रॉस को बनाये रखे हों, आप दूसरे दो वृत्तों के प्रति, साथ ही साथ, अपनी परसीमात्मक दृष्टि का उपयोग करते हुए, इसके आसपास की दूसरी चीजों के प्रति भी सचेत होने पर ध्यान केन्द्रित करें।

⁶ इस अभ्यास के लिये अन्योन्य और चलित निर्देश www.thiaoooba.com/seeau.htm पर ऑनलाइन प्राप्त किये जा सकते हैं।

एकाग्रता का अग्रवर्ती स्तर

“क्रॉस” में एक भुजा, सामान्यतः दूसरी के “सामने” दिखती हुई प्रतीत होती है। इसका अर्थ है, आपके प्रतिबिंबों में से एक, जब वे एक-दूसरे पर होते हैं, दूसरे पर वर्चस्व बना रहा होता है।

जहाँ तक संभव हो सके, सामने छिपी हुई भुजा को, एकाग्रता के द्वारा, सामने पाने का प्रयास करें, यहाँ उद्देश्य, दोनों प्रतिबिंबों को संतुलित करना है। तब वर्चस्ववान और दूसरे प्रतिबिंब के बीच, वर्चस्व वाली भुजा को एक निश्चित नियमित समय के अंतराल के बाद बदलते हुए, मांग पर बदलने का प्रयास करें। जब आप अपने नियंत्रण में विश्वस्त हो जाएँ, पूरी तरह से संतुलितक्रॉस को बनाये रखने का प्रयास करें, किसी भी भुजा का, दूसरे के ऊपर वर्चस्व बनाने का प्रयत्न नहीं करें। उतने लंबे समय तक, जितना आप कर सकते हैं, एक पूर्ण संतुलितक्रॉस को बनाये रखने का प्रयास करें।

यदि आपकी एक आँख, दूसरे की तुलना में विशेष रूप से कमजोर है, तो आपको इस अंतर की क्षतिपूर्ति करने के लिए, आकार, रंग अथवा एक या दोनों वृत्तों की दीप्ति को समंजित करना पड़ सकता है।

जब आपको ध्यान को सीखने में मुश्किलें हों — इस अभ्यास को पहले सीखें। ये अभ्यास इतना सघन है कि, इसको कई मिनटों तक करने के बाद, आपका मन, एक गहरे आराम के लिए तैयार होगा। परिणामस्वरूप, आप पायेंगे कि शांत मन की ध्यानावस्था स्वाभाविक रूप से घटित होगी। इससे पहले कि आप इसे अनुभव कर सकें, आप ध्यान कर लेंगे।

जब आप अतिव्यथित, गुस्से या तनाव में हैं, तब भी —क्रॉस पर तीव्र एकाग्रता के साथ प्रारम्भ करना, बहुत तेजी के साथ, गहरे ध्यान में प्रवेश करने का एक उत्कृष्ट तरीका है।

मानसिक आघात का प्रतिसाद देना

इस पृथ्वी की लगभग हर सभ्यता के लोगों ने, बहुत पहले ही खोज लिया था कि भय और भ्रामक गलत सूचनाओं से, व्यक्तिगत प्रतिभाओं को पंगु बनाने और उन्हें ध्वस्त करने के द्वारा, दूसरों को नियंत्रित करना संभव है।

उन्होंने ये भी देखा कि किसी को अभिप्रेरित करने, शिक्षित करने, सूचित करने या अच्छे स्वास्थ्य को प्रोन्नत करने की तुलना में, उसे अशांत करना, डराना और भ्रमित करना बहुत आसान है। ठीक पानी के साथ की भांति— इसे अशुद्धियों से शुद्ध करने या स्वच्छ बनाये रखने की भी तुलना में, इसे प्रदूषित करना बहुत आसान है।

शीघ्र ही, ये महसूस किया गया कि दूसरे सभी दूरानुभूति संदेशों की भांति, ऐसे दूरानुभूति (मानसिक) प्रक्षेप, वास्तव में, किन्हीं व्यक्ति विशेषों के व्यवहार में निश्चित परिवर्तन पाने, उनमें बीमारी पैदा करने अथवा मृत्यु भी पैदा करने के लिए, उनकी ओर निर्देशित किये जा सकते हैं।

उदाहरण के लिए, ये भलीभांति ज्ञात है कि पपुआ, न्यू ग्वायना में कुछ देशी लोग, केवलमात्र एकाग्र करने से ही, अपने शत्रुओं की हानि कर सकते हैं, या अत्यधिक दूरस्थ अपने शत्रुओं को मार भी सकते हैं। तथाकथित 'काला जादू' या 'वूडू' स्वाभाविक दूरानुभूति की क्षमताओं का दुरुपयोग, प्रतिभाओं को डराने और लक्षित व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा को भ्रमित करने के लिए कर रहा है।

स्वतंत्रता के चयन और सजग विकास के मामलों के बारे में मुहफट होने, हर एक के देखने हेतु अपने विचारों को इंटरनेट पर प्रकाशित करने के कारण, मैं अनेक लोगों, जो अनुयायियों के काफी बड़े झुंड को नियंत्रित करते हैं तथा पृथ्वी पर व्यक्ति विशेष की स्वतंत्र इच्छा और चेतनतापूर्ण उन्नति का दमन करते हुए, अपनी शिक्षाओं को आगे बढ़ाते हैं, के द्वारा तीव्र आलोचना का शिकार हुआ हूँ।

एक अवसर पर, डेट्रोइट, संयुक्त राज्य अमेरिका, के पादरियों के नेतृत्व में, (2 मई 1997 को, पोन्टियक सिल्वरडोम स्टेडियम में डेट्रोइट, एम.आई., यू.एस.ए. में, "प्रतिज्ञा पालन करने वालों की संगोष्ठी" में) मस्तिष्क की सफाई करने में बहुल पी-एच. डी. किए हुए 70000 धर्मांध लोगों ने, मेरे साथ सामूहिक विनती की।

किसी मनोवैज्ञानिक आक्रमण का मुकाबला कैसे किया जाए? चूंकि हम असीमित संभावनाओं वाली वैयक्तिक प्रतिभाएं हैं, हमारे पास, अपनी स्वायत्तता को बचाने, और अपनी व्यक्तिशः सचेतन उन्नति के लिए आवश्यक हर चीज, पहले से ही, है।

अनुभव करने वाली सबसे अधिक महत्वपूर्ण चीज ये है कि, कोई भी क्षति केवल तभी की जा सकती है, जब क्षति कराने और/या प्रभावित होने के लिए, हम खुद ही, अपनी मुक्त इच्छा से, चेतनतापूर्वक सहमत हो जायें।

ब्रह्माण्ड में कोई ताकत नहीं है, जो आपकी खुद की चिंतन की स्वतंत्रता को आप से हटा सके। महान प्रतिभा भी नहीं। इसे केवल आप स्वयं ही समर्पित कर सकते हैं।

तथाकथित 'मानसिक आक्रमण,' सामान्यतः किसी की चेतना और मुक्त इच्छा का अतिक्रमण करने के उद्देश्य से, किसी विनय या आदेश को निहित करता है। यदि 'सफल' हुए, (अर्थात् प्राप्तकर्ता द्वारा, इसे स्वीकार कर लिया गया और इसका अनुशीलन कर लिया गया) तो चेतना का ऐसा कोई विनाश, 'लक्षित' व्यक्ति के स्वास्थ्य और ठीक-ठाक रहने को गंभीरता से प्रभावित कर सकता है।

चूंकि सभी उन्नत (आत्मज्ञान प्राप्त) व्यक्ति, ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के प्रति जागरूक होते हैं [1], मानसिक आक्रमण, केवल अत्यंत निम्नस्तरीय प्रतिभाओं (की ओर) से आ सकते हैं। इस कारण से, सजगतापूर्वक और एक

व्यक्ति के खिलाफ एक साथ इकट्ठे हुए 70,000 लोगों का सामूहिक प्रयास भी, अत्यंत सीमित चेतना-बिक्षोभों को उत्पन्न करता है।

स्वयं का बचाव करने की सर्वोत्तम रणनीति है, अपनी स्वयं की प्रतिभा की सुविधाओं का अधिकतम सम्भव उपयोग करना और ये याद रखना कि इसमें असीमित संभावनाएँ हैं। अपनी प्रतिभा के उपयोग हेतु सर्वोत्कृष्ट हालातों को पैदा करने के लिये— आपको, जितना शीघ्र हो सके, उतनी शीघ्रता से, 'मन की शांति' को फिर से प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। नियमित ध्यान की अवधि में प्राप्त किये गये कौशल, सहज ही अमूल्य हो जाते हैं।

यदि आप किसी कठिन परिस्थिति की अपेक्षा रखते हैं — आप इसका सामना करने के लिए, अपनी प्रतिभा का उपयोग पहले से ही एक प्रतिभाशाली 'योजना' बनाने के लिए कर सकते हैं — क्या योजना?

जानने के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण चीज ये है कि, ऐसे तथाकथित 'मानसिक आक्रमण' के दौरान, वास्तव में, सभी सम्मिलित लोगों के मन प्रत्यक्ष सम्प्रेषण में होते हैं।

आप ऐसे सम्प्रेषण का लाभ, अपने खुद के संदेश को वापस प्रेषित करने के लिये ले सकते हैं।

यदि आप अपने डर का सम्प्रेषण करें, दूसरी तरफ के लोग, आपके ऊपर 'शक्ति' अनुभव करेंगे और इसके सम्बंध में उत्तेजित भी हो सकते हैं। यदि आप अपने मन की स्पष्टता को पुनः स्थापित कर सकते हैं और उसे बनाये रख सकते हैं, तो वे किसी प्रकार की प्रतिपुष्टि अनुभव नहीं करेंगे और शक्तिहीन अनुभव करेंगे।

कृपया, किसी चीज के वापस सम्प्रेषण का प्रयास करने से पहले, **सुनिश्चित करें** कि आप मन की शांति अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं।

आपको वापस क्या सम्प्रेषित करना चाहिए? फिर दुबारा भी, अतिक्रमण की प्रकृति, आपके व्यक्तित्व और आपके जवाब के उद्देश्य, के ऊपर निर्भर करते हुए, आपके पास कोई उपयुक्त निर्णय लेने के लिए चयन की स्वतंत्रता है। यहाँ थोड़े से ही विकल्प हैं, परंतु, हमेशा की तरह, ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के साथ पूर्ण सामंजस्य में कार्य करना, सबसे अच्छा होता है। क्या आपको याद है कि वह क्या था? अपनी प्रतिभा को विकसित करना और उच्चतम संभव भावनाओं, जिनकी आप कल्पना कर सकते हैं, को अनुभव करना सीखना।

इस बजह से, प्रेम का संदेश भेजना, सर्वाधिक बुद्धिमतापूर्ण विकल्प है। मुझे इसे आपके लिये सिद्ध करने दें।

अधिकांश दूरानुभूतिपूर्ण अतिक्रमण करने वाले, निम्न प्रतिभा के लोग होते हैं, जिन्होंने वास्तव में, सभी गलतियों, जो उन्होंने की हैं, को अनदेखा करते हुए, *असल* में प्यार किया जाना कभी अनुभव ही नहीं किया, तथापि, ब्रह्माण्ड में हर जीवित प्राणी की भांति, वे भावनाओं को दूरानुभूति से भेजने और प्राप्त करने में पर्याप्त रूप से संवेदनशील होते हैं। जब वे सहसा ही, प्रेम किया जाना अनुभव करते हैं, उनकी संवेदनाएँ इतनी सुखद होती हैं, कि वे उन्हें पसंद करते हैं। परिणामस्वरूप, जब वे आपके बारे में सोचते हैं, वे इसे पसंद करते हैं। जब वे आपके बारे में सोचना चाहते हैं, वास्तव में, वे आपको *पसंद करना शुरू कर देते* हैं। परंतु इसका अर्थ है कि आपका "प्रेम-संदेश" आपके 'शत्रु' को किसी ऐसे में बदल देता है, जो वास्तव में, आपको पसंद करता है।

इसलिए सभी संभव प्रतिसादों में से प्रेम-संदेश का (प्रतिसाद) सर्वाधिक शक्तिशाली होता है, क्योंकि, वास्तव में, ये अपने आसपास के लोगों को बदल सकता है।

ये ठीक वही है, जो पुरातनकाल में, अनेक उन्नत व्यक्तिगत प्रतिभाओं ने, बहुत बड़ी संख्या में अपने

‘शत्रुओं’ के हृदयों को पिघलाने में किया। शुद्धरूप में, ये वही है जिसका उनका अर्थ ये था, जब उन्होंने लोगों को “अपने शत्रुओं को प्यार करना” सिखाया [1], [3], [5]।

यद्यपि प्रेम का संदेश, दूर-दूर तक, सबसे अच्छा प्रतिसाद है, जब आप पर आक्रमण किया जाता है, ये उठने वाला सबसे कठिन संदेश होता है। वास्तव में, किसी को, जो आपको चोट पहुँचाने की कोशिश करता है, प्रेम करने के लिए, महान आत्म-अनुशासन और आध्यात्मिक परिपक्वता की आवश्यकता होती है।

अपने प्रेम-संदेश को भेजने का सर्वाधिक दक्ष तरीका, अपने उच्चतर अहम् के सहयोग के साथ होता है। क्यों? क्योंकि, आपका उच्चतर अहम्, आपके संदेश को लगभग असीमित परास देते हुए, दूसरे सभी अतिक्रमणकारियों के उच्चतर अहम् के साथ प्रत्यक्ष सम्बंध रखता है। मुख्य बात है, अपने उच्चतर अहम् से सहायता के लिए कहना, और जब ये आपको प्राप्त हो जाये, तो उसके प्रति आभार प्रदर्शित करना।

आप केवल ये “शब्द” कह या सोच नहीं सकते। आपका आशय, वास्तव में, वही होना चाहिये, जिस अर्थ के लिए ये सोचे या कहे जाते हैं। और जब ये ऐसा करते हैं तो क्या होता है?

अपने प्रकरण में, मैं आक्रमण के लगभग समय को, पहले से ही जानता था, इसलिए मैंने, ‘क्रास’ के ऊपर ध्यान करते हुए और एकाग्र होते हुए, पल भर के लिये प्रतीक्षा करने का निर्णय लिया। मैंने आक्रमण के समय को, अपनी छाती में संक्षिप्त दुःख की अनुभूति के रूप में पहचान लिया। तब मैंने अपनी सबसे अच्छी भावनाओं, जिनकी मैं उस समय कल्पना कर सका, के ऊपर केन्द्रित किया और मैंने अपने उच्चतर अहम् से, उन सभी के प्रति जो मुझे चोट पहुँचाने की कोशिश कर रहे थे, अपने प्रेम के संदेश को भेजने में, अपनी सहायता करने के लिए कहा।

थोड़े समय के बाद, आवश्यक रूप से सफेद दीवारों वाला और कोई फर्नीचर नहीं वाला पूरा कमरा, जिसमें मैं था, मेरी आंखों के सामने गुलाबी हो गया। मुझे पारदर्शी गुलाबी बादल, जो हर दिशा में मुझे घेरे हुए था, के अंदर होने का अहसास हुआ।

मैंने अपनी रीढ़ के साथ-साथ ऊर्जा की एक हिलोर, अपने उच्चतर अहम् की सक्रियता के परिचित बोध की अनुभूति की। मैंने अनुभव किया कि मुझे नियंत्रित करने का प्रयास, 5 मिनट या कुछ ऐसे ही समय बाद दुहराया गया था, परंतु इस बार, अपने प्रेम के संदेश को दुबारा भेजने से पहले, मैंने किसी असुविधा को महसूस नहीं किया।

बाद में, मैंने अपने उच्चतर स्वयं को, अपने संगीत को, उन सभी लोगों के लिए, जो किसी भी कारण से मेरे बारे में सोच रहे थे, प्रसारित करने में सहायता करने की कहते हुए, अपनी गिटार बजाई। किसी भी समय में, मैं धमकाया हुआ नहीं लगा। इसके विपरीत, इस अनुभव के बाद, मैंने अत्यधिक ऊर्जापूर्ण और अभिप्रेरित महसूस किया। मेरे लिए, ये एक स्मरणीय और महान पाठ था।

प्रगति को नापना

हम प्रगति को, पृथ्वी पर, कैसे नापते हैं?
हम सफलता को कैसे नापते हैं?

क्या हम प्रगति और सफलता के पैमाने के रूप में धन का प्रयोग नहीं करते?

आप कितने लोगों को जानते हैं, जो अपने जीवन को पैसा बनाने के इर्द-गिर्द केन्द्रित करते हैं? पृथ्वी पर, हम में से इतने, धन के प्रति आसक्त क्यों हैं?

क्या ये विश्वास है कि सांसारिक वस्तुओं को इकट्ठा करना, हमारे भविष्य के लिए 'सुरक्षा' की गारंटी उपलब्ध कराता है? कैसी सुरक्षा? कैसा भविष्य?

सिकंदर महान ने अपने समय की पूरी दुनियाँ को जीत लिया। जो कुछ सांसारिक चीज वह चाहता था, वह हर चीज उसके पास थी। जब वह मर रहा था, उसने अपने आसपास के हरएक को अपने पास बुलाया और कहा: "अब मैं जहाँ जा रहा हूँ, मैं अपनी चीजों में से किसी को भी वहाँ नहीं ले जा सकता..." ये उसके अंतिम शब्द थे। अपने जीवन के केवल अंतिम क्षण में, उसने सांसारिक वस्तुओं को जमा करने की वेवकूफी को समझा।

हम पहले ही प्रदर्शित कर चुके हैं, कि हमारी व्यक्तिशः प्रतिभा के उन्नयन की कोई सीमा नहीं हो सकती। जब हम पैदा हुए थे, उससे पहले भी, प्रतिभावान अस्तित्व में था, और जब ये वर्तमान भौतिक शरीर काम करना बंद कर देगा, उसके बाद तक भी, ये अस्तित्व में रहेगा। चूंकि हमारी व्यक्तिशः प्रतिभाओं को अनंतकाल तक, सतत अस्तित्व में रहना होता है, हम विभिन्न भौतिक शरीरों में, असीम जीवनकालों में जीना चुन सकते हैं। हमें चयन की स्वतंत्रता है।

सांसारिक वस्तुओं के साथ मोह को बढ़ाने के द्वारा, हम सजगरूप से, अपनी चेतना को सीमित करते हैं, और इसलिये अपनी पसंदों को – दूसरे विकल्पों को अनर्गल के रूप में असम्मानित करते हुए, सीमित कर लेते हैं। इसको महसूस किए बिना भी, हम अपनी खुद की चेतना और प्रतिभा में, स्वयं ही, गंभीर सीमाओं की योजना बना लेते हैं।

प्रारंभ से ही, प्रकृति और सांसारिक यथार्थ का केवल एक उद्देश्य है— **अपनी प्रतिभा के विकास में हमारी सहायता करना**। जब हमारी व्यक्तिगत चेतना पर्याप्त रूप से उन्नत हो, हम उच्चतम भावनाओं, उदाहरण के लिए प्रेम, को केवल अनुभव कर सकते हैं, और अपने चेतन अस्तित्व का वास्तविक आनंद ले सकते हैं।

क्या आप सोचते हैं कि किसी व्यक्तिशः प्रतिभा के विकास की स्थिति को नापने के लिए, धन को उपयोग में लाया जा सकता है? क्या धन, प्रतिभा को नापने का एक अच्छा पैमाना है?

क्या बुद्धि और प्रतिभा पैसे से खरीदी जा सकती है? क्या प्रेम को पैसे से खरीदा जा सकता है? (कुछ लोग कहते हैं, हाँ खरीदा जा सकता है और कि ये उसकी राशि का मामला है। परंतु क्या ये वास्तविक प्रेम है? क्या वे वास्तव में जानते हैं कि, प्रेम क्या है?)

क्या धन, ब्रह्माण्ड और प्रकृति की समझ को अंशों में नापने का एक अच्छा पैमाना है?

कुछ लोग, प्रकृति के नुकसान को, धन की उस मात्रा के द्वारा, जो इसको 'सुधारने' या वातावरण को 'साफ' करने में लगेगा, नापने का प्रयास करते हैं, परंतु क्या ये एक अच्छा पैमाना है? क्या हम वास्तव में समझते हैं कि प्रकृति, जैसी ये है, वैसी ही क्यों डिजाइन की जाती है?

ये स्पष्ट है कि प्रतिभा के अधिक्षेत्र में, हम केवल वही प्राप्त कर सकते हैं, जिसे प्राप्त करने का लक्ष्य हम रखते हैं। उदाहरण के लिए, भाषाएँ पढ़ते हुए, आप इंजीनियर बनने की आशा नहीं कर सकते।

सफलता के विभिन्न पैमाने चुनने के द्वारा, प्रभावीरूप से, हम पूर्णतः भिन्न परिणामों को प्राप्त करने का

लक्ष्य रखते हैं।

विशेष रूप से, व्यक्तिशः प्रतिभा के अधिकतम विकास का लक्ष्य रखना और अधिकतम मात्रा में धन बनाने का लक्ष्य रखना, दोनों भिन्न अंतिम परिणाम की ओर अगुआई करती हुई, एकदम भिन्न दिशाएँ हैं।

क्या आप इन दोनों रवैयों के बीच के अंतर को देख सकते हैं?

अपनी प्रतिभा के विकास का लक्ष्य रखना, हमारी उन्नति के किसी भी चरण में, नये क्षितिज खोल देता है। जितना अधिक हम समझते हैं, अपनी और अधिक समझने की क्षमताओं को, हम, उतना ही अधिक बढ़ा लेते हैं। जो हम सीख सकते हैं, और इस ब्रह्माण्ड में अंततः हम जो हो सकते हैं, उसकी कोई सीमा नहीं है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि हमारे चयन, जो बड़े रूप से उस पर निर्भर करते हैं, जिसकी हम कल्पना करते हैं और जिसको समझते हैं, हमारी प्रगति के किसी भी चरण में विस्तारित हो जाते हैं। हमारे पास, हर समय, चयन की अबाध स्वतंत्रता होती है। हम जितने अधिक प्रतिभाशाली होते जाते हैं, अपने चेतन अस्तित्व से, हम उतनी ही अधिक संतुष्टि और अधिक भावनाएँ अनुभव कर सकते हैं। [1]

हम, पृथ्वी पर, 'प्रगति' और 'सफलता' के पैमाने के रूप में, धन का उपयोग करने के पश्च-परिणामों की जांच करें। विशेषकर, हम धन की अधिकतम मात्रा कमाने के रवैये के पश्च-परिणामों की परीक्षा करें।

जब आप बड़े सांसारिक लाभ कमाने की विधि का (धन के रूप में बताये गये हों या नहीं) विश्लेषण करते हैं— ये केवल तभी होता है, जब कोई अनेक व्यक्तित्वों से लाभ लेता है।

व्यापारी उत्पादों को खरीदकर, और उन्हें ऊँचे दामों पर बेच कर, 'मुनाफा' कमाते हैं। मुनाफे द्वारा अभिप्रेरित व्यापारी, आपूर्तिकारकों से, उनकी कीमतें नीची कराने के लिए, जबरदस्ती करने का लक्ष्य रखते हैं और ग्राहकों को—किन्हीं भी साधनों द्वारा, ऊँची कीमत चुकाने के लिए मजबूर करते हैं।

हर एक को अपने संचालन, एकाधिकरण, आपूर्तियों आदि की वास्तविक लागत के सम्बंध में, गलत सूचना प्रदान करने के द्वारा, व्यापारी—आपूर्तिकर्ताओं तथा ग्राहकों—दोनों से ही फायदा उठाते हैं।

सांसारिक लाभ के द्वारा अभिप्रेरित, किसी भी दूसरी गतिविधि में, लगभग ऐसी ही प्रक्रियायें घटित होती हैं। लोगों से फायदा उठाया जाता है।

पैसा बनाने की कुछ विधियाँ, प्रगट और बेशर्म धोखेबाजी तथा बेईमानी पर आधारित होती हैं। उदाहरण के लिए, इस पृथ्वी पर सबसे अधिक धनी धार्मिक सम्प्रदायों ने, लोगों को ये समझाने के द्वारा, कि मृत्यु के बाद, 'स्वर्ग में स्थान पाने के लिए,' अपनी चीजों को उन्हें दे दिया जाय, अपनी संपदा को प्राप्त किया। ये कहना अनावश्यक है कि, ऐसे धर्म-सम्प्रदाय—केवल अपने मुनाफे को अधिकतम बनाने के लिए, लोगों को ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के बारे में, अधिकतम सम्भव सीमा तक, भ्रमित, अनजान, और गलत सूचना प्राप्त, बनाये रखने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। क्या आप महसूस करते हैं कि कुछ धर्म-सम्प्रदाय, आज भी, हर एक को, खुले आम, 'भगवान से डरना' पढ़ाते हैं, और वास्तव में, लोग उन पर विश्वास कर लेते हैं?

आज (1999 ईसवी) हमारे पास, 'दूसरों से लाभ उठाने वाले,' कुछ समय के लिए अस्तित्व में होने वाले ऐसे किसी तंत्र के परिणाम का निरीक्षण करने का अद्वितीय अवसर है। लोग, सांसारिक लाभ के तंत्र में इस हद तक उलझ चुके हैं कि वे दूसरे किन्हीं विकल्पों की कल्पना भी नहीं कर सकते। अंततः धनी, और धनी हो गये हैं और गरीब, और अधिक गरीब हो गये हैं।

अधिकतम मुनाफे की विवेकहीन दौड़ में, कुछ व्यक्तियों की 'जीत हुई'— वे सर्वाधिक धनी हो गये। अपने बैंकों और कंपनियों के नाम के पीछे छिपे हुए ये व्यक्ति विशेष, और कंपनियाँ, प्रभावी रूप से, पृथ्वी के पूरे 'तंत्र'

को नियंत्रित करती हैं। अपनी संपदा के माध्यम से, प्रभावी रूप से, वे पृथ्वी पर, लगभग हर गतिविधि, जिसे वे चुनते हैं, को नियंत्रित करते हैं—सहज ही, क्योंकि लोग, लगभग किसी भी चीज को, पैसे के लिए करने के लिये अनुकूलित हो गये हैं।

सरकारों और वैज्ञानिक समाज सहित लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या, प्रभावीरूप से धन और वैश्विक अर्थतंत्र की 'कठपुतलियाँ' हैं।

क्या हम 'धन' को सफलता के पैमाने के रूप में ग्रहण करने के परिणामों को सारांशित कर सकते हैं?

व्यक्तिशः प्रतिभा के विकास को क्या होता है? क्या इसको निरुत्साहित नहीं किया जाता और उपहास भी नहीं किया जाता? **क्या इस भ्रमजाल से कि उन्नति, धन कमाने के द्वारा प्राप्त की जाती है, मानवीय प्रतिभा प्रदूषित नहीं हुई है?**

तब चयन की स्वतंत्रता के बारे में क्या? क्या इसके साथ समझौता नहीं किया जाता, जब लोग पूरी तरह से आर्थिक और पार्थिव तंत्र, जो उन पर थोपा जाता है, के ऊपर निर्भर हो जाते हैं?

ऐसे किसी तंत्र में मानवीय भावनाओं के बारे में क्या? क्या आप अपनी भावनाओं की परीक्षा कर सकते हैं? क्या कोई तंत्र, उन धनाढ्यों के लिए ईर्ष्या, और उन गरीबों के लिये निंदा अभिप्रेरित नहीं करता? क्या ये भावनायें, काल्पनिक बहस और मतभेदों की ओर अगुआई नहीं करती? क्या आप नहीं देख सकते?

अब हम परीक्षा करें, ऐसे 'तंत्र' को कौन नियंत्रित करता है?

ये सर्वाधिक धनाढ्य व्यक्ति कौन हैं, जो, जितने लंबे समय तक ये तंत्र बना रहता है, उसमें से, अधिक, और अधिक शक्ति पाते हैं?

क्या वे इस पृथ्वी पर, सर्वाधिक अविश्वसनीय और निर्दयी लोग नहीं हैं? क्या वे इस संपूर्ण ग्रह पर, नीचों से नीच नहीं हैं? क्या वे पाखंड और धोखेबाजी के सिद्ध विशेषज्ञ नहीं हैं? क्या वे, केवल अपने खुद के लाभ के लिए, 'शांति स्थापित करने वालों' के रूप में नाटक करते हुए, मतभेदों और युद्धों को अभिप्रेरित करने और बढ़ाने में संकोच करते हैं?

जब हम धन को 'सफलता' के पैमाने के रूप में अपना लेते हैं – तो हम एक पूर्णतः अद्वितीय प्रणाली, की सृष्टि करते हैं, जिसमें ग्रह के सबसे खराब लोग, अंततः, शिखर पर आ जाते हैं और दूसरों का नेतृत्व करना प्रारंभ कर देते हैं। क्या ये मोहक नहीं हैं?

इसप्रकार, व्यक्तिशः प्रतिभा के विकास के दृष्टिकोण से, भौतिकवादी रवैया एक नितान्त विशिष्ट स्थिति की ओर ले जाता है।

भौतिकवादी समाज में, व्यक्तिशः प्रतिभाएँ, अधिकांश औसत और आदिम प्रकृति के मानव मनो, जो अस्तित्व में हैं, के द्वारा, अपनी स्वायत्तता के अतिक्रमण और दमन के व्यवस्थित प्रयासों को अनुभव करती हैं।

इसप्रकार, धन और इससे सम्बद्ध भौतिकवादी रवैया, व्यक्तिशः प्रतिभा के लिये सर्वाधिक गंभीर खतरों में से एक है, जो उनके उन्नयन को गम्भीर रूप से अपंग बना देता है।

तथापि, ऐसी स्थिति, इन व्यक्तिशः प्रतिभाओं के लिए, जिनकी आंखें हैं और जो देखते हैं..., एक मोहक सीख भी बन जाती है।

क्या आपको याद है कि सीमांत विभेदनों को अनुभव करना, हमारी समझ को कैसे तेजी से बढ़ा सकता है? ये सब चयन की स्वतंत्रता के सम्बंध में है, क्या ऐसा नहीं है?

बच्चों को शिक्षित करना

व्यक्तिशः प्रतिभा के विकास के लिये सर्वोत्कृष्ट अवस्थाएँ पैदा करना, शिक्षातंत्र का प्रमुख फोकस होना चाहिए, क्या आप इससे सहमत हैं?

दुर्भाग्यवश, पृथ्वी की शिक्षा प्रणाली, इसके ठीक विपरीत दिखाई देती है।

यथार्थ में – चाहे विद्यार्थी उत्कृष्ट बनने का प्रयास करें, पार्टी, फुटबाल खेलें या सुन्दर युवती के आसपास घूमें – वे उत्तीर्ण हो जाते हैं। अंको में अंतर न्यूनतम होता है। स्कूल, 'पास होने की दर' पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, क्योंकि, ये उनके आर्थिक जीवन की व्यावहारिकता से सीधा संबंधित होता है।

तंत्र, अहम के विकास के लिये, किसी भी, कैसे भी, प्रोत्साहन का उन्मूलन करता है, क्योंकि वहाँ व्यक्तिशः वैयक्तिकता की कोई मान्यता नहीं है, प्रतिभा की कोई मान्यता नहीं है और बुद्धि की कोई मान्यता नहीं है।

जो कोई भी, प्रश्न पूछने की कोशिश करता है या प्रतिभा का कोई चिन्ह प्रदर्शित करने का प्रयत्न करता है – भले ही ये विद्यार्थी हो या शिक्षक, उसका मजाक उड़ाया जाता है या उसे दंडित भी किया जाता है।

क्या आपको आश्चर्यचकित हैं कि इतने सारे बच्चे परेशान हैं?

“यथार्थ केवल उनके लिये तंग करने वाला होता है, जो इस सम्बंध में कुछ नहीं जानते। [17]

क्या हम अपने बच्चों को ब्रह्माण्ड की यथार्थता के बारे में काफी पढ़ाते हैं? हम इसका प्रारंभ भी नहीं करते।

एक दिन एक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक ने, बच्चे को वह दिया, जिसे मैंने स्कूल में विशेष प्रकार की तमाम गतिविधियों की 'मूर्खता' के साथ हुए अवसाद और निराशा को व्यक्त करने का 'दंड' समझा। शिक्षक ने बच्चे से सौ वाक्य लिखने की प्रार्थना की। बच्चे ने 'सौ वाक्य लिखें' और दस सेकेण्ड में कहा "मैंने पूरा कर लिया!!!," क्या आप सोचते हैं कि इस बच्चे को प्रतिभा के लिए इनाम दिया गया?

आस्ट्रेलिया के एक बड़े विश्वविद्यालय में, इंजीनियरिंग के शिक्षक के रूप में, एक शिक्षाशास्त्री होने के नाते, मुझे एक वैकल्पिक विषय, "लेजर मापन," को **प्रथम वर्ष** के विद्यार्थियों को पढ़ाने का अवसर मिला। जब मैंने इस विषय को वर्ष के प्रथम सत्र में रखा – विद्यार्थियों की दिलचस्पी असाधारण थी और मैं काफी आगे की चीजों को प्रस्तुत कर सका। अनेक विद्यार्थियों की रिपोर्टें और उनके लेक्चर नोट्स, 'अंतिम वर्ष' के जमा किए गए से भी बढ़िया थे। जब मैंने ठीक यही विषय, उसी वर्ष के दूसरे सेमेस्टर में रखा – कोई भी, किसी भी चीज में रुचि नहीं रखता था। मैं परेशान हो गया, क्योंकि यही प्रतिरूप हर साल दुहराया गया। पहले सत्र के बाद, विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा, पूरी तरह से क्यों गायब हो गयी? एक दिन, हमारे कुछ अच्छे स्नातकों में से एक ने स्पष्ट किया:

“जब आप हाईस्कूल से विश्वविद्यालय में आते हैं – तो आपके पास बहुत सारी उम्मीदें होती हैं। दिलचस्प विषय, वास्तव में, आपके ध्यान और कल्पना को आकर्षित करते हैं। तब आप सेमेस्टर के अंत में परिणामों को देखते हैं – और अवसादग्रस्त हो जाते हैं। वे, जो चुस्त और अध्ययनशील हैं और वे, जो सेमेस्टर में सुन्दरी युवतियों के आसपास घूमते हैं – बहुत समान अंक पाते हैं, हरेक पास हो गया... इसलिए अगले सेमिस्टर में आप अब नहीं पढ़ते – जबतक कि आप अपनी हंसाई न कराना चाहें...”

क्या आप देखते हैं कि तंत्र, किस प्रकार से, आत्मविकास की अभिप्रेरणा का उन्मूलन करता है, और लोक के पूर्ण सदस्यों को वरीयतायें प्रदान करता है? क्या आप इस यांत्रिकी को समझते हैं?

विज्ञान और तकनीकी

इस पृथ्वी पर, विज्ञान और तकनीकी, अधिकतर पूरी तरह से अर्थ और आर्थिकतंत्र के द्वारा नियंत्रित की जाती है। धन नहीं – शोधकार्य नहीं। 'ज्ञान' को 'संपदा' समझा जाता है। वैज्ञानिक, लगभग पूरी तरह से, भौतिक यथार्थ पर केन्द्रित दिखाई देते हैं और उनकी 'सफलता' और गर्व का एक प्रमुख पैमाना, अंतिम भौतिक लाभ या व्यय बचा रह जाता है।

वैज्ञानिक और इंजीनियर, इस पर ध्यान भी नहीं देते कि मात्र किसी एकल परमाणु का अध्ययन प्रारंभ करने के लिए, कितनी प्रतिभा और कितने प्रबुद्ध लगते हैं। अब वे, लगभग एक शताब्दी से, परमाणुओं को तोड़ते रहे हैं – और वास्तव में, अभी तक कोई आदमी नहीं जानता कि इनके अंदर क्या है, और किसी परमाणु को कैसे बनाया जाए। प्रतिभा और बुद्धि के लिए, सार्वभौमिक आवश्यकता, उनकी नाकों के ठीक सामने है – और वे अभी भी, उसे चूक जाते हैं।

चूंकि आज की औसत दर्जे की स्थापना, पूरी तरह से ऐसी किसी आवश्यकता को अनदेखा करती है – तकनीकी का उपयोग, प्राथमिक रूप से, व्यक्तिशः प्रतिभाओं के विकास के विरुद्ध और प्रकृति के विरुद्ध किया जाता है।

संभावना से भरा हर महत्वपूर्ण आविष्कार, एक हथियार या गलत सूचना प्रदान करने वाले औजार की ओर मुड़ जाता है। तकनीकी का उपयोग, लोगों को डराने में, और अपंगु व्यक्तिशः प्रतिभाओं को नियंत्रण में बनाये रखने में किया जाता है।

क्या होता है यदि, तकनीकी का उपयोग, पर्याप्त बुद्धि और आध्यात्मिक परिपक्वता रहित लोगों के द्वारा किया जाता है।

क्या होगा यदि हम पांच वर्ष के किसी बच्चे को एक जहाज उड़ाने या हाईवे पर कार चलाने दें?

क्या इसका सम्भावित परिणाम, अक्सर एक बड़ी आपदा नहीं होगा?

इस कारण से, "बिना आध्यात्मिक ज्ञान वाली भौतिक तकनीकी, हमको, पृथ्वी पर, वैश्विक महान आपदा की ओर ले जा रही है।"

इस महा आपदा से बचने के लिए – हमें समझने की आवश्यकता है, कि हम **क्या** कर रहे हैं, और **क्यों**।

क्या आप किसी के द्वारा नेतृत्व किया जाना पसंद करेंगे, जो बिल्कुल नहीं जानता कि कहाँ जाना है और किसके लिए?

क्या आप आश्वस्त हैं कि उनके पास, जो आपको सलाह देने का प्रयास करते हैं, कोई संकेत है?

संपूर्ण पदार्थीय ब्रह्माण्ड, एकल शून्य के विक्षोभ से अधिक नहीं दिखाई देता। विक्षोभ, जो इतना बड़ा था और इतनी अच्छी तरह से डिजाइन किया गया था कि कंपन, जो उसके बाद में हुए, अभी भी, बहुत तेज और तीव्र हैं।

स्थाई कंपनों में से कुछ, या 'अप्रगामी तरंगें,' हमें परमाणु के रूप में दिखाई देते हैं। ये परमाणु इतने विद्वितापूर्ण तरीके से डिजाइन किये गये हैं कि जीवित प्राणी भी, उनसे बने हुए हो सकते हैं।

ब्रह्माण्ड में हर भौतिक चीज एक कंपन है। दूर भविष्य में किसी दिन, ये सभी कंपन रुक सकते हैं।
हमारे भौतिक अस्तित्व का एकमात्र उद्देश्य है, हमारी अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा का विकास करना। हर भौतिक चीज, अस्थाई है।

क्या पार्थिव तकनीकी को, अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा के विकास की सहायता के लिए, उपयोग में नहीं लाया जाना चाहिए?

“मनुष्य, आध्यात्मिकता के विकास के एकमात्र उद्देश्य के लिए, भौतिक रूप से अस्तित्व में है...”, [1]

दुर्भाग्यवश हमारे 'विज्ञान और तकनीकी' ने सैकड़ों साल के विकास के बाद, गर्व और प्राधिकार के भाव से अधिक, कुछ भी विकसित नहीं किया है।

पृथ्वी पर तकनीकी के विकास के प्राथमिक उद्देश्य क्या हैं? क्या ये धन नहीं कमा रही है? समय नहीं बचा रही है? लोगों को उपकरणों के ऊपर निर्भर नहीं बना रही है? दूसरे लोगों के ऊपर प्राधिकार, शक्ति और लाभ नहीं प्राप्त करा रही है?

क्या आप अनुभव करते हैं कि ये प्रयोजन, इस महान योजना के संदर्भ में कितने अनर्गल हैं? क्या आप अनुभव करते हैं कि इन प्रयोजनों के पीछे चलने वाली क्रियाएँ, सीधे-सीधे ब्रह्माण्ड के प्रयोजन का हनन करती हैं?

क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आज पृथ्वी पर, तकनीकी के सर्वाधिक दिखने वाले परिणाम क्या हैं?

क्या ये प्रकृति का त्वरित विनाश नहीं है? क्या ये हमारे पारिस्थिति तंत्रों का प्रदूषण और उनके निवासियों का पूरी तरह उन्मूलन नहीं है? क्या ये अहंकार नहीं है कि “हम कुछ भी कर सकते हैं, यदि हम इसका भुगतान कर सकें?”

क्या ये 'परिणाम' हमारे स्मारकों की अनदेखी और ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के प्रति अनादर के प्रमाण नहीं हैं?

क्या आप महसूस करते हैं कि नितांत उग्र मौसम के नमूने, जैसे कि 'मारक बवंडर,' अत्यधिक तूफान, झंझावात, बाढ़ों और टोरनाडो, जो हर कुछ वर्षों में हुआ करते थे, अब लगभग हर सप्ताह में होते हैं? क्या आप महसूस करते हैं कि, ग्रहीय पैमाने पर, ये त्वरित वातावरण प्रदूषण का एक प्रत्यक्ष परिणाम है?

अच्छे ग्रह ढूँढ पाना मुश्किल है, क्या वे नहीं हैं?

आप, तकनीकी की प्रगट प्राप्तियों में से कुछ, जैसे कि स्वचालन और संगणकों के द्वारा प्रभावित बने रह सकते हैं।

क्या आप महसूस करते हैं कि पुश-बटनों की सुविधा पर उत्तरोत्तर निर्भर होना, वास्तव में, आपकी चिंतन की सक्षमता को अपंग नहीं कर देंगे? क्या आप अनुभव करते हैं कि 'उपयोक्ता नियमावली' और पुश-बटनों के साथ अपनी प्रतिभा की खटर-पटर के द्वारा, आप इस ब्रह्माण्ड के एक जागरूक नागरिक होने के बजाय, किसी तंत्र में एक रोबोट बन सकते हैं?

यद्यपि अनेक वैज्ञानिक आज अपनी स्वयं की प्रतिभा के विकास पर ध्यान केन्द्रित करते हुए लगते हैं, वे पूरी तरह से ब्रह्माण्ड के उद्देश्य और डिजाइन के प्रमुख सिद्धांतों को को भूल जाते हैं। वे विशेषज्ञता के अत्यंत छोटे संकरे क्षेत्रों को बनाये रखते हैं और विशेष तौर से कोई सराहना नहीं करते कि उनका कार्य, ब्रह्माण्ड की महान योजना से कैसे सम्बंधित है।

इस भव्य योजना के अस्तित्व की *संभावना को स्वीकार* करने की पर्याप्त कल्पना, बहुत ही थोड़े व्यक्तियों के पास है। क्या आप महसूस करते हैं कि ऐसे वैज्ञानिक कितने विरले हैं, जो आग्रह करते हैं कि "ईश्वर पासों से नहीं खेलता," जैसे कि एलवर्ट आइंस्टीन ने कहा था।

इस दृष्टि के कमी के परिणामस्वरूप, वैज्ञानिक अपने आपको, वे 'जानते हैं,' के साथ संलिप्त कर लेते हैं। सत्य आविष्कारों को सूचित करने के ऊपर, संरक्षी शिक्षायें और प्राधिकार जीत जाते हैं।

उत्तरदायित्वहीन पत्रकार एकजुट हो जाते हैं और भ्रम, कि "विशेषज्ञ कहीं हैं, जो जानते हैं कि समस्या से किस प्रकार निपटा जाये," को बहुत अधिक प्रवर्धित कर देते हैं।

क्या आप आश्चर्यचकित हैं कि प्रकृति के प्रति **असम्मान और अनादर का रवैया** अभी जारी है?

यदि आप सोचते हैं कि पृथ्वी पर विज्ञान 'आगे बढ़ा हुआ' है – दुबारा सोचें। पृथ्वी के वैज्ञानिक, भौतिकी के कुछ मूलभूत नियमों से भी परचिति नहीं हैं। मुझे, आपको कुछ प्रमाण देने दें।

गुरुत्व को लें। क्या कोई चीज है, जो गुरुत्व की तुलना में अधिक आधारभूत है? क्या आप अनुभव करते हैं कि आज, पृथ्वी का संपूर्ण 'विज्ञान,' गुरुत्व की व्याख्या भी नहीं कर सकता?

क्या आप महसूस करते हैं कि पृथ्वी पर अधिकांश प्रदूषण, गुरुत्व के विरुद्ध 'लड़ने' से : चीजों को ऊपर उठाने से, और/अथवा उन्हें आसपास चलाने से पैदा होता है।

क्या आप अनुभव करते हैं कि इस पृथ्वी पर, आज का कोई भी वैज्ञानिक, ये नहीं बता सकता कि हम, ग्रह से गिर कर, ब्रह्माण्ड में क्यों नहीं चले जाते? वे अभी भी, 'द्रव्यमान के मूल' की खोज में हैं।"

"यदि जो कुछ भी देखा जा सकता है, वह सब आपके लिये दुरुह है – तो आप उसे, जो नहीं देखा जा सकता है, समझने की आशा कैसे कर सकते हैं? [2]

यदि पहिया इतना ही अच्छा विचार है, तब प्रकृति में **कोई भी चीज** पहियों पर क्यों नहीं घूमती? हमारा ग्रह, सूर्य के चारों ओर पहियों पर क्यों नहीं चलता? क्या ये काफी भारी है, क्या ऐसा नहीं है?

क्या आपकी कल्पना इतनी कब्ज खा चुकी है कि आप किसी अधिक प्रखर बुद्धि वाले हल की **संभावना को स्वीकार** नहीं कर सकते।

हमारी आंखों के सामने महान प्रतिभा का डिजाइन इतना प्रबुद्ध है कि ये वास्तव में सादा है। क्या सरलतम हल भी सबसे सुंदर नहीं हैं?

संयोगवश, क्या आपको याद है कि सुंदरता, प्रारंभ में, ब्रह्माण्ड को डिजाइन करने के प्रमुख उद्देश्यों में से एक थी।

अबतक, आप आश्चर्य करना शुरू कर सकते हैं – "क्या कोई ऐसी चीज है, जिसे हम कर सकते हैं?" चूंकि हम किसी दूसरे को नहीं बदल सकते, केवल अपने आपको, मैं स्वेच्छापूर्वक अपना योगदान देना चाहूंगा :

असीमित संभावनाओं वाले एक व्यक्तिशः प्रबुद्ध के रूप में, मैं उनके सभी महान कम्प्यूटरों और प्रयोगशालाओं के साथ, इस पृथ्वी के पूरे वैज्ञानिक समुदाय को, व्यक्तिगत रूप से,, गुरुत्व की व्याख्या करने की चुनौती देता हूँ। इसे पैदा करें। इस पर विजय पायें। इसे समझें।

ब्रह्माण्ड के डिजाइन में एक और प्रबुद्ध सिद्धांत को खोजें। केवल चीजों को ऊपर उठाने और उन्हें

आसपास चलाने के लिए प्रकृति को प्रदूषित करना और ग्रह का विनाश करना बंद करें।

क्या आप सोचते हैं कि मानवता, पृथ्वी पर प्रत्येक नये आविष्कार के साथ, हथियारों के विकास को रोकने के लिए तैयार है? जैसे ही वे हों – मैं गुरुत्व को जीतने की चुनौती को, जनसाधारण में खुले तौर पर स्वीकार करूंगा, ताकि हर आदमी देख सके कि किसी एकल व्यक्ति की प्रतिभा – एकबार ये अपनी असीमित संभावनाओं को खोज ले और अपने चयन की स्वतंत्रता को उपयोग में लाये, क्या करने में समर्थ होती है।

क्या आप मेरे साथ आना चाहेंगे?

यदि आप आग्रह करें कि केवल रेंगना संभव है – तो आप उड़ना कभी नहीं सीख पायेंगे...

उन्नयन

उन्नयन के सिद्धांत के सम्बंध में क्या?

एक प्रसिद्ध रूसी वैज्ञानिक अकादमी में हुई प्रखर चर्चा में उठा एक प्रश्न मुझे पूछने दें।

“यदि उन्नयन सत्य है – अभी भी, हर लड़की, एक कन्या ही क्यों पैदा होती है? आपके सिद्धांत में कुछ कमजोरी होनी चाहिए...”

इसलिए, हम पृथ्वी की प्रजातियों में हो रहे उन्नयन का प्रमाण क्यों देखते हैं?

मात्र इसलिए कि **उन्नयन प्रतिभा में घटित होता है**। भौतिक और दैहिक परिवर्तन **केवल** तभी होते हैं, जब कोई सजगतापूर्वक कुछ **सीखता** है। आपको ये स्वीकार करना होगा, कि सीखना, मांस के बजाय, प्रतिभा की एक प्रक्रिया है।

उदाहरण के लिए, एंटीबायोटिकों द्वारा प्रताड़ित किए जाने पर, बैक्टीरिया जिंदा रहना सीख सकता है। वे दूसरी किसी कुशलता का विकास नहीं करते, या बैक्टीरिया से बजाय किसी चीज के रूप में उन्नयित नहीं होते – वे विशेष प्रकार की कुशलता, जिसकी उन्हें जीवित रहने के लिए आवश्यकता है, का विकास कर लेते हैं। वे उसे विकसित करने का **लक्ष्य** रखते हैं। ये संयोग नहीं है।

ध्यानपूर्वक ये देखना, कि सीखना अनेक पीढ़ियों में घटित होता है, दिलचस्प है। इससे पहले कि बैक्टीरिया किसी नये कौशल का विकास कर सके, बैक्टीरियाओं की अनगिनत पीढ़ियों का मरना आवश्यक होता है। हमने अनेक दशकों तक चिंतन किया कि काश हम बैक्टीरियाओं को सफलतापूर्वक मार सकते। तब फिर आज, बैक्टीरिया, बैक्टीरियाओं की उन पीढ़ियों से कैसे सीख सकते हैं, जो बहुत पहले **मर चुकीं** हैं?

इस पुस्तक में पहले सिद्ध किया हुआ, जीवन के परे चेतना की निरंतरता का एक तथ्य, एक बहुत ही तर्कपूर्ण व्याख्या है [1][10]।

ऊपर के उदाहरण से ये स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी जीवित प्राणी को – बैक्टीरिया जैसे छोटे प्राणी को भी, मारने का प्रयास करना, बहुत अच्छा विचार नहीं हो सकता। चूंकि हर जिंदा प्राणी प्रतिभावान होता है – ये हमारे साथ सहअस्तित्व में रहने की तुलना में, हमसे लड़ना सीख सकता है। दीर्घावधि में, इसका तात्पर्य ये है कि किसी दूसरे जीवित प्राणी को आहत करने से, अंततः हम अपने आपको ही आहत करते हैं।

जीवन के दूसरे रूप भी, यदि बैक्टीरिया से उन्नत हुए हैं, जैसा कि कुछ सिद्धांत दावा करते हैं, तब, अबतक कोई भी, किसी बैक्टीरिया को, बैक्टीरिया के अलावा किसी अन्य चीज में उन्नत होते हुए क्यों नहीं देख सका?

प्रकृति का, अपने आसपास, निरीक्षण करते हुए, हमको निष्कर्ष निकालना पड़ता है कि, किसी “सामंजस्य” को प्राप्त करने के लिए – प्रजातियों की बहुलता को, **एक साथ** अस्तित्व में होना होता है।

उदाहरण के लिए, बैक्टीरियाओं को दूसरे जीवित प्राणियों से, जैविक कचरे की आवश्यकता होती है, और मानव सहित हर दूसरे जीवित प्राणी को, जीने के लिए, बैक्टीरिया की आवश्यकता होती है।

प्रजातियों की बहुलता का सहजीवन और सहअस्तित्व, **प्रारम्भ से ही**, आवश्यक होता है और ब्रह्माण्ड की चेतन डिजायन का सार भी यही है।

क्या ये एक संयोग नहीं है कि सीखने और बुद्धि के विकास के लिए, सहअस्तित्व एक उत्कृष्ट वातावरण भी है?

चयन की स्वतंत्रता

आप कौन हैं?

आप कैसे जीते हैं?

आपका क्या होगा? [2]

क्या आप खुद के विकास की असीमित संभावनाओं वाली व्यक्तिगत प्रतिभा नहीं हैं?

क्या आप के पास असीमित स्वायत्तता और चयन की स्वतंत्रता नहीं है?

कोई भी दूसरा, आपकी प्रतिभा का विकास नहीं कर सकता — केवल आप स्वयं ही कर सकते हैं।

कोई भी दूसरा, आपके लिए प्रेम और आनंद को अनुभव करना नहीं सीख सकता—इसको अनुभव करना, केवल आप स्वयं ही सीख सकते हैं।

एक कारण से, आप व्यक्तिविशेष हैं, क्या आप समझ नहीं सकते?

सिद्धांत कि "हम सब एक ही हैं," ब्रह्माण्ड की सत्यता के बारे में कुछ भी नहीं स्पष्ट करते। प्रत्यक्षरूप से उनका अनुपालन करना, हमारी प्रतिभा, वैयक्तिकता और मुक्त इच्छा को अपंग बना देता है।

आपकी अवाधित वैयक्तिकता और चयन की असम्मत स्वतंत्रता के बिना, यहाँ आपके लिए (और किसी दूसरे के लिए भी), वास्तव में प्रेम जैसी उच्च भावनाओं का अनुभव प्राप्त करते रहने का कोई अवसर नहीं है।

हम कह सकते थे कि **"हम सब का मूल एक ही है"** या **"हम सब एक ही उद्देश्य के लिए यहाँ अस्तित्व में हैं"** या **"हम सभी भाई-बहिन हैं"**। क्या आप अंतर देखते हैं।

"एक-दूसरे को प्रेम करें," ये, जीवन को कैसे जिया जाये, पर एक बड़ी सलाह है। ये हमारी उच्च भावनाओं के अभ्यास करने की सबसे अच्छी विधियों में से एक है।

आप कितनी दूर तक जा सकते हैं? भावनाएँ, जिन्हें आप अनुभव करना सीख सकते हैं, कितनी ऊँची हैं?

मात्र सीमा, जिसको आप कभी ब्रह्माण्ड में अनुभव कर सकेंगे— वह है, जो आप अपने ऊपर लगाते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि आप केवल एक जीवन जीने का निर्णय करते हैं और तब अपने चेतन अस्तित्व को बुझा देते हैं — ये आपका चयन है। यदि आप आग्रह करते हैं —आप कर सकते हैं। केवल चिंतन बंद करें और अपनी बुद्धि का उपयोग करना बंद करें।

इसलिए, हमारा अंतिम ठिकाना क्या है?

क्या यह अस्तित्व में हैं? इसकी कोई सीमाएँ नहीं हैं..... मात्र सीमायें, जो अस्तित्व में हैं, वे हैं, जिन्हें हम स्वयं अपने ऊपर थोपते हैं।

ब्रह्माण्ड के प्रारंभ और उसके उद्देश्य को आप जितना अधिक समझते हैं, उतनी ही अच्छी तरह से आप प्रकृति (महान प्रतिभा के पार्थिव प्रकटन) को समझ सकते हैं — अच्छा हो, आप कल्पना कर सकें, और अपने स्वयं के अंतिम लक्ष्य का सृजन कर सकें। इसकी कोई सीमायें नहीं हैं, कि आप क्या कल्पना कर सकते हैं...

"जैसा कि लाखों लोग विश्वास करते हैं, खतरा भौतिक शरीर की मृत्यु में नहीं है — वास्तविक खतरा, उस विधि में है, जिसमें हम जीते हैं" [1]।

हमारे पास चयन की स्वतंत्रता है...

आप क्या चुनते हैं?

सबसे कठिन बात

क्या आप जानते हैं कि मेरे लिए सबसे मुश्किल चीज क्या है और हमेशा रही है?

ये है चयन की स्वतंत्रता

विशेषरूप से—

बिल्कुल, कुछ भी नहीं करने के चयन की स्वतंत्रता।

आप कितने लोगों को जानते हैं, जो इस एकल चयन के ऊपर केन्द्रित करते हैं? क्या आप जानते हैं कि अपनी चेतन प्रगति के लिए कुछ न करने के चयन के इस प्रलोभन से कैसे पार पाया जाए? क्या आपने इसप्रकार के प्रलोभन का कभी स्वयं सामना किया है?

स्वयं का अध्ययन करने और व्यवस्थित चेतन प्रगति करने के लिए लक्ष्य रखने, अपने खुद के चिंतन के अनुशासन के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन पाने और अपने चेतन अस्तित्व पाने को, मैंने सबसे मुश्किल चेहरा पाया है और ये हमेशा ही रहा है।

सबसे बड़ी सीमा, जिसे आपको पार करना होगा, है, स्वयं आप।

क्या आप किन्ही सीमाओं को पहचानते हैं?

आपने अपनी सीमाओं से पार पाने के लिए आज क्या किया?

अहम्

तुम स्वयं या "अहम्" का उन्मूलन नहीं कर सकते। मैंने इसका प्रयास किया है – और बड़ी दीनता के साथ हर बार असफल रहा।

इस पुस्तक में, मैं पहले ही स्पष्टरूप से बता चुका हूँ, क्यों। हम किसी कारण के लिए व्यक्तिविशेष हैं। **हमारी वैयक्तिकता के बिना, ब्रह्माण्ड को आदि से प्रारम्भ करने का कोई अर्थ नहीं होता।**

अपने वैयक्तिकता को दबाने का प्रयास करना, ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के विरुद्ध एक हिंसक कार्य है और ये दीनता को अनुभव करने में, हमेशा ज्यों का त्यों परिणामित होता है।

अपने अहम् को शिक्षित करना ही एकमात्र तरीका है। इसका अध्ययन करें, इसे राजी करायें। इसका उन्नयन करें। इसे समझायें। इसे प्रेम सिखायें।

अपने अहम् की परीक्षा करें। आप पायेंगे कि वहाँ **हर चीज** है।

वासना और प्रेम	घृणा और सहनशीलता
हिंसा और दयालुता	क्रोध और आदर
	पाशुविक भावनाएँ और बुद्धिमत्ता
आनन्द और दीनता	ईर्ष्या और सराहना
बुद्धि और अनभिज्ञता	धोखा और कर्तव्यनिष्ठा
स्वार्थपरता और उदारता	मलिनता और भोलापन
गर्व और शालीनता	कूरता और कोमलता

ये सभी अंदर है। और भी कुछ...

हर चीज को सभी कालों में अंदर होना ही था।

अन्यथा आप अपनी चयन की स्वतंत्रता का प्रयोग कैसे कर पाते?

आप चीजों को कैसे देख पाते, यदि आपको विपर्ययों की शाश्वत विषमता को देखने और अनुभव करने का अवसर नहीं मिला होता?

क्या आप डिजाइन का तर्क और सौंदर्य देखते हैं?

स्वयं का परीक्षण करें।

अहम् का अध्ययन करें।

इसका पोषण करें।

इसे अपनी बुद्धि की सुन्दरता दिखाएँ।

इसे संभावना दिखाएँ।

इसे विकास करने के लिए सहमत करायें।

इसे सभी विकल्प दिखाएँ।

इसे सजगतापूर्वक **चयन करना सिखायें।**

इसे सहमत कराएँ कि आपके **चयन ही सभी अंतरों को पैदा करते हैं।**

तब इसे प्रेम का **चयन** करना सिखायें।

ये विशिष्ट रवैया, तथापि, **आत्मनियंत्रण** की असाधारण राशि की मांग करता है। ब्रह्माण्ड में कोई भी दूसरा व्यक्ति, इसे आपके लिए नहीं कर सकता। आपको सभी प्रेरणाएँ अंदर ही तलाशनी हैं।

यदि आप सोचते हैं कि अभिप्रेरण को पा लेना ही पर्याप्त होगा, दुबारा सोचें। प्रोत्साहन को अंदर ढूँढना अत्यंत कठिन है, परंतु हर दिन इसे बनाये रखना और भी कठिन है।

अनेक भ्रामक विकर्षण, अवरोध और बहाने हैं। तमाम चयन हैं – और, अपनी चेतना की उन्नति के बारे में कुछ भी न करना, हमेशा ही सरलतम चयन है।

ये सब चयन की स्वतंत्रता के बारे में हैं...

क्या आप विश्वास करते हैं?

किसी भी प्रकार के विश्वास करना अथवा विश्वासों को पालना, आपकी व्यक्तिगत प्रतिभा के प्रमुख खतरों में से एक है। इसमें, वास्तव में, ये विश्वास करना कि कुछ चीज संभव नहीं है, सम्मिलित है।

मुझे खतरे की व्याख्या करने दें। किसी "विश्वास" का सार क्या है? क्या – सभी पूर्वानुमानों और पश्चपरिणामों का परीक्षण और अनुभव किए बिना, ये पूर्वानुमान करना नहीं है कि, "जानने की कोई आवश्यकता नहीं है" या "कहीं पर कुछ है, जो जानता है"?

विश्वासों को अपनाने के द्वारा, आप खुद ही, नहीं सोचने, और अपनी प्रतिभा को **निष्क्रिय** बनाये रखने का चयन कर लेते हैं।

वास्तव में, ये कोई मायने नहीं रखता कि *दूसरे लोग* क्या "जानते हैं" या वे सोचते हैं कि वे "जानते हैं"। ये पूरी तरह से अनर्गल है।

वह चीज, जो ब्रह्माण्ड में सार्थक है, केवल ये है कि आप स्वयं ही क्या समझ सकते हैं।

विश्वासों को अपनाना और उनका पालन करना, अपने हाथों के परमाणु बम को स्वयं ही विस्फोटित करने की अपेक्षा अधिक खतरनाक है। क्यों?

आपके शरीर का विनाश, आपकी प्रतिभा – ब्रह्माण्ड में, वह चीज, जो वास्तव में केवल आपकी है, को भ्रष्ट नहीं कर सकता। तथापि, विश्वासों को अपनाने के द्वारा, आप अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा को प्रदूषित करना, और अपनी *खुद की सहमति से उसका कब्ज से पीड़ित होना*, चयन करते हैं।

आपको, "विश्वास करने" की अपेक्षा, **जानने की आवश्यकता है, और ज्ञान को प्राप्त करने तथा उसको सत्यापित करने का एकमात्र तरीका है, अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा का उपयोग करना और उसको विकसित करना।**

उन *सभी संभावनाओं* को, जिनकी आप कल्पना कर सकते हैं, स्वीकार करें।

अपनी प्रतिभा से इन संभावनाओं का विश्लेषण करें और उन्हें *समझने* का प्रयास करें? किसी अन्य विधि से आप सजग चयन कैसे कर सकते हैं?

जब आप और अधिक समझने के लिए बड़े हो जाते हैं, नई संभावनाएँ उठ खड़ी हो सकती हैं और आपको उन्हें अपने विचारों में स्वीकार करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता होगी।

विश्वासों को अपनाने में अत्यंत सावधान रहें।

"विश्वास," लोगों को, निचले धड़ में लकवाग्रस्त प्रतिभावान, असमर्थ और सोचने के लिए अनिच्छुक लोगों के रूप में बदल देते हैं।

विश्वासों को अपनाने में अत्यधिक रूप से सावधान रहें।

"विश्वास करने वाले," ब्रह्माण्ड की अपनी खुद की समझ और इसमें अपनी खुद की उपस्थिति का विकास करने के बजाय, सलाहों और निर्णयों का अनुगमन करते हैं।

अपने विश्वासों की जाँच करें। क्या आप ने अपनी प्रतिभा से उनकी जाँच की है?

समझ ही सब कुछ है।

जो हम अपने जीवन में अनुभव करते हैं, वह केवल तभी संगत है यदि हम **समझते हैं** कि क्या चल रहा है और क्यों। चेतना का उन्नयन केवल तभी घटित होता है, जब हम वास्तविकता की अपनी **समझ को में बृद्धि** करते हैं।

हमारे गृह कार्य के इस भाग को कोई भी शिक्षक या कोई भी पाठशाला नहीं कर सकती। दूसरे लोग व्याख्याओं के द्वारा सहायता कर सकते हैं, परंतु अंततः प्रत्येक को *व्यक्तिगत रूप से* ही समझ प्राप्त करनी होगी।

एक जीवंत उदाहरण के द्वारा इस विचार को समझाना सर्वोत्तम है।

एक *बंदर* को विश्व के सबसे अच्छे विश्वविद्यालय में ले जाये जाने की कल्पना करें, और उसे खगोलीय भौतिकी में, सबसे अच्छे आचार्यों के, सर्वोत्तम व्याख्यानों का अनुभव करने दें। क्या आप सोचते हैं कि बंदर ऐसे किसी अनुभव से लाभान्वित होगा?

यदि आप सोचते हैं कि बंदर का विचार बहुत अत्यधिक सीमांतक था – उपरोक्त उदाहरण को किसी दूसरे पर लागू करने का प्रयास करें, जिसने कभी किसी चीज को समझने में दिलचस्पी नहीं रखी।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितनी पुस्तकें पढ़ चुके हैं, आपने कितने व्याख्यान सुने हैं और वे क्या थे। जिससे फर्क पड़ता है, वह है कि वास्तव में आज आप उनसे ब्रह्माण्ड के बारे में और इसमें अपनी विशिष्ट भूमिका के बारे में क्या **समझते** हैं।

क्या होता है यदि लोग नहीं समझते और/अथवा समझने का कोई प्रयास नहीं करते? सबसे अच्छा है – वे अपने जीवनकाल को व्यर्थ गंवाते हैं। दुर्भाग्यवश, तथापि, समझदारी की कमी, व्यक्तिशः और सामूहिक दोनों – दीनता और पीड़ा का एक प्राथमिक स्रोत है।

समझदारी की कमी पीड़ाओं को कैसे उत्पन्न करती है, इसकी प्रक्रिया, अनेक प्रतिष्ठित प्राचीन पवित्र ग्रंथों के उपयोग से, एक उदाहरण से समझी जा सकती है [2] [3] [4] [5]। हजारों सालों से उन्हें प्रतिदिन पढ़ना और उन्हें दिल से याद करना मदद नहीं करता, यदि कोई नहीं समझ सकता कि उनमें क्या जानकारी निहित है, उन्हें किसने लिखा, किसने उन्हें सुधारा और क्यों।

मूलभूत समझदारी के बिना – किसी भी धर्मग्रंथ का विषय, मानवता और प्रकृति के विरुद्ध विकृत हो जाता है। लोग इससे घृणा करना, गाली देना, प्रताड़ित करना और दूसरे लोगों को मारना—सब कुछ भगवान के नाम पर – शताब्दियों तक जारी रखते हैं, मात्र चूँकि वे अपनी स्वयं की चेतना की अपेक्षा, गलत अनुवादित और विकृत विषयों का पालन करते हैं।

सीमित समझ के साथ –केवल लोगों को भ्रमित और अधिकतम सम्भव सीमा तक गलत जानकारी युक्त बनाये रखने के लिए— वे भगवान के डर सहित, हर चीज के प्रति भय को प्रोत्साहित करते हैं। यदि आप सोचते हैं कि ये अभ्यास केवल भूतकाल से सम्बंधित हैं – देखिये आज उत्तरी आयरलैंड या दक्षिणी अफ्रीका में क्या होता है। अथवा स्वयं पूजा के किसी भी स्थान को जा कर देखें।

उन लोगों की, जो पूरी तरह से समझदारी की कमी प्रदर्शित करते हैं, सलाह पर चलते हुए लोगों के झुण्ड, दूसरे लोगों की प्रतिमाओं, फर्नीचर, खून से सने कपड़े के टुकड़ों, या प्रताड़ना के दूसरे उपकरणों की भी पूजा करना और उत्सव मनाना प्रारंभ कर देते हैं।

क्या आप, बिजली की एक कुर्सी की पूजा करेंगे या उत्सव मनाएँगे, यदि कोई बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति इस पर मर

गया हो? क्या आप बिजली की कुर्सी का एक छोटा सा प्रतिरूप अपनी गर्दन में पहनेंगे? और फिर भी, लाखों लोग, क्रास (प्रताड़ना का रोम का उपकरण) की पूजा करते हैं और इसके प्रतिरूप को अपनी गर्दन में पहनते भी हैं!!! क्या ये दिलचस्प नहीं है?

ये कहना अनावश्यक है, कि *समझदारी* की कमी, सफलतापूर्वक, पुरातन भूतकाल के बुद्धिमतापूर्ण संदेशों का विनाश करती है। लोगों के समुदायों के मस्तिष्क, ये विश्वास करने के लिए कि वे किसी के लिए भी, कुछ भी कर सकते हैं – यदि वे *सोचते* हैं कि “वे ईश्वर को प्रेम करते हैं,” धो कर साफ कर दिये जाते हैं।

सबसे खराब भाग ये है कि, पृथ्वी पर लोगों के बड़े वाहुल्य ने, वास्तव में, स्वयं कभी भी, किसी पवित्र ग्रंथ को नहीं पढ़ा। उन्होंने उन लोगों के ऊपर विश्वास करने का चयन कर लिया है, जो उनके लिये, पवित्र ग्रंथों की अपने शब्दों में व्याख्या और अनुवाद करते हैं। क्या आप अंतर देखते हैं?

यदि आपने पाया कि कुछ लोग, अपने लाभ के लिए, जानबूझकर, वर्षों से आपको धोखा देते रहे हैं, क्या आप ऐसे लोगों का अब भी विश्वास करेंगे और उनकी सलाह मानेंगे? मैं शर्त लगाता हूँ कि आप दुबारा अपना लाभ उठाया जाना पसंद नहीं करेंगे।

दुःखपूर्वक लोगों के एक बड़े बहुमत ने ये जांचने की, कि उन्हें धोखा दिया जा रहा है, कभी परेशानी नहीं उठाई। लोगों के समूहों ने, स्वेच्छा से अपनी मुक्त इच्छा को निवेदित कर दिया और उन टेढ़े लोगों के हाथों की कठपुतली बन गये, जो अपने आपको भगवान के प्रतिनिधि या “उच्चतर चेतना वाले” के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

क्या आप सोचते हैं कि महान प्रतिभाशाली, उस प्रतिभा को, जिसने आपके शरीर के प्रत्येक परमाणु सहित पूरे ब्रह्माण्ड की कल्पना और रचना की, आपको व्यक्तिशः प्रतिभा, असीमित संभावनाएँ, स्वायत्तता और चयन की स्वतंत्रता दी, किसी प्रतिनिधि की जरूरत है?

क्या नहीं – बल्कि क्यों

वह नहीं, जो हम करते हैं—परंतु हम क्यों करते हैं वह महत्वपूर्ण है।

दूसरे शब्दों में, “जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, वह दिखता हुआ नहीं, बल्कि वह है, जो उनके पीछे है।”

मुझे व्याख्या करने दें।

प्रतिभा का उन्नयन केवल तभी घटित होता है, जब हम अपनी व्यक्तिशः **समझदारी** को बढ़ा लेते हैं। किये जाने वाली चीजों को सजगतापूर्वक चुनने के द्वारा – हमारे पास स्वयं को सिद्ध करने का एक अवसर है कि हम समझते हैं, हम केवल स्वप्न ही नहीं देखते कि हम करते हैं।

इस प्रकार, अपने आप में हमारी क्रियाएँ ही नहीं, बल्कि हमारी खुद की व्यक्तिशः प्रतिभा में इन क्रियाओं की अभिप्रेरणायें सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।

उदाहरण के लिए, “दूसरे लोगों को मदद करने” की गतिविधि को लें। कदाचित्, ये हमेशा ही एक सकारात्मक गतिविधि है, क्या ऐसा नहीं है?

दूसरे लोगों को अज्ञानी बनाये रखने में “मदद करना,” इसके बारे में क्या? लोगों को आपस में एक दूसरे से लड़ने में मदद करना, इसके बारे में क्या? दूसरी गतिविधियों, जैसे कि गलत सूचनाओं को प्रोत्साहित करना, भय, आवश्यकता में दूसरों से लाभ उठाना, धन कमाना आदि को छिपाने के लिए, “दूसरों की मदद करना,” इस वाक्यांश का प्रयोग करने के बारे में क्या? कितने डॉक्टर आपकी मदद करेंगे, यदि आप उन्हें भुगतान न करें इत्यादि? अपनी आमदनी को अधिकतम बनाने के लिए, उनमें से कितने, आपको अपनी सहायता के प्रति निर्भर बनाने का प्रयास करेंगे?

क्या आप महसूस करते हैं कि “दूसरों को मदद करने वाले” “मुखौटे” के पीछे, अनेक विविध अभिप्रेरणायें हो सकती हैं? **सारे अंतर, अभिप्रेरणायें ही पैदा करती हैं ...**

इसप्रकार, “जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, व्यक्तिशः प्रतिभा के उन्नयन के लिये, वह दिखता हुआ नहीं, बल्कि वह है, जो उनके पीछे है।” [1]

अपने गतिविधियों की **अभिप्रेरणायों** का विश्लेषण करें। अपने खुद के कार्यों के लिये, सजगतापूर्वक, **अभिप्रेरणायों** का चयन करें और कल, जब आप अपनी महान कार्ययोजना की समझ को बढ़ायेंगे, उन्हें सुधारने के लिए तैयार रहें। **अपनी खुद की अभिप्रेरणायों का निष्ठावान विश्लेषण, आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए।**

दूसरों के कार्यों की अभिप्रेरणायों को भी देखने का प्रयास करें। अभिप्रेरणायों का पहचानना परम आवश्यक है। मुझे इसे एक उदाहरण के द्वारा समझाने दें।

मान लें कि एक व्यक्ति, स्पष्टरूप से आपको ये समझाते हुए कि ये क्या है, आपको जहर देता है। मान लें कि कोई दूसरा व्यक्ति, आपको केन्डी की वास्तविक चीजों के बारे में **बिना बताये**, बल्कि ये कहते हुए कि “मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ,” **आपको केन्डी में मिलाकर जहर देता है।**

अधिक घातक क्या है? क्या आप छिपाने और वास्तविक अभिप्रेरणायों को पहचान पाने की असफलता के खतरे को समझते हैं?

क्या आप युद्धों, हिंसा और हत्या को तर्कपूर्ण बनाने के खतरे को, "शांति" और "न्याय" की गतिविधियों के रूप में देख सकते हैं? [7] [8] क्या आप अनुभव करते हैं कि खिलाँने और खेल, जो हत्या और हिंसा को सिखाते हैं, और भव्य बनाते हैं, कितने खतरनाक हैं?

क्या आप जानबूझकर बोले गये झूठ और गलत जानकारी को, जब ये जानकारी प्रेम-संदेश के रूप में दी गई हो, मान्यता दे सकते हैं?

क्या आप मूर्खता और अज्ञानता के भव्यतापूर्ण प्रदर्शन किये जाने को, जब इसे "आध्यात्मिकता" या "धर्म" के नाम पर धकेला जाता है, मान्यता दे सकते हैं।

भूतकाल

क्या आपको याद है कि जब आपने चलना सीखा, उससे पहले आप कितनी बार गिरे थे? क्या आप गिरने की उन सब असफलताओं को याद करने में रुचि रखते हैं?

क्या आपको याद है, कि लिखना सीखने से पहले आपने कितनी गलतियां की थीं? क्या आप ये याद करने में दिलचस्पी रखते हैं कि वे गलतियां क्या थीं?

क्या आप सोचते हैं, ऐसी स्मृतियाँ संगत हैं? क्यों नहीं?

आपने भूतकाल में क्या और कितनी गलतियाँ की — लगभग अनर्गल है। भूतकाल की गलतियों के बारे में, महत्वपूर्ण चीज, मात्र वह है जो आपने अंततः उनसे सीखी। दूसरे शब्दों में:

महत्वपूर्ण बात केवल ये है कि आप आज क्या समझते हैं।

ये आपकी आज की समझ है, जो आपके चेतन चयनों को निश्चित और सीमित करती है, क्या ऐसा नहीं है?

बदले में, आपके आज के चयन, कल के चयनों की परास को तय करते हैं। इस ढंग से, आप ब्रह्माण्ड में अपने भविष्य को, धीमे-धीमे परिभाषित और निश्चित करते हैं।

उपरोक्त को दृष्टि में रखते हुए, क्या आप सोचते हैं कि “भूतकाल में जीना,” या अपने भूतकाल को, आज के अपने चयनों को प्रभावित करने देना, एक अच्छा विचार है?

अपनी समझ और आज के अपने चयन पर ध्यान को केन्द्रित करें।

आज, आप जितना ज्यादा सीखने का प्रयास करते हैं, आप कल समझने के लिये, उतने ही अधिक सक्षम होंगे। क्या ये कुछ ठीक लगता है?

भविष्य

क्या आप भविष्य जानना चाहते हैं? **किसलिए?**

क्या भविष्य का ज्ञान, आपकी प्रतिभा को बढ़ा सकता है? क्या भविष्य का ज्ञान आपकी प्रतिभा को बढ़ा सकता है? इसका ठीक उल्टा। यदि आप भविष्य जानते हैं, आप कुछ असुखद स्थितियों से, अधिकांशतः बचना चाहेंगे और इसी प्रकार, आप उनके प्रति अपनी प्रतिक्रिया से, सीखने के अवसर को गवां देगे।

यदि विद्यार्थी, प्रश्नों, जिनका उन्हें सामना करना है, को पहले से ही ठीक-ठीक जानते हों – क्या वे उस परीक्षा से कुछ सीख पायेंगे? क्या हम इसे धोखा देना नहीं कहते?

उपरोक्त से ये स्पष्ट है कि भविष्य को जानने की इच्छा, वास्तव में, ब्रह्माण्ड के उद्देश्य और हमारे अस्तित्व के उद्देश्य की अवहेलना करती है, क्योंकि ये व्यक्तिशः प्रतिभा के उन्नयन का विनाश करती है।

इसप्रकार, कोई भी, जो भविष्य बताता है, वह ब्रह्माण्ड और विशेषकर जीवन के उद्देश्य में समझदारी की एकदम कमी का पूरा साक्ष्य प्रस्तुत करता है। उनकी अभिप्रेरणाओं का परीक्षण करना, आपकी प्रतिभा के लिए एक अच्छा अभ्यास हो सकता है।

समय गंवाने की अपेक्षा, *भविष्यवाणियों* में विश्वास करना, और उन्हें होने देने की *प्रतीक्षा करना*, **अत्यधिक** खतरनाक है। प्रतिभा को प्रदूषित करने, निष्क्रिय रवैये के साथ प्रतीक्षा करने और चमत्कार, मोक्ष, मुक्ति, आत्मज्ञान, ब्रह्माण्डीय अथवा ग्रहीय संरक्षण, संदेश वाहक या किसी दूसरे के द्वारा कुछ किये जाने की आशा करने के बहुत ही गंभीर पश्चपरिणाम होते हैं। हास्यास्पद रिवाजों और आदतों के द्वारा विशेषरूप से प्रबलित की हुई असहायपन और अपर्याप्तता की सम्बद्ध भावनाएँ, आत्मविकास की सजग अभिप्रेरणा का उन्मूलन करती हैं और इसप्रकार व्यक्तिशः प्रतिभा के उन्नयन का पूरी तरह से सत्यानाश करती हैं।

अधिकांश “भविष्यवाणियाँ,” उनके द्वारा अपने अनुयायियों को, ब्रह्माण्ड की यथार्थता के सम्बंध में किसी भी चीज को सीखने से रोकते हुए, **कारण और प्रभाव के सम्बंधों को पूरी तरह से झुठला देती हैं।**

भविष्य के **कुछ पहलुओं** की पहले से ही भविष्यवाणी की जा सकती है, परंतु केवल तभी, जब हम अपने व्यक्तिशः और सामूहिक चयनों के पश्चपरिणाम को समझते हों— और केवल तभी, जब हम कार्य और कारण के बीच के सम्बंधों को काफी अच्छे से समझते हों। उदाहरण के लिए, यदि आप आज आत्महत्या करने का निर्णय करते हैं, तो आप, कल रात का खाना खाने की आशा नहीं कर सकते।

एक और अधिक गंभीर उदाहरण – यदि हम पृथ्वी के वायुमण्डल में प्रदूषण को बढ़ाना रोजाना जारी रखें – परिणामी प्रलय, अंततः पूरे ग्रह का विनाश कर देंगे⁷ [1] [21]।

यदि आप, वास्तव में अपना भविष्य जानना चाहते हैं – आपको यह समझने की आवश्यकता है कि आज आप क्या हैं। आप जितना ज्यादा अच्छा समझते हैं कि आज आप क्या हैं – आप अपने भविष्य को उतनी ही अच्छी तरह से समझेंगे। आपकी प्रतिभा का भविष्य, विशेषरूप से, आपके सजग चयनों, जो आप स्वयं करते हैं, के द्वारा निश्चित किया जाता है। कोई भी, आपकी प्रतिभा को, आपके लिए विकसित नहीं कर सकता – यह आपको खुद ही अपने लिए करना पड़ेगा।

आप ब्रह्माण्ड में अंततः क्या हो जाते हैं, ये केवल उन चयनों के द्वारा, जो आप स्वयं करते हैं, निश्चित किया जाता है।

⁷ हमारी सम्पूर्ण “सभ्यता” के लिये वास्तविक खतरा धीमे वातावरण परिवर्तनों से नहीं आता बल्कि ग्रहीयगर्भ के अत्यधिक गर्म होने से आता है। कृपया अधिक विस्तार के लिये देखें सन्दर्भ [21]।

मेरा चयन

पिछले 40 सालों में, जीवन का मेरा नजरिया, कई बार, एक पराकाष्ठा से दूसरी तक, प्रचंडरूप से परिवर्तित हुआ।

मैंने हर अवसर, हर निर्देश और हर शिक्षा पर प्रश्न उठाते हुए—केवल एक प्रमुख “कष्टकारी” बनने के लिए, लोक समुदाय के एक आत्मसंतुष्ट सदस्य के रूप में काम किया। मैं एक संगीतज्ञ और मनोरंजन करने वाला था और मैं एक पुरातनपंथी इंजीनियर बन गया। मैंने—पूँजीवादी समाज के प्रपंचों और सीमाओं को खोजने के लिए, सर्वाधिकारवादी सत्ता और साम्यवाद के खतरों का अनुभव किया है। लाइलाज बीमारियों से कुंठित किसी व्यक्ति से लगाकर— मैं, स्वयं का इलाज करने वाले और कायाकल्प करने वाले उन्मादी के रूप में बदल गया [12]। मैं पूरी तरह से, एक पूर्ण पारिवारिक सदस्य से, एक परोपकारी के रूप में, जो सोने से अधिक, ध्यान का आनंद उठाता है, मैं बदल गया। मैंने, एक नाव खेने वाले प्रशिक्षक के रूप में— भौतिकी में पी-एच.डी की। इंजन में दहन की प्रक्रिया में विश्व का पहला होलोग्राम अंकित करने के बाद— मैंने मानव शरीर के आसपास जैव-प्लाज्मा का अध्ययन करना [13] और अपनी खुद की आंखों से प्रभामंडल को देखने का लक्ष्य बनाना प्रारंभ किया। एक अकादमिक के रूप में— मैंने पूरी तरह से मूल फैशन को डिजाइन करना शुरू किया [14]। सक्षम पुरातनपंथी वैज्ञानिक होने के कारण— मैंने भौतिक शरीर से अपनी चेतना को अलग करते हुए, ब्रह्माण्ड के मूल को खोजने का लक्ष्य बनाया। मैं अपनी शेष सूची से आपको परेशान नहीं करना चाहता — मैं आपको, पराकाष्ठाओं, जिन्हें मैंने अपने जीवन के विभिन्न चरणों में अपनाते का निर्णय लिया, के परास के सम्बंध में केवल कुछ विचार, देना चाहता हूँ।

अपने जीवन में, मैंने—केवल ये खोजने के लिए कि “वह वैसा नहीं था,” अनेक चीजों को पा लिया है।

सभी सीमाओं के पश्चपरिणामों को अनेक वर्षों तक खोजने और अनुभव करने के द्वारा, मैंने अंतिम निष्कर्ष निकालना प्रारंभ किया। क्या आप जानते हैं ये क्या है?

मैं केवल इसे अपनी पुस्तक में समझाने का प्रयास कर रहा हूँ।

ये **सजगता** और **उद्देश्य के साथ** जीवन को जीना है। उद्देश्य, जो भव्य योजना—सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के उद्देश्य के साथ मेल खाता हो।

महान योजना के साथ मेल खाता हुआ, अपना खुद का उद्देश्य बनाना—अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हर समय, जब आप अधिक समझने के लिये बड़े को जाते हैं, अपने उद्देश्य में विस्तार करने के लिए तैयार रहना भी आवश्यक है।

क्या आप, बिना जाने ये हुए कि ये क्या है, कुछ प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं?

केवल अपने अस्तित्व को अपने भौतिक शरीर के बाहर अनुभव करने के बाद, “दूसरे पक्ष” और उच्चतर चेतना के रहस्यों को ढूँढते हुए, संपूर्ण ब्रह्माण्ड के उद्देश्य और मूल, उस एकल कुछ नहीं को आश्चर्य के साथ खोजते हुए, केवल तभी मैंने समझा कि सर्वोत्तम चयन, जो मैं हर दिन कर सकता हूँ, वह है, अपने भौतिक शरीर में रहना।

केवल तभी मैंने अनुभव किया कि अपनी सूक्ष्म और सीमित प्रतिभा से, संपूर्ण ब्रह्माण्ड को खोजने का सबसे अच्छा उपकरण मेरा भौतिक शरीर ही है। केवल तभी मैंने फीडबैक और सभी अनुभवों, जिन्हें मेरा शरीर मेरी प्रतिभा को उपलब्ध कराता है, को सराहना शुरू किया।

केवल तभी मैंने ध्यान दिया कि ब्रह्माण्ड का वह भाग, जो मेरे सबसे ज्यादा समीप है, वास्तव में मेरा खुद का भौतिक शरीर है।

केवल तभी, मैंने महसूस किया कि केवल अपनी प्रतिभा का उपयोग करते हुए, अपने खुद के भौतिक शरीर द्वारा उत्पन्न संज्ञानों की अद्भुत परास पर **ध्यान देते हुए**, मैं कितना सीख सकता हूँ।

अपने आश्चर्य के साथ, मैंने पाया कि मैं अपने भौतिक शरीर के बारे में, वास्तव में, बहुत थोड़ा जानता हूँ। न केवल ये कि मैंने इसे नहीं बनाया, वल्कि मैं सजगतापूर्वक, अपने शरीर के किसी भाग को भी डिजाइन नहीं कर सकता था, मैं ये भी नहीं जानता था कि ये कैसे और क्यों काम करता है। मैं इसके कुछ मूल कार्यों को नियंत्रित भी नहीं कर सकता था, मरम्मतों की तो बात ही क्या है! [12]

मुझे स्पष्ट करने दें कि मेरा तात्पर्य क्या है। कल्पना करें कि आपने अपने हाथ खो दिया। क्या आप जानते हैं कि इसे वापस कैसे उगाया जाये? (अंततः जब हम काफी जान लेते हैं—हम जान जायेंगे कि अपने शरीर को इच्छानुसार कैसे दुबारा बनाया जाये [1])

मैंने महसूस किया कि हम कितना कम जानते हैं और कि पृथ्वी के हमारे “वैज्ञानिकों” ने, अभी तक, वास्तविक प्रगति (व्यक्तिशः प्रतिभा की उन्नति और उच्चतर भावनाओं के लिए उसकी क्षमताओं) की दिशा में *विचार करना भी प्रारंभ नहीं किया है*।

हम सोचते हैं कि हम “प्रगतिशील” या “सभ्य” हैं — परंतु ये बिल्कुल ठीक नहीं है। प्रतिभा की अपेक्षा, सर्वाधिक मौलिक भावनाओं और अनजान शिक्षाओं को समझते हुए, पृथ्वी पर, हम चेतना की उन्नति के मामले में, एकदम तली में हैं। दुखद रूप से, इस पृथ्वी पर अधिकांश लोग, इसको स्वीकार करने की पर्याप्त निष्ठा भी नहीं रखते।

मेरे रवैये में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण परिवर्तन तब हुआ, जब मैंने, महान प्रतिभा के प्रगटन के रूप में, अपने शरीर—भव्य, उदार, बहुत ही नाजुक और मेरी (मेरी व्यक्तिशः प्रतिभा की) सहायता करने के लिए, मेरे व्यक्तिशः सीखने में एक बहुत ही निजी उपहार की सराहना करना सीखा।

केवल तभी मैंने खोजा कि सबसे अच्छा शिक्षक, वास्तव में अंदर है — और हमेशा रहा है। अब मुझे विभिन्न आस्थाओं पर, और अधिक आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं है। मैं जानता हूँ। मैंने उसे खोज लिया है और मैंने पा लिया है।

मैंने अपनी प्रतिभा पर विश्वास करना और उसका उपयोग करना सीख लिया है।

आप भी इसे कर सकते हैं। कोई भी, इरादे और पर्याप्त अनुशासन के साथ इसे कर सकता है। परंतु ये खुद नहीं होगा। **सजग प्रगति के लिये, हमें स्वयं ही लक्ष्य बनाने की आवश्यकता है।**

क्या आप, बिना लक्ष्य बनाये, प्रगति करने की आशा कर सकते हैं?

केवल उपरोक्त सभी खोजों को *अपने स्वयं के अंदर* पहचान लेने के बाद, मैंने दूसरे लोगों को असीमित संभावनाओं वाली व्यक्तिशः प्रतिभाओं के रूप में पहचानना शुरू किया।

सांराश में, एक भौतिक शरीर में रुकते हुए, जितना अधिक संभव हो, उससे और अपने आसपास की प्रकृति से सीखना, सबसे अच्छा चयन है, जिसे हम कर सकते हैं। ये हमारे उन्नयन के चरण में, इस ब्रह्माण्ड में प्रगति करने का सबसे तेज तरीका है। क्या आप सहमत हैं? प्रत्येक दूसरी गतिविधि, कोई बात नहीं ये कितनी भी मोहित करने वाली क्यों न दिखाई देती हो, सहायक ही है।

जीवन, वास्तव में प्रतिभा को विकसित करने, और अंततः **सभी पाठों में सबसे महान —प्रेम कैसे किया जाये और प्रेमी कैसे बना जाये**, को सीखने का एक आश्चर्यजनक अवसर है।

क्या आप इस पृथ्वी पर, सभी लोगों से, इस दृष्टिकोण को ग्रहण किये जाने की कल्पना कर सकते हैं?
ये फिर से, चयन की स्वतंत्रता है, क्या ऐसा नहीं है?

दूसरों की सहायता करना

यदि आप मेरे दिये गये कारणों के तर्क को पसंद करें, तो संभावना ये है कि आप किसी दिन इस पर दूसरे लोगों के साथ चर्चा करने का चुनाव करें।

ये मत मान लीजिये कि जो आपके लिए पूर्णतः तर्कयुक्त है – वही उनके लिए भी तर्कयुक्त होगा।

कुछ लोग, आगे की समझदारी को रोकते हुए, अपनी संपूर्ण प्रतिभा का उपयोग, **अवरोधों** को सृजित करने में करते हैं। ऐसे लोगों को हम उनके “आराम के क्षेत्र” में से जितना ज्यादा धकेलते हैं, वे लोग, उतने ही ज्यादा “बंद” होते जाते हैं।

चूंकि हमें उनकी चयन की स्वतंत्रता का सम्मान करना है—हमें उनके दृष्टिकोण को भी सम्मान देना होगा, भले ही, ये हमारे दृष्टिकोण से एकदम अलग ही क्यों न हो।

कल, मैं सेमीनारों, जो मैं नियमित रूप से संचालित करता हूँ, में से एक में, एक महिला से मिला, जो प्रारंभिक आसान प्रश्नों में से एक का उत्तर, जिसकी मैं अपेक्षा करता था, नहीं दे सकी। (क्या कोई घर, किसी के इसको डिजाइन किये बिना, अपने आप बन सकता है?)

उसने ये विश्वास करने का चयन किया, कि घर को स्वयं ही बन जाने के लिए, प्रतीक्षा करना काफी है। केवल अपने स्पष्टीकरणों को जारी रखने के प्रयास के बाद, मैं समझ पाया कि मुझे उसे प्रतीक्षा करने देनी चाहिए।

ये कहना बहुत अच्छा चयन रहा होता : *“ठीक है, तब हम इंतजार करें—और हम देखेंगे... हम जल्दी में नहीं हैं, क्या हम जल्दी में हैं?”*

लोगों को किसी चीज को सीखने लेने देने के लिए, उन्हें, उनके खुद के दृष्टिकोण के पश्चपरिणामों को अनुभव कर लेने देना आवश्यक है।

आप निराशा के बड़े अवसाद से बच जायेंगे, यदि आप, लोगों को, जो अभी समझने के लिए तैयार नहीं हैं, किसी बात पर स्पष्टीकरण देने से बचते हैं।

उन्हें एक प्रश्न, जो उन्हें अपने खुद के दृष्टिकोण को जांचने के लिए सर्वाधिक उत्तेजित करेगा, पूछने का प्रयास करें। ये बहुत अच्छा तरीका है [11]। यदि आपका प्रश्न अच्छी तरह से डिजाइन किया गया है—आपको किसी उत्तर की प्रतीक्षा करने की भी आवश्यकता भी नहीं होगी। ठीक से लक्षित किया हुआ और सही समय पर दागा गया कोई भी प्रश्न, लगभग अविस्मणीय होता है—ये प्राप्तकर्ता को—जबतक कि उसकी प्रतिभा विकास करना और उत्तर को समझना शुरू न कर दे, वर्षों तक *टीस* देता रहता है। तथापि, केवल विषय के बारे में कथन करने की तुलना में, भले ही, कितना ही अग्रवर्ती क्यों न हो, ऐसे “अविस्मणीय” प्रश्नों का डिजाइन करना अत्यधिक कठिन होता है।

विशेष रूप से, अपना “अंतिम प्रश्न” पूछने से पहले, उनके दृष्टिकोण को स्थापित करने के लिये, तमाम आधारभूत प्रश्न पूछने के द्वारा, आपको दूसरे व्यक्ति को सावधानीपूर्वक “सुनने” की आवश्यकता होगी। इस पुस्तक में लगभग 350 प्रश्न हैं, इनमें से कुछ निश्चितक्रमों में हैं। किसी एक को, जो सबसे अधिक उचित हो, चुनने में अपने आपको स्वतंत्र अनुभव करें या इनमें से किसी में भी, जो आपकी परिस्थिति के लिये उपयुक्त लगता हो, सुधार करें।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप से — आपको तैयार होने की आवश्यकता है। **दूसरे लोगों को सोचने के लिए तैयार करना, खुद की समझदारी को विकसित करने की तुलना में अत्यधिक कठिन है।** तैयारी करें और अपने “प्रश्नों” का पहले

से ही पूर्वाभ्यास करें।

आप अपने आपको जितना ज्यादा समझते हैं—लोगों को पाना, जो समझने में समर्थ हों कि आप प्रत्यक्षरूप से क्या कहने का प्रयास कर रहे हैं, उतना ही अधिक मुश्किल होगा। ये सामान्य है। अनेक लोग, इसे पहले देख चुके हैं।

हरेक उन्नत व्यक्तिशः प्रतिभा, जो पृथ्वी पर जीवित रही थी, ने दृष्टांतों या “प्रश्नों” के साथ बोलने का चयन किया था — सहज ही, क्योंकि उनके बिना, दूसरे लोग सरलतम अवधारणाओं को भी नहीं समझ सकते थे।

अंततः अपने खुद के परिवार के सदस्यों की ओर से भी, आप पर, प्रत्यक्ष विरोध और उपहास का आक्रमण हो सकता है।

“महान आत्माओं ने, हमेशा ही औसत मनो के हिंसक प्रतिरोध के आक्रमण को झेला है,” जैसा अलबर्ट आइंस्टीन ने इसे व्यक्त किया था।

“ये समय, जिनमें हम रहते हैं, जब बूढ़े और जवानों को झुठाई के स्कूलों में पढ़ाया जाता है, भयंकर हैं। और कोई आदमी, जो सत्य को बताने का दुस्साहस करता है, अचानक ही पागल और मूर्ख कह दिया जाता है” — प्लेटो ने शिकायत की थी [11]।

आप, लोगों को दोष नहीं दे सकते कि वे ब्रह्माण्ड के उद्देश्य को समझने की आवश्यकता को देखने के लिए “तैयार नहीं हैं।” **क्या आप किसी बच्चे को दोष दे सकते हैं कि उसने, अभी तक, चलना नहीं सीख पाया?**

तथापि, ये मुझे दुःखी कर देता है, जब लोगों के पास प्रतिभा है, परन्तु वे अपनी खुद की प्रगति के लिए, इसको **उपयोग में न लाने** का चयन लेते हैं।

ऐसा कुछ भी नहीं है, जो मैं, या कोई दूसरा भी, कर सकता हो। लोगों के पास चयन की स्वतंत्रता है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए।

लोगों को अपने खुद के दृष्टिकोणों के पश्चपरिणामों के अनुभव करने देना, उनको कुछ भी सीखने देने के लिए अत्यावश्यक है।

एक और उद्धरण

“यदि तुम्हारे नेता तुम्हें कहें, ‘ठहरो, राज्य आसमान में है,’ तब आकाश की चिड़ियों तुम्हारे सामने आयेंगी। यदि वे कहते हैं, ‘ये समुद्र में है’, तो मछलियाँ तुम्हारे सामने आयेंगी। गोया कि, राज्य अंदर है...” [2]

इसप्रकार (उसी स्रोत से)

“जो कोई भी हर चीज को जानता है,
परंतु अंदर से अभाव में है,
हर चीज के अभाव में होता है...”

पिछले 2000 सालों में, कोई भी क्यों नहीं हल कर सका कि इस सलाह का सही अर्थ क्या है? पृथ्वी पर, मानवता के साथ गलत क्या है?

असीमित संभावनाओं वाली व्यक्तिशः प्रतिभाएँ, अपंग प्रतिभा और कब्जयुक्त कल्पना वाले समूह के मानसिक दिवालियेपन जैसा व्यवहार क्यों करती हैं?

क्या आपके पास इसका कोई स्पष्टीकरण है?
ये है....

... उनकी चयन की स्वतंत्रता, क्या ऐसा नहीं है?

प्रमाण

क्या आप जानते हैं 2 + 2 कितना होता है?

क्या ये 4 है?

क्या आप सुनिश्चित हैं?

क्या आप इसे सिद्ध कर सकते हैं?

क्या आप सुनिश्चित हैं कि आप इसे सिद्ध कर सकते हैं कि

$2 + 2 = 4$?

कृपया अगले पेज को पलटने से पहले सुनिश्चित करें कि आप इसे सिद्ध कर सकते हैं।

क्या आप इसे मुर्गी के चूजे (को समझाने) के लिए सिद्ध कर सकते हैं?

यदि प्रतिभावान, सम्भावना या उद्देश्य की कल्पना नहीं कर सकता – तब कहने के लिये कुछ नहीं है। चर्चा का प्रारंभ तक भी संभव नहीं है।

यदि प्रतिभा विश्लेषण को नहीं समझ सकती – कोई प्रमाण संभव नहीं है।

प्रमाण को चाहने और वास्तव में प्राप्त करने का एकमात्र तरीका है – अपनी व्यक्तिशः प्रतिभा को विकसित करना।

परंतु क्या संपूर्ण ब्रह्माण्ड का उद्देश्य भी यही नहीं है?

प्रतिभा के विकास का दूसरा विकल्प है बेवकूफ बने रहना।

आप किसका चयन करते हैं?

टोम चाको
मेलबोर्न आस्ट्रेलिया
10 दिसम्बर 1999

पश्चलिपि

इस पुस्तक को पढ़ने की चुनौती स्वीकार करने और जानबूझकर उठाये गये उन तमाम उकसावों का, जो इसमें हैं, सामना करने के लिए आपको धन्यवाद।

यद्यपि इस पुस्तक का अधिकांश भाग, मेरे उपवास के पाँचवे सप्ताह के मध्य, केवल 7 दिन में लिखा गया था [12], इसमें 40 से अधिक वर्षों का मेरा चिंतन, स्वप्नन, ध्यान, शोध, त्रुटियाँ करना, पराकाष्ठाओं को खोजना और अनुभव करना, हर शिक्षा पर प्रश्न उठाना और हर अवसर पर हर शिक्षक को चुनौती देना निहित है।

क्या इसने आपकी कल्पना को उत्तेजित किया है? क्या इसने आपको सोचने के लिए मजबूर किया है? आपने इसे कितना पसंद किया? क्या ये, हर अगली बार, जब आप इसे पढ़ते हैं, अच्छी लगती है? आपकी प्रतिपुष्टि का हमेशा स्वागत है। कृपया मुझसे, निम्नलिखित अंतरजाल-स्थलों में से किसी एक पर मिलें

<http://TheFreedomForum.com> (इस पुस्तक के बारे में चर्चा के लिये)

<http://www.thiaooouba.com/>, <http://sci-e-reseach.com/>

और देखें कि मैंने अपनी खुद की चयन की स्वतंत्रता का उपयोग करने के द्वारा, क्या और चयनित किया है।

मैं आपकी टिप्पणियों को पढ़ने और प्रतिसाद देने का हर सम्भव प्रयास करूँगा। कृपया उन्हें ऑनलाइन प्रस्तुत करें।

प्रेम और प्रकाश के साथ,
टोम चाको

“मनुष्य, केवल आध्यात्मिकरूप से विकास करने के उद्देश्य मात्र से ही भौतिकरूप से अस्तित्व में रहता है...” [1]

सन्दर्भग्रन्थ-सूची

- [1] एम. डैसमाक्वैट, हियूबा प्रोफेसी, अराफयूरा पब्लिशिंग, ऑस्ट्रेलिया 1997, आइ-एस-बी-एन 0 646 31 395 9 (<http://www.thioouba.com/mic.htm>)
- [2] थॉमस, द गोस्पैल ऑफ थॉमस, एम. डब्ल्यू. मेयर द्वारा अनुवादित, द बुक ऑफ थॉमस, विन्टेज बुक्स, रैन्डम हाउस, न्यूयार्क, 1984, आइ-एस-बी-एन 0-394-74433-0
- [3] एच. सद्घातिस्सा, एम-ए., पी-एच. डी., द बुद्धाज वे, जी. एल्लेन एण्ड उन्विन लिमिटेड, लन्दन 1971, आइ-एस-बी-एन 0 04 294071 0
- [4] आर्येह कैप्लान, द्वारा अनुवादित, द लिविंग तोराह, मैत्सनेम पब्लिशिंग कोरपोरेशन, न्यूयार्क, जरूसलम 1981
- [5] द न्यू इंग्लिश बाइबिल, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1961
- [6] सी. टिपिंग, रेडिकल फोरगिवनेस, ग्लोबल 13 पब्लिकेशन्स कम्पनी, जी ए, यूएसए, आइ-एस-बी-एन 1890412-03-1
- [7] लियो टाल्सटॉय, द किंगडम ऑफ गॉड विदइन यू यूनिवर्सिटी ऑफ नेब्रास्का प्रैस, लिंकन एण्ड लंदन, 1984 (ओरिजिनली पब्लिशड. 1884) आइ-एस-बी-एन 0-8032-4411-8
- [8] वाय. चड्ढा, रिडिस्कवरिंग गांधी, ऐरो, रेंडम हाउस, 1998, आइ-एस-बी-एन 0-09-979501 9
- [9] ऐक्स7 रिपोर्टिंग: ए वर्ल्ड विदइन ए वर्ल्ड, द्वितीय संस्करण, फिन्धोम प्रैस 1996, आइ-एस-बी-एन 1 899171 55X
- [10] के. जी. कोरोत्कोव, लाइट आफ्टर लाइफ, बैकबोन पब्लिशिंग हाउस, न्यूयार्क, 1996
- [11] प्लेटो, द डायलोग्स ऑफ प्लेटो, ब्रिटानिका ग्रेट बुक्स, वोल्यूम 7, आइ-एस-बी-एन 0-85229-163-9
- [12] टी. जे. चाल्को, द जॉय ऑफ परफैक्ट हैल्थ (सैल्फ हीलिंग: व्हाट यू नीड टु नो), साइंटिफिक इंग्लिश रिसर्च, मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया, 1995, आइ-एस-बी-एन 0-646-234307, (<http://www.thiaoouba.com/hom.htm>)
- [13] टी. जे. चाल्को, कॉन्सस कंट्रोल ऑफ बायो-इनर्जी फील्ड, <http://www.thiaoouba.com/kirc.htm>, 1996
- [14] बायोरेजोनेन्ट साइंटिफिक कलर स्टिमुलेशन <http://www.bioresonant.com/> 1997
- [15] आर. ए. मूडी, एम. डी., पी-एच. डी., लाइफ आफ्टर लाइफ - द इन्वेस्टिगेशन ऑफ अ फिनोमेनन - सरवाइवल ऑफ बोडीली डैथ, मौकिंगबर्ड बुक्स, 1975, आइ-एस-बी-एन 0-89176-037-7
- [16] पी. डेवीस, सुपरफोर्स, उन्विन हाइमन लिमिटेड, यू.के., आइ-एस-बी-एन 0-04-539006-1, 1084, -पुनर्मुद्रित 1985, 1986, 1989, 1990
- [17] एन्ड्रियास सोडरलुंड, अप्रकाशित कहावतें, <http://bioresonant.com/andreas.html>
- [18] जे. ओ'कोन्नर, जे. सेमाउर, इंट्रोड्यूसिंग न्यूरो-लिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग, 1993, थोर्सन पब्लि. ; आइ-एस-बी-एन 1 85 538344 6
- [19] टी. जे. चाल्को, बायो-इलेक्ट्रोग्राफी, <http://www.thiaoouba.com/bio.htm>
- [20] टी. जे. चाल्को, इज चांस और चोइस द एसेन्स ऑफ नेचर? (इन्साइट इन्टू फिजिक्स ऑफ कॉन्ससनेस) NU Journal of Discovery, Vol 2, 2001, NUJournal.net/choice.html
- [21] टी. जे. चाल्को, नो सैकन्ड चांस? कैन अर्थ एक्सप्लोड एज अ रिजल्ट ऑफ ग्लोबल वार्मिंग? NU Journal of Discovery, Vol 3, 2001, NUJournal.net/core.pdf

धन्यवाद ज्ञापन

मैं मार्गट डे जोन्ग एम. एस-सी. बी. ए. एम. बी. ए. (द नीदरलैंड्स) और प्रोफेसर निकोलस हैरिटोस (मेलबोर्न विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया) के प्रति, पाण्डुलिपि पढ़ने, उसकी विषयवस्तु पर चर्चा करने और मूल्यवान और रचनात्मक राय देने के लिए अपना आभार प्रदर्शित करना चाहता हूँ। मैं पृष्ठक्रमांक — पर दिए गए अभ्यास को मेरे ध्यान में लाने के लिए, बो स्वालोवस्का का और इसमें सुधार करने के लिए मार्टिन शैल्डोन का आभारी हूँ।

लेखक के द्वारा अन्य पुस्तकें

द जॉय ऑफ परफैक्ट हैल्थ (सैल्फ हीलिंग: व्हाट यू नीड टु नो), साइंटिफिक इंग्लिश रिसर्च, मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया, 1995, आइ-एस-बी-एन 0-646-234307, (<http://www.thiaouba.com/hom.htm>)

इजबोल्जसामो ऐब्रो, में काको विदिमो, बेरेमो (स्लोवेनियन भाषा में) जलोज्बा ए आर ए, 1999 आइ-एस-बी-एन 961-6005-3-8, अंग्रेजी में "ऑरा लेक्चर नोट्स" के रूप में ज्ञात, (<http://www.thiaouba.com/seeau.htm>)

चयन की स्वतंत्रता पुस्तक, निम्नलिखित भाषाओं में अनुवादित और प्रकाशित की जा चुकी है

1. हंगरी की भाषा, हंगेरियन
2. फ्रांसीसी
3. रूसी
4. नोर्वे
5. गुजराती (भारत)

और अधिक अनुवाद प्रयास में हैं।

